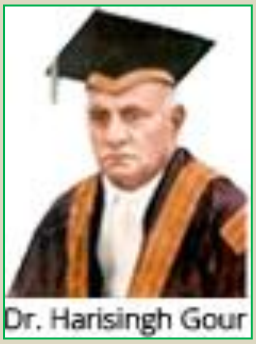

न्यूजलेटर

मार्च 2025

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर
विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श
डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय
कुलसचिव (प्र.)

संपादक
डॉ. विवेक जायसवाल
जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य
डॉ. हेमंत पाटीदार
डॉ. आशुतोष
डॉ. शालिनी चोइथरानी
डॉ. संजय शर्मा

सांस्कृतिक वैविध्य से सराबोर रहा वसंतोत्सव

हॉस्टल डे 'वसंतोत्सव' में छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के स्वर्ण जयंती सभागार में निवेदिता कन्या छात्रावास, रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास एवं सरस्वती कन्या छात्रावास द्वारा संयुक्त रूप से हॉस्टल डे कार्यक्रम 'वसंतोत्सव' मनाया गया जिसमें छात्राओं ने मनोरंजक एवं मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं. कार्यक्रम के मुख्य छात्रावास अधीक्षिका प्रो.रश्मि सिंह ने विभिन्न कन्या छात्रावासों की गतिविधियों से सम्बंधित वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. उन्होंने कहा कि कन्या छात्रावास में भारत के विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और संस्कृतियों का समागम है. यह सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करता है. उन्होंने विभिन्न सुविधाओं का भी उल्लेख किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाय. एस. ठाकुर ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में छात्रावास का बड़ा महत्त्व होता है. यह स्पेस विद्यार्थियों को एक नई संस्कृति से परिचय कराता है जिसका उनके व्यक्तित्व, जीवन और करियर में बड़ा योगदान होता है. छात्रावासी जीवन हमें संघर्ष, त्याग और सामूहिक भावना के साथ जिन्दगी जीना सिखाती है. इसलिए इस जीवन को एक बड़ी सीख और अनुभव के रूप में विद्यार्थियों को लेना चाहिए. कार्यक्रम का संचालन डॉ वंदना राजौरिया ने किया. सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के दौरान छात्राओं के समूह ने संचालन किया.

कार्यक्रम में अंशिका तिवारी, गायत्री उपाध्याय, खुशबू, कशिश, ख्याति, जोयसी, मधुस्मृति, संजना शर्मा, रिशिका, आकांक्षा, अनुकृति एवं समूह, तेजसी, हंसिका, खुशी, अनीशा, ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। इसी क्रम में दीपशिखा, सुधा, मधु, अनुष्का, अनीशा ने एकल गायन की प्रस्तुति दी. छात्राओं ने बेख़ौफ़ आजाद रहना है मुझे गीत पर सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति दी. समूह नृत्य, मार्शल आर्ट नृत्य आदि के माध्यम से देश की संस्कृतियों का अद्भुत समन्वय और समागम देखने को मिला. रानी लक्ष्मीबाई,

सरस्वती और निवेदिता छात्रावास की छात्राओं ने एकल नृत्य, समूह नृत्य, एकल गयां, एकल शास्त्रीय नृत्य, स्किट की प्रस्तुति दी. राजस्थानी, भोजपुरी, मणिपुरी, तमिल सहित देश की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया. इस अवसर पर छात्रावास की चीफ वार्डन प्रो. रश्मि सिंह, निवेदिता कन्या छात्रावास वार्डन डॉ. सुषमा यादव, मेस वॉर्डन डॉ. श्वेता शर्मा, रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास अधीक्षिका डॉ. वंदना राजोरिया, मेस वॉर्डन डॉ. शिवानी खरे,

सरस्वती कन्या छात्रावास वॉर्डन डॉ.सुनीत वालिया, मेस वॉर्डन डॉ. सुप्रभा दास, मुख्य कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन, सुरक्षा अधिकारी प्रो. राजेंद्र यादव, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जयसवाल, डॉ. वीरेंद्र कुमार मत्सानिया, समन्वयक डॉ. सुमन पटेल, डॉ.दीपिका वसिष्ट एवं कु. शिवानी मीना उपस्थित रहे. कार्यक्रम के अंत में छात्रावास की चीफ वार्डन एवं समस्त वॉर्डन द्वारा छात्राओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त प्रस्तुतियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए.

स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 32 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. विवेक मालवीय (प्रभारी शिक्षक, एसईएम) ने

प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में एसईएम तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी.हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी, सीएआर द्वारा एसईएम उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से नमूना तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने नमूना तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों द्वारा एसईएम पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री आशीष चढ़ार और श्री अरविंद चडार, चन्द्र प्रकाश सैनी की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

विश्वविद्यालय में कैंसर जागरूकता शिविर का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हेल्थकेयर और अस्पताल प्रबंधन एम.बी.ए के छात्रों द्वारा कवि पद्माकर सभागार, मोतीनगर सागर में कैंसर जागरूकता एवं रोकथाम शिविर में योगदान दिया गया. इस कार्यकम का उद्देश्य कैंसर की रोकथाम, प्रारंभिक पहचान ओर मध्यप्रदेश में उपचार दिशा-निर्देशों पर जागरूकता बढ़ाना था. शिविर के मुख्य अतिथि श्री शैलेन्द्र जैन, सागर विधायक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ममता तिमोरे, डॉ. संतोष राय, डॉ. प्रशांत जैन, डॉ. विजय कोन्तम, डॉ. मनीष राय, डॉ. राजेश पटेल, डॉ. अनुराधा महेश्वर एवं श्री आकाश बजाज ने विभिन्न विषयों पर कैंसर संबंधी व्याख्यान दिए. डॉ. प्रेरणा जैन के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया. इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. वाई.एस ठाकुर ने छात्रों को शुभकामनाएं दीं.

भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रतिबिंब है- डॉ. आशुतोष

मीडिया संवाद श्रृंखला के अंतर्गत 'मीडिया की भाषा' विषय पर व्याख्यान

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में मीडिया संवाद श्रृंखला के अंतर्गत 'मीडिया की भाषा' विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्य व पत्रकारिता के अद्भुत समन्वय व उसकी भूमिका पर बात करते हुए साहित्य की सृजनशीलता व उसकी रचनात्मकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम सहायक प्राध्यापक डॉ. विवेक जायसवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया. डॉ. अलीम अहमद खान ने मीडिया तथा जनमाध्यमों की भाषा व क्षेत्रीय भाषा की विविधता तथा उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला.

विशेष अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. आशुतोष ने वक्तव्य देते हुए कहा कि वर्तमान समय में मीडिया का काम न केवल सूचना देना है बल्कि समाज को शिक्षित करने की जिम्मेदारी भी मीडिया की है। उन्होंने ध्वनि और भाषा में अंतर बताते हुए कहा कि भाषा हमारे व्यक्तित्व का आईना है। एक कुशल पत्रकार कम से कम शब्दों में सूचना का आदान-प्रदान करते हुए अपने अपने पाठक को एक आलोचनात्मक व विवेकपूर्ण ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि भाषा अब न केवल एक संप्रेषण का माध्यम भर रही गई है अपितु अब ये हमारी सांस्कृतिक प्रतिमान के रूप मे भी विद्यमान है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रतिबिंब है और यह सांस्कृतिक चेतना का निर्माण भी करती है. यह मनुष्य की सृजनशीलता और व्यक्तित्व का भी परिचायक है.

उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में भाषा का सुचिंतित प्रयोग बहुत आवश्यक है क्योंकि पत्रकारिता एक ऐसा पेशा है जहाँ रोज पत्रकार का मूल्यांकन होता है. उन्होंने मीडियाकर्मी के चिंतन को आवश्यक अंग मानते हुए पत्रकारिता में प्रस्तुतीकरण तथा पत्रकारों की भाषाई प्रस्तुति की महत्ता पर भी प्रकाश डाला। मीडिया में भाषा का मूल रूप से सही होने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए एक संपादक के तौर पर अपने अनुभवों को साझा किया कि भाषा की चुनौतियाँ किस प्रकार की होती हैं. उन्होंने वर्तमान में समाचार पत्रों में हो रहे भाषा के उपयोग को लेकर भी चर्चा की. व्याख्यान के पश्चात विभाग के छात्रों ने पत्रकारिता में भाषा संबंधी अपने अपने प्रश्न रखे जिनका उन्होंने समाधान भी किया.

कार्यक्रम में डॉ. रजनीश, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. राकेश सोनी, समाज शास्त्र एवं पत्रकारिता विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी दिलीप चौरसिया ने किया तथा अनुष्का तिवारी ने आभार ज्ञापन किया।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है- डॉ. मुदित अग्रवाल

एआई में नवाचार और भविष्य के करियर पर विशेष व्याख्यान आयोजित

डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग द्वारा व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत "एआई नवाचार और भविष्य के करियर" पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. मुदित अग्रवाल, वरिष्ठ अनुप्रयुक्त विज्ञान प्रबंधक, अमेजन रोबोटिक्स, यूएसए थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. मुदित अग्रवाल और कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के प्रमुख डॉ. अभिषेक बंसल ने दीप प्रज्वलित कर किया। उद्घाटन सत्र में डॉ. बंसल ने एआई, मशीन लर्निंग नवाचारों और विभिन्न क्षेत्रों में इसके अनुप्रयोग के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि एआई तकनीक में विशेषज्ञता छात्रों के लिए आकर्षक करियर के अवसर खोलेगी। कार्यक्रम में गणितीय एवं भौतिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. आर.के. गंगेले भी शामिल हुए।

अपने व्याख्यान में, डॉ. अग्रवाल ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में प्रगति, विशेष रूप से मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, ऑटोमेशन और रोबोटिक्स में इसकी भूमिका और विभिन्न डोमेन और विभिन्न भूमिकाओं में इस क्षेत्र में करियर की

संभावनाओं के विस्तार पर विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि AI केवल एक तकनीकी क्षेत्र नहीं है, बल्कि आधुनिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। उन्होंने स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, साइबर सुरक्षा, वित्त और औद्योगिक स्वचालन जैसे उद्योगों में AI अनुप्रयोगों पर चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को बदल रहे हैं और डेटा-संचालित नवाचारों के लिए नई संभावनाओं को खोल रहे हैं। इस कार्यक्रम में कंप्यूटर विज्ञान और अनुप्रयोग, कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग और पुस्तकालय और सूचना विज्ञान सहित विभिन्न विषयों के छात्रों, संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं की उत्साही भागीदारी देखी गई। छात्रों ने डॉ. अग्रवाल के साथ एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया, जिसमें AI में शोध और करियर के अवसरों के बारे में जानकारी मांगी गई। उन्होंने विस्तृत जवाब दिए, AI करियर के लिए आवश्यक कौशल, उभरते शोध रुझानों और उद्योगों में AI विशेषज्ञता की बढ़ती मांग पर जानकारी साझा की। कार्यक्रम के समापन पर, डॉ. पंगमबम सेंदाश सिंह ने मुख्य वक्ता, गणमान्य व्यक्तियों और उपस्थित लोगों के प्रति कार्यक्रम की सफलता में उनकी भागीदारी और योगदान के लिए आभार व्यक्त किया।

मनुष्य के जीवन में कला की अहम् भूमिका क्योंकि जन्म के बाद मनुष्य कला के माध्यम से ही दुनिया से परिचित होता है - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में कला एकीकृत शिक्षा एवं सृजनशील अधिगम विषय पर दो दिवसीय 'राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला' का उद्घाटन सत्र शिक्षाशास्त्र विभाग, आंतरिक गुणवत्ता प्रत्यायन प्रकोष्ठ और शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एनआईटीटीटीआर, भोपाल के निदेशक प्रो० चारु चन्द्र त्रिपाठी थे। कार्यक्रम में बीज वक्तव्य आरआईइ भोपाल से डॉ. सुरेश मकवाना ने दिया. कार्यक्रम में निदेशक और शिक्षा शास्त्र विभाग के अध्यक्ष और शैक्षिक अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो अनिल कुमार जैन, संगोष्ठी-सह-कार्यशाला की संयोजिका डॉ रश्मि जैन और सह-संयोजक डॉ धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ उपस्थित थे। कार्यक्रम में शिक्षाशास्त्र विभाग के बी. ए. बी.एड., बी. एससी. बी.एड. एवं बी. कॉम. बी.एड. के विद्यार्थियों द्वारा सात दिवसीय सामुदायिक कार्य पर आधारित चलचित्र का प्रदर्शन किया गया. अतिथियों को प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा वर्ली कला पर केंद्रित चित्रों को स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट किया गया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने सहयोगात्मक शिक्षण एवं अधिगम की महत्ता पर बल देते हुए 4 सी (क्रिएटिविटी, कोलैबोरेशन, कम्युनिकेशन, क्रिटिकल थिंकिंग) की चर्चा की। अपने प्रेरक वक्तव्य में विद्यार्थियों से उन्होंने कहा कि हर शिक्षक अपने आप में कलाकार होता है और वह अपने शिक्षण में चित्रों के माध्यम से शिक्षण कार्य करके कक्षा-कक्ष अधिगम को रुचिपूर्ण एवं प्रभावी बनाता है। ज्ञान के सभी अनुशासनों में कला का उपयोग होता है. कला अभिव्यक्ति का सबसे आवश्यक अंग और माध्यम है. एक बालक जब बड़ा हो रहा होता है तो वह कला के माध्यम से ही दुनिया से परिचित होता है. कला मानव जीवन का अभिन्न अंग है. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर प्रो० चन्द्र चारु त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में मानव जीवन में कला की आवश्यकता को बताया. उन्होंने संवाद कला, भित्ति चित्र कला तथा प्राचीन धर्म ग्रंथों से विभिन्न कलाओं के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि कला मुख्य रूप से ज्ञान की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है।

विश्वविद्यालय एवं एनआईटीटीटीआर भोपाल के बीच शैक्षणिक समझौते पर हुए हस्ताक्षर

कार्यक्रम में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं एनआईटीटीटीआर, भोपाल के बीच अकादमिक सहयोग एवं साझेदारी हेतु समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुए. इस अकादमिक समझौते का उद्देश्य दोनों संस्थानों के बीच आपसी सहयोग को मज़बूत करते हुए नवाचार, प्रगति और विकास के नए द्वार खोलना है. कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि यह साझेदारी ज्ञान, संसाधनों और क्षमताओं के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच प्रदान करेगी, जिससे हम अपने लक्ष्यों को और अधिक प्रभावी रूप से प्राप्त कर सकेंगे और दोनों ही संस्थान शिक्षा, शोध और प्रशिक्षण की दिशा में योगदान दे सकेंगे । इसके तहत टीचिंग-लर्निंग के पाठ्यक्रम भी संयुक्त रूप से संचालित किये जायेंगे और छात्रों और शिक्षकों का एक्सचेंज प्रोग्राम भी चलाये जायेंगे.

विभागीय पत्रिका 'शैक्षिक अनुगूँज' का अतिथियों ने किया विमोचन

इस अवसर पर अतिथियों ने संगोष्ठी-सह-कार्यशाला की स्मारिका एवं विभागीय पत्रिका 'शैक्षिक अनुगूँज' के पहले अंक का विमोचन किया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. अभिषेक प्रजापति ने किया। डॉ. रश्मि जैन ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। आभार ज्ञापन डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया। उद्घाटन सत्र में शिक्षाशास्त्र विभाग, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा (हरीयाणा) से प्रो राज कुमार, डॉ सतपाल और शिक्षाशास्त्र विभाग, गुरु घासीदास से सह आचार्य डॉ बुध सिंह एवं डॉ ज्योति वर्मा जी मौजूद थे. उक्त अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सत्यप्रकाश उपाध्याय, प्रॉक्टर डॉ. चंदा बैन, अकादमिक मामलों के

डीन, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, विभाग के शिक्षक डॉ. रानी दुबे, डॉ. प्रीति वाधवानी, पुष्पिता राजावत, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. रमाकान्त, डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ. अखंड शर्मा, डॉ. शिव शंकर यादव, डॉ. शकीला खान, श्री योगेश कुमार सिंह व श्रीमती कंचन चौरसिया समेत विभाग के विद्यार्थी और शोधार्थी उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र समापन राष्ट्रगान ने हुआ।

उक्त सत्र के पश्चात तीन तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें कुल 24 शोध पत्रों का वाचन किया गया। इसके पश्चात कठपुतली का शिक्षा में प्रयोग कैसे किया जाय इस पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता के रूप में चंडीगढ़ पधारे श्री शुभाशीष गुहा नियोगी थे।

आवश्यकता आधारित अनुसंधान वर्तमान समय की मांग, भारत ने सबसे पहले कोविड वैक्सीन बनाकर पूरी दुनिया में अपनी शोध क्षमता और मानवता का सन्देश दिया है- कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज के तत्वावधान में एडवांसेज इन सिस्टम बायोलॉजी विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया. सम्मेलन के मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. ए. पी. दास (पूर्व कुलपति, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय), विशिष्ट अतिथि प्रो. डी. के. शर्मा (पूर्व कुलपति, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय), प्रो. मोहम्मद आरिफ (कुलपति, मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय), प्रो. एस. सी. जोशी (पूर्व कुलपति, लार्ड विश्वविद्यालय जयपुर), प्रो. गोपाल कृष्ण (पूर्व निदेशक और कुलपति, आईसीएआर-सीआईएफई),

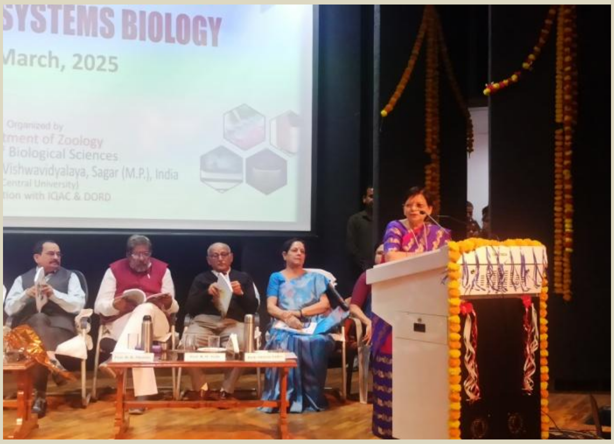

प्रो. बी. डी. जोशी (सेवानिवृत्त, प्राणी विज्ञान विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. डीन प्रो. वर्षा शर्मा ने सम्मेलन के विभिन्न घटकों का परिचय दिया. प्राणी शास्त्र की विभागाध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव ने स्वागत वक्तव्य दिया.

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन इस मायने में विशेष है क्योंकि इसमें सम्पूर्ण जीव विज्ञान के विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञ इसमें सहभागिता कर रहे हैं. आज के समय में विज्ञान का क्षेत्र अंतरानुशासनिक, पार-अनुशासनिक और बहु अनुशासनिक बन चुका है. पूरे देश का अकादमिक परिदृश्य इसी तरह के अध्ययन-अध्यापन प्रणाली पर कार्य कर रहा है. आज मानव के सामने जैव विविधता का क्षरण, पर्यावरण असंतुलन एवं प्रदूषण जैसे संकट हैं जिनका भारत ही नहीं पूरी दुनिया सामना कर रहा है. हमें ऐसे सम्मेलन के माध्यम से इस तरह के संकटों के समाधान के भी रास्ते सुझाने हैं तभी इस तरह के विमर्श और चर्चाएँ प्रासंगिक होंगी. उन्होंने कहा कि हम एक-एक करके समस्याओं को सुलझाने के रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं. उन्होंने विवि में उपलब्ध उन्नत अनुसंधान केन्द्रों का उल्लेख करते हुए शोध में सहभागी होने और शोध साझेदारी के लिए देश-विदेश के वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया. उन्होंने कहा कि आज हमें आवश्यकता आधारित शोध करने की जरूरत है ताकि हम पूरे विश्व का मार्ग प्रशस्त कर सकें. भारत ने कोरोना के समय वैक्सीन का निर्माण और आपूर्ति कर पूरी दुनिया को अपनी दूरदृष्टि, शोध क्षमता और मानवता का परिचय दिया है.

सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण में विज्ञान की अहम् भूमिका- पद्मश्री प्रो. ए. पी. दास

मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. ए. पी. दास ने कहा कि पहले के जमाने में विज्ञान के कुछ ही क्षेत्र थे लेकिन आज इसका दायरा बहुत ही व्यापक हो गया है. उन्होंने सभी परिवर्तनों और समस्याओं का कारण जलवायु परिवर्तन को बताते हुए कहा कि यह ऐसा कारण है जो प्रकृति की सभी चीजों को प्रभावित करता है. चाहे वह मनुष्य हो, चाहे अन्य जीव जंतु हों या वनस्पतियाँ. ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग ने इस समस्या को और अधिक बढ़ाया है. आज एसडीजी के लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश की जा रही ताकि पूरी दुनिया में शान्ति, समृद्धि बनाए रखते हुए सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण किया जा सके. विज्ञान की इसमें अहम् भूमिका है. निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने और सृष्टि के कल्याण के लिए हम विज्ञान का सदुपयोग करें.

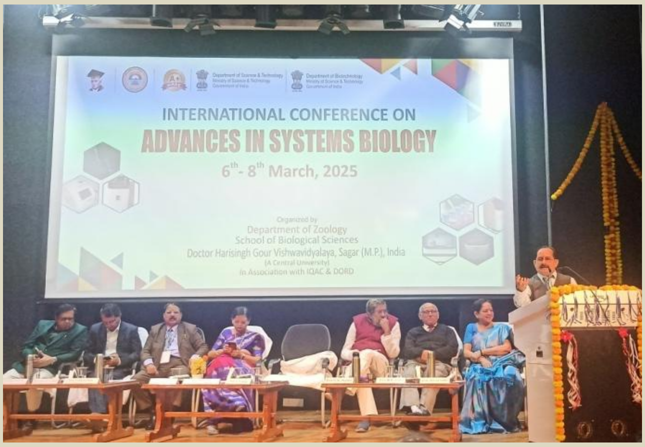

प्रो. दिनेश शर्मा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में जीव विज्ञान और इसके बहुत से क्षेत्रों से सम्बंधित ज्ञान विद्यमान है. आज नई तकनीक के माध्यम से चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में नए आयाम विकसित हो रहे हैं. प्राचीन ग्रंथों में विज्ञान की विधियों और आख्यानों का जिक्र मिलता है उन पर नए सिरे से शोध की आवश्यकता है ताकि हम नए समय और अपनी आवश्यकता अनुरूप विज्ञान का उपयोग कर सकें. आज जैव विविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती वाले क्षेत्रों में नए अनुसंधान की आवश्यकता है.

प्रो. मो. आरिफ ने कहा कि सिस्टम बायोलॉजी समग्रता में बात करता है. इस तरह का सम्मेलन अद्वितीय है. विज्ञान की मूल चिंता सदैव ही यही रही है कि मनुष्य का जीवन कैसे बचाएं. उन्होंने शोधार्थियों को विशेष रूप से संबोधित करते हुए कहा कि विज्ञान का लेखन, विज्ञान में शोध लेखन, विज्ञान के प्रस्तुतीकरण इत्यादि की बारीकियों को सीखें और अच्छे परिणामों के साथ बेहतर तरीके से विज्ञान का मनुष्य के हित में उपयोग करें.

प्रो. सुरेश जोशी ने कहा कि आज के युवाओं को सूचना और ज्ञान में फर्क समझना होगा. सुविधा और प्रसन्नता में अंतर करना होगा. शोधार्थी को हमेशा धैर्यवान होना चाहिए तभी वह अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकता है. उन्होंने कहा कि अध्ययन, अध्यापन एवं शोध का जीवन में बड़ा महत्त्व है. प्रो. गोपाल कृष्ण ने कहा कि संसाधनों के बेहतर उपयोग करते हुए जीवन को आसान बनाने में विज्ञान का उपयोग करें ताकि मनुष्य और प्रकृति के अस्तित्व को बचाया जा सके.

प्रो. बी.डी. जोशी ने कहा कि मनुष्य का शरीर पंच तत्वों से बना है. सभी की पहचान आज के विज्ञान की शब्दावली में आर एन ए और डी एन ए के माध्यम से होती है. विज्ञान प्रत्येक घटक को जानने-पहचाने का एक माध्यम है और संपूर्ण विज्ञान इसी प्रणाली पर कार्य करता है. सत्र का संचालन डॉ. वंदना विनायक ने किया. आभार ज्ञापन डॉ. सी पी उपाध्याय ने किया. इस अवसर पर प्रो. चंदा बेन, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. सुबोध जैन, प्रो. यू एस गुप्ता, प्रो. डी पी गुप्ता, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अजीत जायसवाल, डॉ. योगेश भार्गव, डॉ. राज कुमार सहित विज्ञान संकाय के विद्यार्थी, शोधार्थी और शिक्षक एवं वाह्य प्रतिभागी उपस्थित थे. इस सम्मेलन में 35 प्रतिभागी मौखिक प्रस्तुति देंगे और 67 पोस्टर प्रस्तुति देंगे। सम्मेलन में 54 विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों से पंजीकृत 170 प्रतिभागी और 56 बाहरी प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा में वैदिक गणित का महत्त्वपूर्ण स्थान- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वैदिक अध्ययन विभाग में वैदिक गणित पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में विश्वविद्यालय के भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व पर प्रकाश डाला. बाहर से पधारे विद्वान डॉ. कैलाश विश्वकर्मा ने अपने व्याख्यान में वैदिक गणित के सूत्रों को अत्यन्त सहज ढंग से समझाया तथा विद्यार्थियों हेतु इसकी उपयोगिता समझाई. द्वितीय सत्र में महाराष्ट्र से आये प्रख्यात् विद्वान श्रीराम चौथाइवाले ने वेदों में पायी जाने वाली गणित को स्रोत एवं संदर्भो सहित समझाया. तृतीय सत्र में दिल्ली से पधारी प्रो. अनुराधा गुप्ता ने वैदिक गणित का सांख्यिकी में महत्व को अनेक उदाहरणों के साथ समझाया. चतुर्थ सत्र में कानपुर के डॉ. राकेश भाटिया का वैदिक गणित पर ऑनलाइन व्याख्यान हुआ. उन्होंने गणितीय गणनाओं को त्वरित ढंग से कैसे किया जा सकता है इस पर प्रकाश डाला. इस वैदिक गणित की राष्ट्रीय कार्यशाला में 70 से अधिक प्रतिभागियों ने अपना पंजीयन कराया जिसमें 20 प्रतिभागी सात विभिन्न प्रदेशों से आनलाइन जुड़े थे. प्रथम दिवस में वैदिक गणित के विभिन्न आयामों पर ज्ञानवर्धन एवं गहन चर्चा हुई.

इस कार्यशाला में देशभर के गणित प्रेमियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया. समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. श्रीराम चौथाईवाले रहे. उन्होंने अपने संबोधन में वैदिक गणित की उपयोगिता और इसके व्यावहारिक महत्व पर जोर दिया उन्होंने कहा कि वैदिक गणित केवल एक प्राचीन पद्धति नहीं बल्कि वर्तमान में भी प्रासंगिक है. कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में प्रो. अनोखेलाल पाठक के द्वारा वैदिक गणितीय सूत्रों के जटिल विश्लेषण में अनुप्रयोग पर व्याख्यान दिया गया. उन्होंने वेदों और मनीषियों के ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय ग्रंथों में गणितीय अवधारणाएं निहित हैं. साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी-2020) की प्रस्तावना पर भी चर्चा की. इसमें भारतीय गणितीय परंपराओं की भूमिका को रेखांकित किया. द्वितीय सत्र में डॉ. श्रीराम चौथाईवाले ने सूत्र आधारित विधियों द्वारा दशमलव और पुनरावृत्ति भिन्नों का मूल्यांकन विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये. तृतीय सत्र में श्रीमति स्वेता परमार ने जन्म कुंडली के बारह भावों का विश्लेषण किया. चतुर्थ सत्र में डॉ. गजेंद्र प्रताप तथा आखिरी सत्र में प्रो. कैलाश विश्वकर्मा द्वारा व्याख्यान दिया गया.

कार्यक्रम में वैदिक विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला, डीन (एसएमपीएस) एवं गणित विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आर. के. गंगेले, डॉ. आयुष गुप्ता, डॉ. शिवानी खरे एवं विभिन्न विभागों के व्याख्याता एवं शोधार्थी उपस्थित रहे एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गए. अंत में वैदिक अध्ययन विभाग की ओर से सभी अतिथियों, वक्ताओं और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया और इस प्रकार वैदिक गणित की राष्ट्रीय कार्यशाला का सफल समापन हुआ.

ग्रोइंग, लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स ''ग्लैड'' कार्यक्रम का भव्य उद्घाटन

बेटियों में उच्च पदों तक पहुंचने की अपार संभावना, अपनी क्षमता पहचानें- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय , सागर के भूगोल विभाग द्वारा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्राओं के लिये आरंभ ग्रोइंग, लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स ''ग्लैड'' कार्यक्रम का अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के सुअवसर पर भव्य उद्घाटन अभिमंच सभागार में किया गया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य विश्वविद्यालय के सभी संकायों, विभागों में अध्ययनरत छात्राओं को उनके जीवन के सपनों को साकार करते हुए उनके लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता, तनाव मुक्ति, प्रसन्नता और मुस्कान के साथ अध्ययन एवं रोजगारोनमुख क्षमता विकास एवं व्यावहारिक संवाद कौशल जैसे आयामों में उन्हें सम्बल प्रदान करना है.

कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. छात्राओं से भरे सभागार में उपस्थित छात्राओं को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस कार्यक्रम की पहल के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि यह ग्लैड कार्यक्रम विश्वविद्यालय की छात्राओं के समग्र विकास और सफल जीवन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है. उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम छात्राओं को न केवल शैक्षणिक रूप से सशक्त बनायेगा, बल्कि उनमें आत्म- विश्वास, संवाद कौशल और नेतृत्व क्षमता को भी विकसित करेगा। उन्हेंने इस बात पर जोर दिया कि झिझक और आत्म-संदेह को दूर कर, छात्राएं अपने सपनों को साकार कर सकती हैं और समाज में एक सशक्त पहचान बना सकती हैं. इस ग्लैड कार्यक्रम की पहल से उनमें आत्मविश्वास जागृत करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जायेगा। इससे उनकी सफलता की राह आसान बनेगी। उन्होंने कहा कि आज नारी सक्षम भी है और सशक्त भी, लेकिन अपनी क्षमताओं का आकलन नहीं करके वह समाज में पिछड जाती है और दुर्घटनाओं का शिकार हो जाती है। प्रो. गुप्ता ने कहा कि आसमान में कदम रखने से लेकर एवरेस्ट तक देष का परचम लहराने में तथा राजनीतिक एवं प्रशासन के क्षेत्रों में अपनी सशक्त पहचान स्थापित करने में महिलाएं पीछे नही हैं। उन्होंने यह भी दोहरया कि बेटियों ने घर से लेकर बाहर तक के पारिवारिक दायित्वों में अपनी श्रेष्ठ सहभागिता सुनिश्चित करते हुए अपनी पढाई में भी अब्बल स्थान पर पहुंचकर अपनी श्रेष्ठ क्षमता साबित की है. फिर भी, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि विभिन्न सामाजिक

चुनौतियों का सामना करते हुए अनेकों छात्राएं अपनी इच्छाओं और सपनों को तोडने के लिये मजबूर हो जाती है. कई बार पारिवारिक निर्णयों के सामने उनके अपने सपने बौने साबित हो जाते हैं.

उन्होंने अपने संबोधन के माध्यम से छात्राओं का आह्वान किया कि वे अपने परिवार के साथ भी अपने जीवन लक्ष्यों को साझा करें और पारिवारिक सहमति एवं सहयोग के साथ अपने सपनों को पूरा करने का दृढ संकल्प लें ताकि वे निर्भीक होकर जीवन में सफलता के मुकाम हांसिल कर सकें. उन्होने इस अवसर पर इस विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा आरंभ इस ग्लैड कार्यक्रम का संयोजन कर रही पूरी टीम के इस प्रयास की सराहना की और कहा कि यह कार्यक्रम पूरे देश में एक अनूठी पहल बना है, और इसमें जल्दी ही विश्वविद्यालय के बाहर की छात्राओं को भी ऑनलइन जोडा जायेगा, ताकि यह विश्वविद्यालय इसके संस्थापक सर डॉ. हरीसिंह गौर जी के संतुलित सामाजिक विकास के सपने को पूरा करने की दिशा में एक और कदम आगे बढ सके, और हम सभी मिलकर इसके माध्यम से सामाजिक विकास में अपने दायित्व का निर्वहन कर सके. उन्होने कहा संतुलित सामाजिक विकास एवं विकसित समाज के लिये छात्राओं को भी आगे आना होगा, और बराबर के अवसर व सफलता अर्जित करनी होगी. अपनी बात को सोचने, कहने, और निर्णय लेने का ढंग बदलना होगा.

इस कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की लोकपाल अधिकारी प्रो. अर्चना पाण्डे ने छात्राओं को सम्बोधित किया. प्रो. पाण्डे ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा ही सफलता की कुंजी है और प्रत्येक छात्रा को अपने सपनों को साकार करने के लिए कठिन परिश्रम और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए. उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और नेतृत्व को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होने विश्वविद्यालय की कुलपति को विशेषतः छात्राओं के भविष्य की चिंता करने और उन्हें सपने साकार करने में मदद हेतु इस नेक कार्यक्रम को आरंभ करने के लिये साधुवाद दिया. उन्होंने इस अवसर पर कहा कि आज देश जिस गति से विकास कर रहा है, तो यहां अवसरों की कमी नहीं है परन्तु बेटियों को भी सपने सजोने के साथ साथ सपनों को साकार करने के लिये भी मेंहनत करनी होगी। अपने सपनों को मझधार में नहीं छोडें, बल्कि उन्हें जीयें.

कार्यक्रम की दूसरी विशिष्ट अतिथि सागर, कैंट की अधिशासी अधिकारी, श्रीमती मनीषा जाट ने भी छात्राओं से उनके सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करने की सलाह दी. उन्होंने कहा कि ‘‘ग्रोइंग’’ का अर्थ है आत्म-विकास और नए अवसरों को अपनाने की क्षमता विकसित करना, ‘‘लर्निंग’’ का तात्पर्य ज्ञान और कौशल को निखारना, जबकि ‘‘एचीविंग ड्रीम्स’’ से अभिप्राय है अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आत्म-विश्वास और संकल्प के साथ आगे बढ़ना है. उन्होंने कहा अधिकांश छात्राएं अपनी क्षमताओं को पहचाने बिना ही हार मानकर बैठ जाती हैं. कभी अपनी पारिवारिक आर्थिक स्थिति तो कभी शहरी-ग्रामीण

परिवेश के अन्तर को अपना भय बना लेती हैं, और बडे सपने नहीं देख पाती हैं. इससे अधिक विडम्बना तब होती है जब अंग्रेजी भाषा में कमजोर अथवा दक्ष नहीं होने पर भयग्रस्त रहती हैं और यह मान लेती हैं कि सफलता उनसे कोसों दूर है। जबकि ये सभी मिथ्या भ्रम हैं, जिनसे छात्राओं को स्वयं लडना होगा और आगे बढना होगा। उन्होने कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसकी परम आवश्यकता बताई और आश्वत किया कि इस कार्यक्रम के लिये जब कभी छात्राओं से फिर संवाद का अवसर मिला तो वे इन बेटियों के उज्ज्वल भविष्य के लिये फिर इस कार्यक्रम में साथ होंगी.

उद्घाटन कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. ऋतु यादव ने कार्यक्रम के शुभारंभ पर उपस्थित कुलपति, विशिष्ट अतिथियों, सभी माननीय अतिथियों, सभागार में उपस्थित शिक्षकों और छात्राओं का हार्दिक स्वागत किया. उन्होंने कहा कि यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि जहां हम शिक्षा, सशक्तिकरण और प्रगति के नए आयामों की ओर कदम बढ़ा रहे हैं वहीं समाज की इस आधी आबादी को भी अपनी पूरी बात रखने के लिये गम्भीरता के साथ चिंतन भी किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम विशेष रूप से बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के साथ साथ उनमें आत्मविश्वास बढ़ाने तथा उन्हें समाज में अपनी एक सशक्त पहचान बनाने के लिए प्रेरित करेगा.

ग्लैड कार्यकम के सूत्रधार और भूगोल विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने ग्लैड कार्यक्रम की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य छात्राओं को उनकी क्षमता और सफलता के स्तर को पहचानने में मदद करना और उन्हें उनके जीवन के लिये श्रेष्ठ लक्ष्य चुनने के लिये प्रेरित करना है। साथ ही, उनके मन में बैठे मिथ्या डर को दूर करके उनमें आत्मविश्वास को बढ़ाना है। यह कार्यक्रम छात्राओं को एक ऐसा मंच प्रदान करेगा जहां वे अपने विचारों को खुलकर अभिव्यक्त कर सकें, नई चीजें सीख सकें और अपने व्यक्तिगत व पेशेवर विकास की ओर कदम बढ़ा सकें. उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह कार्यक्रम छात्राओं के जीवन में नई ऊर्जा और सकारात्मक बदलाव लाएगा. उन्होंने ''आधी आबादी की आधी बात'' पर पीढा जाहिर करते हुए कहा कि बेटियों को भी अपने सपने जीने का बराबर का हक है पंरन्तु किन्ही कारणोवश उनके सपने खुद उन तक ही सीमित रह जाते हैं। उन सपनों को जगाना होगा और बेटियों के अरमानों को भी पंख लगाने होगे ताकि उनके सपनों की उडान भी आसमान को छू सके।

ग्लैड कार्यक्रम समन्वयक एवं भूगोल की सहायक प्रो. डॉ. दीपिका वशिष्ठ ने प्रोग्राम की प्रगति के बारे में बताया. उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के लिए 650 से अधिक छात्राओं ने पंजीकरण कराया है. पंजीकरण पूर्णतः निःशुल्क रखा गया है. साथ ही छात्राओं के लिये जो भी इवेंट्स होंगी वे सभी निःशुल्क होंगे. इस कार्यक्रम की दूसरी समन्वयक भूगोल की सहायक प्रो. सुश्री शिवानी मीना ने इस प्रोग्राम के अंतर्गत आयोजित होने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे मेरी दिशा (गोल्डन ड्रीम्स), आरोग्य ध्यानम, जिंदगी तू बता, जरा हटके, प्रेरणा, करिएर ग्लोरी, शाइनिंग स्टार्स, जीरो टू हीरो, रचनात्मकता, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, डिजिटल अवेयरनेस, वीमेन राइट्स, रिमोट सेंसिंग एंड जीआइएस पर कार्यशाला आदि के बारे में जानकारी दी। इसमें मोटिवेशनल एवं कैरियर गाइडेंस सहित संवाद कौषल के विशेष सत्र भी आयोजित करवाये जायेंगे.

कार्यक्रम के अंत में इस कार्यक्रम की प्रोग्राम प्रबंधक डॉ. श्वेता शर्मा, सहायक प्रो. एन्वायरमेंटल साइंस ने सभी अतिथियों, आंगतुको, छात्राओं, सहयोगी टीम सदस्यों तथा प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया को धन्यवाद ज्ञापित किया. कार्यक्रम का संचालन दर्शनशास्त्र विभाग की सहायक प्रो. डॉ. अर्चना वर्मा ने किया, तथा ग्लैड कार्यक्रम का वीडियो प्रजेन्टेशन प्रबंधन मनोविज्ञान विभाग की सहायक प्रो. डॉ. संचिता मीना ने किया. कार्यक्रम के अंत में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता तथा सभी अतिथियों एवं उपस्थित छात्राओं ने मिलकर मुस्कान का प्रतीक ''बैलून ऑफ जाय'' रंग-बिरंगे गुब्बारे आकाश में उडाकर छात्राओं के सुनहरे सपनों और सफलता की उम्मीदों का संदेश दिया.

हमारे जीवन का हर आयाम परंपरागत ज्ञान से जुड़ा हुआ है - प्रो. गंगाधर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के मानवविज्ञान विभाग में परंपरागत ज्ञान एवं सतत समाज विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई. यह संगोष्ठी मानवविज्ञान विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल, मध्य प्रदेश एवं इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस, छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुई. इस द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम दिन के उद्घाटन सत्र में अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया. उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि परंपरागत ज्ञान आज की पीढ़ी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है इसे संरक्षित रखने की आवश्यकता है ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक पहुंच सके. मुख्य अतिथि के रूप में आदरणीय प्रो. एम. आर. गंगाधर, कुलपति, चामराजनगर विश्वविद्यालय, कर्नाटक, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा जीवन का हर आयाम परंपरागत ज्ञान से जुड़ा हुआ है और हमें इसे आत्मसात करते हुए आगे बढ़ना चाहिए.विशिष्ट अतिथि संदीप जी.आर., जिला कलेक्टर, सागर, ने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सतत समाज के निर्माण हेतु सागर जिले में यह प्रयास किया जा रहा है कि प्लास्टिक एवं कचरा मुक्त वातावरण स्थापित किया जाए तथा हानिकारक रसायनों के उपयोग पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया जाए. अध्यक्षता कर रहे वाई. एस. ठाकुर, प्रभारी कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, ने अपने वक्तव्य में कहा कि परंपरागत ज्ञान एवं सतत समाज एक-दूसरे के पूरक हैं. यदि हमें एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ना है, तो हमें परंपरागत ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए इसे व्यापक रूप में अपनाना होगा. डॉ. सोनिया कौशल, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की आयोजक, ने संगोष्ठी के विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य परंपरागत ज्ञान को समझना और इसे सतत समाज निर्माण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्थापित करना है.

आभार व्यक्त करते हुए डॉ. रामेंद्र नाथ कुंडू ने कहा कि इस संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए विचार और शोध न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से बल्कि समाज के व्यापक हित में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. संगोष्ठी के दौरान विभिन्न विषयों पर विद्वानों, शोधकर्ताओं एवं छात्रों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए. इन प्रस्तुतियों में परंपरागत ज्ञान की भूमिका, टिकाऊ समाज के निर्माण में जनजातीय समुदायों का योगदान, और आधुनिक विज्ञान व पारंपरिक पद्धतियों के समन्वय पर गहन चर्चा की गई. संगोष्ठी के प्रथम दिन के विभिन्न तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों ने टिकाऊ समाज एवं परंपरागत ज्ञान के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए. इस संगोष्ठी में देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया, जिससे यह कार्यक्रम अत्यंत सफल एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ.

सिस्टम्स बायोलॉजी में प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन महिला दिवस समारोह के साथ संपन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज के तत्वावधान में एडवांसेज इन सिस्टम बायोलॉजी विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 'सिस्टम्स बायोलॉजी में प्रगति' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का जश्न मनाया गया, जिसमें महिला वैज्ञानिकों के योगदान को समर्पित एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। इस दिन मुख्य भाषण, विशेष व्याख्यान और महिला वैज्ञानिक पुरस्कार प्रस्तुतियों को शामिल किया गया, जिसमें महिला वैज्ञानिकों द्वारा किए गए नवाचारपूर्ण शोध को उजागर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला विकास समिति की प्रभारी प्रो. वंदना सोनी द्वारा उद्घाटन भाषण से हुई, जिन्होंने पूरे दिन के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। महिला विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए प्रो. श्वेता यादव ने प्रो. सोनी को सम्मानित भी किया। पूरे दिन के कार्यक्रम को डॉ. सोमेनाथ घोष, सुश्री अंकिता और सुश्री गरिमा ने शानदार तरीके से संचालित किया, जिन्होंने दर्शकों को जोड़े रखा और सत्रों की सुचारु रूप से प्रस्तुति सुनिश्चित की।

भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), भोपाल की डॉ. विनिता गौड़ा ने भारतीय जैव विविधता के अध्ययन के लिए आणविक और पारंपरिक वर्गीकरण उपकरणों के उपयोग पर मुख्य भाषण दिया। एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा की डॉ. स्वाति त्रिपाठी ने फसल उत्पादन में सुधार के लिए नैनो-माइक्रोबियल समाधानों के उपयोग पर अपना विचार प्रस्तुत किया। सम्मेलन के अंतिम दिन जीव विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान में अत्याधुनिक शोध को प्रदर्शित करने वाले कई विचारोत्तेजक विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय (प्रयागराज) की डॉ. रश्मि श्रीवास्तव ने विथानिया सोम्निफेरा (अश्वगंधा) से प्राप्त विथाफेरिन-ए नामक जैव सक्रिय यौगिक पर अपने प्रयोगात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत किए, जिसमें मधुमेह की स्थिति में हार्मोनल असंतुलन को नियंत्रित करने की इसकी क्षमता पर प्रकाश डाला गया। उनका शोध इस बात की जांच करता है कि कैसे मधुमेह जीएनआरएच-1 विनियमन को बाधित करता है, जिससे प्रजनन प्रणाली में असामान्यताएँ उत्पन्न होती हैं, और कैसे विथाफेरिन-ए एक न्यूरोप्रोटेक्टिव और अंतःस्रावी मॉडुलेटर के रूप में कार्य करता है। लॉस एलामोस नेशनल लेबोरेटरी

(यूएसए) की डॉ. किर्स्टन पैफ ने जलवायु परिवर्तन और इसके कृषि उत्पादकता पर संभावित प्रभावों पर एक ऑनलाइन प्रस्तुति दी।

महिला वैज्ञानिक पुरस्कार सत्र एक प्रमुख आकर्षण रहा, जिसमें सिस्टम्स बायोलॉजी में अद्वितीय शोध प्रस्तुत किए गए। पटना साइंस कॉलेज (पटना) की डॉ. बबिता शर्मा के शोध ने प्लास्मोडियम पी25 प्रोटीन पर ध्यान केंद्रित किया, जो मच्छर वाहकों में मलेरिया संचरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एमएससीबीडी विश्वविद्यालय (टकटपुर) की डॉ. कुकू मोहपात्रा ने भारतीय वृक्ष मेंढक में अंग पुनर्जनन की आनुवंशिक तंत्र की जांच की। आरएस गवर्नमेंट पीजी गर्ल्स कॉलेज (छिंदवाड़ा) की डॉ. सिंपल पाटिल ने पर्यावरण प्रदूषकों, जिसमें भारी धातुएं और कीटनाशक शामिल हैं, के पौधों के एंजाइमेटिक गतिविधि और विषाक्तता स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया। राजा महेंद्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय (अलीगढ़) की डॉ. पूजा कुमारी ने मीठे पानी की मछलियों के लिए सुरक्षित और प्रभावी एनेस्थेटिक खुराक पर एक

अध्ययन प्रस्तुत किया। बनस्थली विद्यापीठ (बनस्थली) की डॉ. साक्षी सिंह ने प्लास्टिक कचरे को तोड़ने में कीड़ों, विशेष रूप से पतंगे (लेपिडोप्टेरा) और कुछ बीटल्स (कलोप्टेरा) की बायोडिग्रेडेशन क्षमता का अध्ययन किया। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की डॉ. नलिनी तिवारी ने मिट्टी की जैव विविधता और वर्गीकरण में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की, जो मिट्टी के संरक्षण और सतत कृषि के लिए आवश्यक है। डॉ. किरण सिंह, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने साल्विया हिस्पानिका (चिया बीज) का उपयोग करके जिंक ऑक्साइड (ZnO) नैनोपार्टिकल्स के हरित संश्लेषण पर अभिनव शोध प्रस्तुत किया। अंतिम पोस्टर सत्र में आणविक जीवविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान और जूलॉजी पर शोध प्रस्तुत किए गए, जिससे युवा शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्षों को साझा करने का मंच मिला। समापन समारोह में विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता दी गई: यंग साइंटिस्ट अवार्ड: डॉ. मुकेश कुमार मीना, डॉ. रामवंत गुप्ता, डॉ. कौशिक कुमार डे, डॉ. अश्विनी कुमार, डॉ. रॉबिन कुमार पुंडीर, डॉ. रश्मि श्रीवास्तव, डॉ. राम कुमार नेमा, वूमन साइंटिस्ट अवार्ड: डॉ. विनिता गौड़ा, डॉ. अमृता यादव, डॉ. कुकू मोहपात्रा, डॉ. पूजा कुमारी, डॉ. तुनेरा भदौरिया, डॉ. स्वाति त्रिपाठी, डॉ. नलिनी तिवारी, डॉ. किरण सिंह, सीनियर साइंटिस्ट अवार्ड: प्रो. सिद्धार्थ मिश्रा, प्रो. केशव सिंह, प्रो. शिरीष श्रीवास्तव, प्रो. विशाल त्रिवेदी, प्रो. दिनेश कुमार यादव, सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति: श्री देबब्रत दाश, श्री पितम चक्रवर्ती, सुश्री अंकिता द्विवेदी, सुश्री पूजा तिवारी, श्री सिद्धार्थ राजपूत, सुश्री रोशनी राजपूत, सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुति: श्री कुलदीप गौलिया, श्री कार्तिकेय मिश्रा, सुश्री कैनात उस्मानी, सुश्री अंकिता दास, श्री अभिषेक पाठक, श्री मनीष कुमार मांझी, सम्मान समारोह एक समूह फोटो सत्र के साथ संपन्न हुआ, जिसने एक सफल सम्मेलन को चिह्नित किया, जिसने वैज्ञानिक आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान किया और शोध और नवाचार में महिलाओं के योगदान का जश्न मनाया।

परंपरागत शिक्षा के साथ रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकता – प्रो. पाराशर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्थापना काल 1946 में आरम्भ हुये विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग के पुरा विद्यार्थियों के प्रथम समागम (एल्यूमिनी मीट) संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि सत्तर के दशक में विभाग के विद्यार्थी,

नागपुर विश्वविद्यालय एवं मैरीटाइम यूनिवर्सिटी चेन्नई के पूर्व प्रो-वाइसचांसलर रहे प्रोफेसर जी. एस.पाराशर थे। उन्होंने आज परंपरागत शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। आपने कहा कि जीव विज्ञान विभाग, सैरी कल्चर, फिशरीज जैसे विषय आरम्भ कर विभाग को गांव-किसान से जोड़े। अपने गुरु, जाने माने कीट विज्ञानी दिवंगत प्रो. आर.एस. सैनी का स्मरण करते हुए आपने उनकी स्मृति को जीवंत बनाये रखने हेतु व्याख्यान माला आरम्भ करने का प्रस्ताव दिया। उन्नीस सौ साठ के दशक में विद्यार्थी रहे पूर्व विभाग अध्यक्ष, प्रो. डी पी गुप्ता ने अपने अनुभव साझा करते हुए एल्युमिनी मीट की सराहना की। कुलपति प्रतिनिधि प्रो वाय एस ठाकुर ने आगंतुकों से विश्वविद्यालय एल्युमिनी एसोसिएशन के सदस्यता ग्रहण करने हेतु आव्हान किया। एल्युमिनी मीट की संयोजक प्रो.वर्षा शर्मा ने विभागीय इतिहास पर प्रकाश डाला साथ ही अतिथि परिचय देते हुए बताया कि सागर में अध्ययन काल के बाद डॉक्टर पाराशर नागपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुए। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के जर्नल्स में उनके अनेक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। 65 विद्यार्थी उनके सफल निर्देशन में पी-एच डी उपाधि हासिल कर चुके हैं। विभागाध्यक्ष प्रो श्वेता यादव ने विभागीय गतिविधियों का ब्यौरा दिया। आयोजन सचिव डॉक्टर पायल महोबिया ने स्वागत भाषण दिया और नवागत नव-नियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर को सभा से परिचित कराया। कार्यक्रम में साठ के दशक में विद्यार्थी प्रो. स्मिता बैनर्जी, सत्तर के दशक के विद्यार्थी रहे प्रो. यू.एस. गुप्ता,अस्सी के दशक के विद्यार्थी रही विश्वविद्यालय की पूर्व प्रभारी कुलपति प्रो. जे. डी. आही, इसी दशक में विभाग के छात्र रहे प्रो. सुबोध जैन ने उदगार व्यक्त किए और संस्मरण साझा किए। समारोह का संचालन मनीषा नाहर ने किया और शिखा दुबे ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में विभागीय विद्यार्थियों द्वारा भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। छात्रा आमया ने दक्षिण भारत का नृत्य, ख़ुशी मीणा ने राजस्थानी, रघुवीर ने मिमिक्री और अदिति सराफ़ ने वालीवुड की सुन्दर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उन्नीस सौ नब्बे से दो हज़ार चौबीस तक के विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की इनमें पुष्पलता, राममनोहर, मुकेश, रविन्द्रपाल, नमिता जैन, रोशनी, आमिर ख़ान आदि शामिल थे। सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न, पौधा और वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस प्रथम एल्यूमिनी मीट में विभाग के दिवंगत प्रोफेसर एच एन भार्गव, आरएस सैनी, आर के श्रीवास्तव, वी एस बैस, एच के सक्सेना, डी डी सोनी, बी के श्रीवास्तव, वाय एन सहाय, मेडम एस सहाय को श्रद्धांजलि दी गई। राष्ट्र गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इतिहास विभाग शोधार्थी परिषद द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दो दिवसीय अकादमिक परिचर्चा का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग शोधार्थी परिषद के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 7 एवं 10 मार्च 2025 को दो दिवसीय अकादमिक परिचर्चा का आयोजन किया गया. जिसमें विश्व तथा भारतीय इतिहास में महिलाओं के योगदान को याद किया गया एवं 10 मार्च को विदुषी सवित्रीबाई फुले की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई. कार्यक्रम के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार, डॉ. आफरीन खान (राजनीति शास्त्र विभाग) एवं डॉ. संजय शर्मा (जीवन पर्यन्त शिक्षा विभाग) तथा इतिहास विभाग के अन्य विद्वान प्रो. बी.के श्रीवास्तव, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. पंकज सिंह भी उपस्थित रहे.

डॉ. आफरीन खान ने इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम 'ऐक्सलरेट ऐक्शन' पर ध्यान आकर्षित करते हुए महिला आदोलनों के विभिन्न चरणों, उनके मध्य समता, समानता एवं स्वतंत्रता की भावना को व्यक्त किया. साथ ही बताया कि समाज में महिलाओं के निम्न स्तर का जिम्मेदार पुरुष नहीं अपितु पित्रसत्ता है. जिसके शोषण के दायरे में महिलाओं के साथ पुरुष भी आते है. वक्ता डॉ संजय शर्मा ने महिलाओं पर होती घरेलु हिंसा की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया तथा घरेलु कार्यों में पुरुषों के समान सहयोग का आग्रह किया साथ ही उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से परिवार में महिलाओं की स्थिति को उजागर किया और यह पहल की हम महिलाओं की समाज में समान अवस्था के लिए हम और 200 वर्ष इंतजार नहीं कर सकते हमें तुरंत प्रयत्नों के द्वारा इसे प्राप्त करना होगा. इसके अलावा दूसरे दिवस के कार्यक्रम में भी उन्होने विदुषी सावित्रीबाई फुले के प्रयत्नों एवं योगदान का स्मरण कराया. दूसरे दिवस के कार्यक्रम में प्रो. बी. के. श्रीवास्तव ने स्थानीय महिला शक्ति से अवगत कराते हुऐ शोधार्थियों से उन पर शोध करने की अपील की. डॉ. संजय बरोलिया ने सवित्रीबाई फुले के संदर्भ में कहा कि उन्होनें शिक्षा को असमानता को पाटने का माध्यम बनाया. डॉ. पंकज सिंह ने महिलाओं की वर्तमान परिस्थितियों को देख कर पुरुषों के संवेदनशील होने पर जोर दिया.

कार्यक्रम के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने विषय की प्रासंगिकता को याद कराते हुए शोधार्थियों में व्याप्त जिज्ञासा को शांत कराते हुए कहा कि दुनिया में आदमी द्वारा फैलाये समस्त उपनिवेशों से मुक्ति प्राप्त हो गई है. महिला आदमी का अतिम उपनिवेश है, इससे भी शीघ्र मुक्ति मिलने वाली है. 21 वीं शताब्दी महिलाओं की शताब्दी है. समग्र मानव जाति को बचाने और शांति स्थापना का हुनर मातृ शक्ति में ही निहित है. कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी करुणा सिंह राजपूत एवं आशु अहिरवार ने किया. इसके अलावा कार्यक्रम में शोधार्थी परिषद इतिहास विभाग के अध्यक्ष विजय प्रकाश सिंह, सचिव प्रविण्या श्रीवास्तव एवं अन्य शोधार्थियों ने अतिथियों का स्वागत किया. प्रो. अशोक अहिरवार द्वारा शोधार्थी परिषद के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय है. यह शोधार्थियों के मध्य जागरुकता एवं नारीवादी मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता को बढाने में मदद करेगा.

सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा एवं समाज सुधार के लिए किया कार्य

सावित्रीबाई फुले के कार्य को हमें आगे बढ़ाना होगा, आज महिला शिक्षा और विकास समाज की आवश्यकता है उक्त विचार डॉ. आंबेडकर चेयर, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में आयोजित डॉक्टर अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर को संबोधित करते हुए डॉ. रेखा सोलंकी ने कहा कि 9 वर्ष की आयु में सावित्रीबाई फुले की शादी हो गई थी परंतु उनके

पति महात्मा ज्योतिबा फुले के द्वारा उनके सहयोग करते हुए दोनों ने समाज सुधारक एवं महिला पिछड़ों की शिक्षा के लिए अनेक स्कूल खोलकर शिक्षा के माध्यम से समाज सुधार का कार्य किया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. आर.टी. बेंद्रे ने कहा कि महाराष्ट्र समाज सुधारकों की भूमि रही है अनेक समाज सुधारकों ने समाज के लिए अपना जीवन समर्पित किया है. आज हम उनके कार्यों को नमन कर रहे हैं. कार्यक्रम के अध्यक्षता करते हुए प्रो. राजेश गौतम ने कहा कि ज्योतिबा फुले के मिशन को सावित्रीबाई फुले ने आगे बढ़ाया. समाज में सबको बराबरी के हक मिल सके इसके लिए कार्य किया. इस अवसर पर डॉ. देवेंद्र कुमार ने कहा कि समाज एवं देश हित के कार्य करने वाले हमेशा अमर हो जाते हैं, आज हम सावित्रीबाई फुले जी को याद कर रहे हैं तो उनके शिक्षा एवं समाज सुधार के कार्यों के कारण, सावित्रीबाई के कार्य एवं जीवन से हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए. उक्त अवसर पर डॉ वींरेंद्र मटसेनीय, अजब सिंह, डॉ. अभय कुमार, बालचंद, ओमप्रकाश चौरसिया, विश्वा गुप्ता, हिमांशु लारिया आदि के द्वारा भी संगोष्ठी को संबोधित किया गया. कार्यक्रम में कैसी रतलम,

जितेंद्र कुमार, शरद विश्वकर्मा, हिमांशु लारिया, अंशु झरिया, सम्यक बौद्ध, विजय परिहार आदि उपस्थित थे.

एडवांसमेंट एट इंटरफ़ेस ऑफ केमिस्ट्री एंड बायोलॉजी विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार व महर्षि कणाद भवन में एडवांसमेंट एट इंटरफ़ेस ऑफ केमिस्ट्री एंड बायोलॉजी विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन सफलता पूर्वक किया गया। सम्मेलन का आयोजन विश्वविद्यालय के रसायन विभाग, शोध एवं विकास विभाग, एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ ने संयुक्त रूप से किया।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के तौर पर राष्ट्रीय फिजिकल लेबोरेटरी के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. नाहर सिंह को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलगुरु प्रो. वाई. एस. ठाकुर जी ने की। सम्मेलन की संकल्पना के बारे में संयोजक प्रो. नेत्रपाल सिंह ने सबको अवगत कराया। रसायन विभाग के अध्यक्ष एवं डीन प्रो. विजय वर्मा जी ने सभी का इस कार्यक्रम में स्वागत करते हुए इस कार्यक्रम की जरूरत पर प्रकाश डाला। विभाग

के रसायन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं डीन प्रो. ए. पी. मिश्रा जी ने सम्मेलन की योजना और उसके महत्व के बारे में बताया। शोध एवं विकास विभाग की निदेशक प्रो. श्वेता यादव ने रसायन विज्ञान और बायोलॉजी को संयुक्त रूप से जोड़ कर कार्य करने पर बल दिया। इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल के अध्यक्ष प्रो. ए. के. जैन ने इस तरह कार्यक्रमों को आयोजित करके नए लोगों को प्रेरित करने की विश्वविद्यालय की नीति के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. नाहर सिंह ने सबको स्टैंडर्ड और इकाई के बारे में अवगत कराया। कारगिल युद्ध से पहले हमारा अपना इंडियन स्टैंडर्ड टाइम नहीं था और हम यू एस टाइम को फॉलो करते थे। देश को अपने इकाई अपने स्टैंडर्ड पर विशेष ध्यान देना चाहिए और भारत ने इसको बड़ी गंभीरता पूर्वक कारगिल युद्ध के बाद अपनाया। विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाई. एस. ठाकुर ने एक सफल सुंदर कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी को शुभकामनाएं दी और भविष्य में

इस तरह के कार्यक्रमों की जरूरत पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन का दूसरा सेशन का पहला लेक्चर डॉ. पुष्पल घोष ने ऑप्टो-इलेक्ट्रॉनिक मटेरियल पर दिया। दूसरे लेक्चर में प्रो. नवीन कानगो ने माइक्रोब्स की दुनिया से अवगत कराया और बेनिफिशियल बैक्टीरिया को बढ़ाने के लिए प्रोबायोटिक्स के इस्तेमाल पर प्रकाश डाला। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय से आईं डॉ. आरती श्रीवास्तव ने एंसीएंट पॉलीमर का आज के युग में किस तरीके से फार्मास्यूटिकल और एनवायरमेंटल रेमेडीज में उपयोग हो सकता है यह बताया। कार्यक्रम के अंतिम सेशन में ओरल एवं पोस्टर प्रेजेंटेशन किए गए। कार्यक्रम का संचालन सुश्री प्राची तिवारी और सुश्री वैष्णवी सांवले ने किया।

इसके बाद रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सुश्री वैष्णवी सांवले ने गणेश वंदना पर नृत्य प्रस्तुत किया। श्री स्वतंत्र अग्रवाल जी ने बांसुरी वादन प्रस्तुत किया। संगीत विभाग के छात्रों ने विशेष कर शुभंशिता ठाकुर, मानवी श्रीवास्तव, नीलम मिश्रा, तनशिता श्रीवास्तव, सृष्टि जैन और स्तुति खम्परिया ने एक सुंदर कव्वाली प्रस्तुत की। हार्मोनियम पर अतुल, की बोर्ड पर कृष्ण कुमार, तबला वादन अनिकेत ने किया एवं ढोलक वादन अरविंद ने प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन की शुरुआत दिल्ली विश्वविद्यालय से आमंत्रित डॉ. राजमणि नागराजन जी के लेक्चर से हुई। उन्होंने द्विआयामी मेटल ऑक्साइड में हेलोजन के डोपिंग से ऊर्जा प्राप्ति और एनवायरनमेंटल रेमेडीएशन के बारे में अवगत कराया। दिल्ली विश्वविद्यालय से ही आमंत्रित प्रो. मिलिंद देशमुख ने नॉन कोवालेंट इंटरेक्शन पर अपना शोध को प्रस्तुत किया। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में ही उनके द्वारा किए गए कार्य को उन्होंने प्रस्तुत किया। अणु में व क्लस्टर में हाइड्रोजन बंधन की ऊर्जा निकालने की उनकी विधि से उन्होंने सबको अवगत कराया।

इस पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. कष्टी बल्लभ जोशी ने बनाई थी। डॉ. कल्पतरु दास रजिस्ट्रेशन, डेस्क और लोक और पोस्टर प्रेजेंटेशन की व्यवस्था देख रहे थे। कार्यक्रम के पेट्रोन प्रो. ए. पी. मिश्रा एवं प्रो. विजय वर्मा थे। कार्यक्रम के कन्वीनर प्रो. नेत्रपाल सिंह और डॉ ऋतु यादव थीं। ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. के के राज, डॉ. कश्ती बल्लभ जोशी, डॉ कल्पतरु दास, डॉ सरिता राय, डॉ अभिलाषा दुर्गावंशी एवं डॉ नीरज उपाध्याय थे। जॉइंट सेक्रेटरी डॉ. विवेक तिवारी, डॉ. अमूल केसरवानी, डॉ. अनिल बहे एवं डॉ. विजयश्री सूर्यवंशी थे। कार्यक्रम प्रभावी और पथ प्रदर्शक रहा।

कला प्रदर्शनी में फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने की सृजनात्मक अभिव्यक्ति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वैली कैम्पस स्थित ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के नवीन भवन 'कौटिल्य भवन' में वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने अपनी कलाओं का प्रस्तुतीकरण किया. प्रदर्शनी का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. प्रदर्शनी का संयोजन डॉ. सुप्रभा दास ने किया.

इस अवसर पर कुलपति ने विद्यार्थियों के सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का अवलोकन किया और कहा कि विद्यार्थियों को

लगातार इसी तरह की सृजनात्मक गतिविधि में संलग्न रहकर अपनी कला और प्रतिभा को निखारना चाहिए. प्रत्येक विद्यार्थी में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है इसलिए अपनी क्षमता और हुनर को पहचान दें. इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है. उन्होंने गौर संग्रहालय में एक आर्ट गैलरी बनाए जाने की भी स्वीकृति दी जिसमें बुंदेलखंड की संस्कृति और परम्परा को चित्रित करती हुई पेंटिंग्स और चित्रों को लगाया जाएगा.

प्रदर्शनी में बीएफए के विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया, डॉ. सुप्रभा दास एवं आकाश मालवीय द्वारा निर्मित पेंटिंग्स और कलाकृतियों को भी अवलोकनार्थ रखा गया है. प्रदर्शनी में प्रस्तुत कलाकृतियों में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित ग्राफिक डिजाइन, पोस्टर, फोटो ग्राफी, कैलीग्राफी, टू डी एवं थ्री डी आर्ट, लोक कला, पट चित्र, मधुबनी आर्ट, मंडला आर्ट, क्रिएटिव पेंटिंग को आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया गया. शुभारम्भ के अवसर पर प्रो. राजेन्द्र यादव, डॉ. महेंद्र आर्य, डॉ. नीलम थापा, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ.राकेश सोनी, अल्ताफ मुलानी, डॉ. नीरज उपाध्याय, विभाग की शोधार्थी यशा श्रीवास्तव, शालू सोनी, किरण ठाकुर, नेहा गुप्ता, मुस्कान जैन, आस्था जैन, सोनल, श्रुति, वैभव, प्रदीप, मोनालिसा, अमित, शिवानी, वर्षा, पीयूष, पलक, वैशाली, तेजस, दीपू सहित कई छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय प्राणी शास्त्र विभाग के नौ विद्यार्थियों ने गेट परीक्षा में सफलता प्राप्त की

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राणी शास्त्र विभाग के परास्नातक के 09 छात्रों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित गेट (स्नातक योग्यता परीक्षा) उत्तीर्ण की है. गेट एक राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा है जो मुख्य रूप से इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, विज्ञान, वाणिज्य, कला, मानविकी में विभिन्न स्नातक विषयों की व्यापक समझ का परीक्षण करती है. सफल विद्यार्थियों में कृति पांडे, पलक केशरवानी, रिशु कुमार राय, प्रिया गौतम, सुमन सौरभ मिश्रा, स्तुति विश्वकर्मा, मृणाल नागवंशी, आशीष कुमार साहू और करिश्मा श्रीवास्तव के नाम हैं. सभी विद्यार्थियों ने इस परीक्षा में सफलता के लिए अथक प्रयास का परिणाम बताया और कहा कि सभी विभागीय शिक्षकों और सदस्यों ने हमारे प्रयास में उत्साह वर्धन किया और इसके लिए हम आभारी हैं. छात्र-छात्राओं की इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शुभकामनाएं दीं हैं. विभागाध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव ने छात्रों की उल्लेखनीय सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं.

फार्मेसी विभाग में पुरा छात्रों का गोल्डन जुबली रियुनियन हर्षोल्लास के साथ संपन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग में 1970-76 बैच के बी.फार्म एवं एम.फार्म के बैच के डेलीगेट्स का 50 वर्षों के बाद दिनांक 17 एवं 18 मार्च को पुनःमिलन एवं गोल्डन जुबली समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें इस बैच के देश-विदेश से आये डेलीगेट्स अपनी धर्मपत्नियों के साथ शामिल हुए जिनमें प्रमुख रूप से लक्ष्मीकान्त पटेल-न्यूयार्क अमेरिका, नरेन्द्र जैन-मुम्बई, रघुबीर सिंह ठाकुर-जयपुर, सुधीर श्रीवास्तव-टोरेन्टो कनाडा, मुरलीधर साहू-गुड़गांव, प्रभात चौहान-पेनांग मलेशिया, सत्यनारायण तिवारी-टीकमगढ़, इन्दौर से जिनेन्द्र कुमार जैन, आश्विन भट्ट, नंद

मोटवानी, विजय महाजन, सागर से अशोक बुधवानी, संतोष जैन, रामकिशोर अग्रवाल, राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव हैं। रात्रि में होटल दीपाली रेजीडेन्सी होटल में गीत संध्या का आयोजन किया गया जिसमें अध्ययन काल की भूरी बिसरी यादों को और मधुर स्मृतियों को ताजा कर नाच गानों का आनंद लिया। दिन में विश्वविद्यालय में लाइब्रेरी, फार्मेसी विभाग, बॉयज हॉस्टल जहां अध्ययनकाल के समय निवास किया, विश्वविद्यालय केम्पस इत्यादि का भ्रमण किया। मुख्य आयोजन फार्मेसी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. उमेश पाटिल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें विभाग के समस्त शिक्षक, सेवानिवृत्त प्रोफेसर्स यथा डा. विनोद दीक्षित, डा. नरेन्द्र कुमार जैन, डा. सुरेश व्यास, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्र शामिल हुए। औषधियों को एक अत्यन्त रेगुलेटेड आइटम होने की वजह से इनके निर्माण की इकाईयों को लगाने से लेकर, दवाओं के रिसर्च एवं डेवलपमेन्ट, गुणवत्ता सुनिश्चितीकरण, इनके रखरखाव, वितरण, डिस्पेन्सिंग, इत्यादि विषयों

पर अपने-अपने फील्ड का 50 वर्षों से ज्यादा कार्य करने का अनुभव शेयर किया। अमेरिका और कनाडा जैसे सम्पन्न देशों में बतौर फार्मासिस्ट सेवा देने वाले एल्युमनाई ने फार्मासिस्टों का स्टेटस डाक्टरों के समकक्ष होने के बारे में अवगत कराया। देश में फार्मेसी कोर्स में वक्त की मांग को देखते हुए फार्मा इंजीनियरिंग, मेडीकल डिवाइस और क्लीनिकल फार्मेसी जैसे विषयों का विस्तृत समावेश किये जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। समारोह में शरीक हुए विविध क्षेत्रों में विशिष्ट अनुभव रखने वाले डेलीगेट्स ने अध्ययनरत विद्यार्थियों को हर सम्भव मदद मुहैया कराने का भरोसा दिलाया।

फार्मेसी विभाग की फेकल्टीज ने विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग में पहली बार किसी भी बैच द्वारा विभाग से अध्ययनोपरान्त 50 वर्षों बाद गोल्डन जुबली समारोह सम्पन्न करने पर प्रसन्नता जाहिर की तथा इस तरह के आयेजन समपन्न होते रहने की आवश्यकता पर जोर दिया। धन्यवाद प्रस्ताव के बाद समारोह का समापन हुआ।

इलेक्ट्रो केमिकल वर्कस्टेशन (इ सी डब्लू एस) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 21 मार्च 2025 को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में इलेक्ट्रो केमिकल वर्कस्टेशन (इ सी डब्लू एस) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 18 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. डॉ. विवेक कुमार पांडे (प्रभारी, सीएआर) ने सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. रत्नेश दास (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में इ सी डब्लू एस तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी.

इ सी डब्लू एस विश्लेषण एक उल्लेखनीय तकनीक है जिसका उपयोग इलेक्ट्रोड प्रक्रियाएं और प्रतिक्रिया गतिकी में, कार्बनिक और अकार्बनिक प्रजातियों की सूक्ष्म मात्रा को मापना में, न्यूरोट्रांसमीटर अंतःक्रियाओं का अध्ययन करना तथा तंत्रिका विज्ञान में व्यवहार के साथ न्यूरोकेमिस्ट्री का सहसंबंध स्थापित करना एवं कम सीमा वाले मौखिक दवाओं का पता लगाना, सुपरकैपेसिटर और बैटरी जैसे ऊर्जा भंडारण उपकरणों की क्षमता, दक्षता और स्थिरता का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, विद्युत-रासायनिक सेल में स्थिर धारा लागू करना तथा चार्जिंग और डिस्चार्जिंग के दौरान परिणामी वोल्टेज परिवर्तन को मापना भी शामिल है.

हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे द्वारा इ सी डब्लू एस के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रो. रत्नेश दास ने प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया एवं उनका उत्तर दिया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया.

प्रतिभागियों द्वारा इ सी डब्लू एस पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार, श्री अरविंद चडार, श्री चंद्रप्रकाश सैनी और श्री बलराम की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग के लिए स्वमूल्यांकन, परिश्रम और लक्ष्य के साथ कार्य करें- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के तत्वावधान में "उत्कृष्टता की रणनीति: नैक बाइनरी प्रत्यायन और एन. आई.आर.एफ रैंकिंग पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम" शीर्षक से दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ. इस कार्यक्रम का उद्देश्य संकाय सदस्यों, अकादमिक प्रशासकों और संबंधित हितधारकों को नैक के अद्यतन बाइनरी प्रत्यायन ढांचे और विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) में स्थिति को सुधारने हेतु रणनीतियों से अवगत कराना है. उद्घाटन सत्र की शुरुआत विधिवत मंगलाचरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुई. कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. नागेश्वर राव (पूर्व कुलपति, इग्नू, नई दिल्ली) एवं विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो. कुशेन्द्र मिश्रा (अध्यक्ष, वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग, बीबीएयू, लखनऊ) थे. इस अवसर पर प्रो. अनिल कुमार जैन (IQAC निदेशक) एवं प्रो. यू. के. पाटिल (निदेशक, योजना एवं संसाधन सृजन) भी मंचसीन थे.

अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त NAAC A+ ग्रेड की यात्रा को साझा किया और A++ ग्रेड तथा बेहतर NIRF रैंकिंग प्राप्त करने की स्पष्ट और आत्मविश्वासपूर्ण दिशा प्रस्तुत की. उन्होंने सभी शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत अकादमिक अभिलेखों को अद्यतन बनाए रखने एवं प्रतिदिन अपने कार्यों के विवरण को अपडेट करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि डाटा संग्रहण की प्रक्रिया को सुगम किया जा सके. उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान की रैंकिंग में एक-एक दिन की गई मेहनत व लगन का परिणाम मिलता है. हमारी कुशलता इसमें है कि हम अपने द्वारा किये गए कार्यों को कैसे इकट्ठा करते हैं और उचित प्रबंधन के माध्यम से कैसे प्रस्तुत करते हैं. इस कार्यशाला से हमें सीखना चाहिए कि हम अपने संस्थान को सर्वोत्कृष्ट कैसे बनाएं. हमें मानक के अनुरूप अपनी कमियों को ध्यानपूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा उस दिशा में कार्य करते हुए कमियों को पूरा करना

चाहिए. सर्वश्रेष्ठ होने की चाहत सभी में होती है. इस चाहत को दिशा देते हुए, स्व मूल्यांकन करते हुए लक्ष्य के साथ कार्य करें. हम अवश्य ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की रैंकिंग में शीर्ष पर होंगे. उन्होंने नवागत शिक्षकों को ऊर्जा के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि अपने वरिष्ठ शिक्षकों के अनुभवों का लाभ लेते हुए डॉ. हरीसिंह गौर के सपनों को साकार करने की दिशा में ऊर्जा के साथ कार्य करें. इससे आपके साथ-साथ हमारे विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मुख्य अतिथि प्रो. नागेश्वर राव ने कहा कि दुनिया में सबसे अच्छे शिक्षक भारत में हैं लेकिन रैंकिंग में हमारे देश के संस्थान कमजोर पड़ जाते हैं. इसका कारण है कि हम संसाधन संपन्न होते हुए भी अपने आंकड़ों को अच्छे ढंग से प्रस्तुत

नहीं कर पाते. इसके लिए बहुत ही तकनीकी ढंग से और कुशल प्रबंधन की आवश्यकता होती है. हमें डाटा प्रबंधन करते हुए अपनी सर्वश्रेष्ठ कार्यों को सामने लाने का प्रयास करना चाहिए. इससे रैंकिंग अपने आप अच्छी होगी. उन्होंने शिक्षकों को अर्पित, मूक्स जैसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम बनाने के लिए प्रेरित किया. उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षक भी ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से नए विषय सीखें. उन्होंने कहा कि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में रैंकिंग और नैक मूल्यांकन की इतनी पहले से तैयारी किया जाना सक्षम नेतृत्व, कुशल प्रशासक और श्रेष्ठ मार्गदर्शक की पहचान है. निश्चित तौर पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय आने वाले दिनों में अच्छी रैंकिंग और ग्रेड हासिल करेगा.

प्रो. कुशेंद्र मिश्रा ने वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य में NIRF रैंकिंग की बढ़ती महत्ता को रेखांकित करते हुए संस्थागत मापदंडों को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ संरेखित करने पर बल दिया. उन्होंने ग्रीन कैम्पस, वाटर मैनेजमेंट, वेस्ट मैनेजमेंट, री-साइकिलिंग, ट्री ऑडिट, प्लान्टेशन इत्यादि नवाचारी गतिविधियों और इसके उचित रिकॉर्ड के रख रखाव पर जोर दिया. उन्होंने कहा कि रैंकिंग के मानक रिकॉर्ड पर आधारित होते हैं जिन पर प्रमाणन के बाद ही अंक दिए जाते हैं. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सर्व सुविधा और संसाधन संपन्न विश्वविद्यालय है. इसके लिए हमें रणनीतिक तरीके से कार्य करना होगा. शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को एक साथ मिलकर एक लक्ष्य के साथ

सतत कार्य करना होगा जिससे मानक लक्ष्यों तक पहुंचा जा सके. उन्होंने ऐसे कई आयामों पर चर्चा की जिससे रैंकिंग को सुधारा जा सके. इस अवसर पर अतिथियों द्वारा प्रो. अनिल कुमार जैन एवं डॉ. प्रवीण कुमार टी.डी. द्वारा लिखित पुस्तक "पाठ्यक्रम विकास : सिद्धांत और व्यवहार" का विमोचन किया गया. इस अवसर पर शिक्षा विभाग के डॉ. रमाकांत द्वारा यूनेस्को समर्थित ऑनलाइन एडुकेशन फ़ॉर अ बेटर वर्ड Online Education for a Better Word (OE4BW) पहल के अंतर्गत एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, जिसके पोस्टर का भी विमोचन अतिथियों द्वारा किया

गया. कार्यक्रम के दौरान पूर्व आई.क्यू.ए. सी. निदेशक प्रो. रणवीर कुमार एवं उप-निदेशक प्रो. डी.के. नेमा को संस्थागत गुणवत्ता आश्वासन में उनके अमूल्य योगदान के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रशंसा-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. रजनीश अग्रहरि ने किया। आभार प्रो. यू. के पाटिल ने ज्ञापित किया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफ़ेसर प्रो. वाय एस ठाकुर, कुलसचिव डॉ. एस पी उपाध्याय, प्रो. चंदा बैन, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. ए पी मिश्रा, प्रो. अनुपम शर्मा, प्रो. राजेंद्र यादव, प्रो. विजय वर्मा उपस्थित थे. इसके साथ ही कार्यक्रम में विभिन्न स्कूल अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष एवं संकाय सदस्यों ने भी सहभागिता की.

दो दिवसीय सांगीतिक सभा ‘नाद रंग सुर ताल संग’ का शुभारंभ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय सांगीतिक सभा "नाद रंग सुर ताल संग" के प्रथम दिवस का शुभारंभ प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में किया गया. उन्होंने दोनों संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से संगीत सम्बंधित नए पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का सुझाव दिया. कार्यक्रम के अध्यक्ष देवेंद्र वर्मा ने इस संगोष्ठी का उद्देश्य बताते हुए कहा कि कला और संस्कृति को घर-घर तक पहुंचाएंगे. अवसर पर प्राचीन कला केंद्र सचिव प्रो. सजल कौशल ने प्राचीन कला केंद्र के द्वारा किये रहे प्रचार प्रसार पर प्रकाश डाला, डॉ राहुल स्वर्णकार व डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने सभी का आभार माना.

कार्यक्रम की प्रथम प्रस्तुति में ग्वालियर घराने से पधारे विशाल मोघे (अरुण कशालकर जी के शिष्य) ने राग भीमपलासी में तीन रचनाएं प्रस्तुत की एवं राग खमाज में टप्पा और तराना प्रस्तुत किया. हारमोनियम पर डॉ देवेंद्र वर्मा एवं तबले पर शैलेंद्र सिंह राजपूत ने संगत की. तत्पश्चात खैरागढ़

विश्वविद्यालय से पधारे दीपक महंत (मुकुंद भाले गुरु जी के शिष्य) ने तबला एकल वादन प्रस्तुत किया. हारमोनियम पर उनकी संगत आशुतोष सोनी ने की.

प्रथम दिवस की सभा की अंतिम प्रस्तुति में मुंबई से पधारे पंडित कैलाश पात्र ने वाइलिन पर राग श्री में विलंबित व द्रुत बंदिश प्रस्तुत की अंत राम मालव प्रस्तुत की. तबले पर दीपक दास महंत ने संगत की इस अवसर पर संगीत विभाग अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार, डीन प्रो. बलवंत भदोरिया, डॉ विभूति मलिक, डॉ अविनाश देशाई, श्रंगिरिशी, डॉ प्रेम चतुर्वेदी डॉ शांभवी शुक्ला, डॉ ब्रजेश मिश्र, शिद्धार्थ शंकर शुक्ला, सुनील देव, विनीत देव, बसंत कहु, डॉ हरिओम सोनी, डॉ अपर्णा चचोंदिया व शहर के संगीत प्रेमी उपस्थित रहे.

साहित्य और इतिहास का परस्पर गहरा संबंध है- कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के हिन्दी विभाग द्वारा रांगेय राघव के साहित्यिक अवदान पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के कणादभवन सभागार में किया गया. कार्यक्रम उद्घाटन सत्र का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीपप्रज्वलन एवं सरस्वती पूजनकर किया गया. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की. उन्होंने रांगेय राघव के साहित्यिक योगदान को याद करते हुए कहा कि उन्हें कम आयु मिली किंतु इतनी कि आयु में ही उन्होंने इतिहास और साहित्य को उत्कृष्टता प्रदान की. उनकी कृतियों रंगमंच पर भी राई से पर्वत कृति पर अपनी बात रखी. उन्होंने कहा कि साहित्य और इतिहास एक दूसरे के पूरक है. दोनों एक दूसरे को सम्पूर्ण बनाते हैं और एक दूसरे को स्थापित करते हैं.

दिल्ली विश्वविद्यालय के एशोसिएट प्रोफेसर डॉ. आशुतोष ने बीज वक्तव्य देते हुए इतिहास और साहित्यक के सह संबंध एवं इसकी प्रासंगिकता को प्रतिपादित किया. उन्होंने कहा कि दुनिया को कैसा होना चाहिए, यह सवाल लेकर साहित्य के पास जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि साहित्य इतिहास को वैधता प्रदान करता है. आधुनिकता वाद, विखंडनवाद जैसे सिद्धांतों ने साहित्य और इतिहास को अलग-अलग देखने की वकालत की लेकिन इस दृष्टि से देखना खंडित ज्ञान और दृष्टि मिलती है. हमें साहित्य और इतिहास के संबंधों को समझने के लिए भारतीय महाकाव्यों को आधार बनाना चाहिए. उन्होंने शेक्सपीयर, कवि तुलसीदास से लेकर हिन्दी साहित्य के आधुनिक

हस्ताक्षरों को रेखांकित करते हुए कहा कि साहित्य के अवलंबन के बिना इतिहास अपनी वैधता को स्थापित नहीं कर पाता. मुख्य अतिथि प्रो. श्यामसुंदर दुबे, प्रसिद्ध साहित्यकार हटा दमोह, विशिष्ट अतिथि प्रो.चंदा बैन अधिष्ठाता, भाषा अध्ययनशाला की गरिमामयी उपस्थिति रही. प्रो. दुबे ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि इतिहास को केवल घटनापरक ना देखकर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, जातीयता के आधार पर देखना चाहिए. रांगेय राघव कृत 'प्राचीन भारतीय परम्परा और भारतीय इतिहास' कृति की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए इतिहास और लोक की सहसंबंधता को

व्यक्त किया. पेमा फेत्या के चित्रित चित्र पर बात करते हुए कहा कि हम उस चित्र की भांति सीमा बंधन नहीं अपितु असीमित चिंतन परम्परा के धारक हैं और रांगेय राघव के साहित्य में यह तत्व निहित है. प्रो.चंदा बैन ने अपने वक्तव्य का प्रारम्भ विभागीय उपलब्धियों पर बात रखते हुए इतिहास और लोक की दृष्टियों से अवगत कराया तथा रांगेय राघव की ऐतिहासिक कृतियों का स्मरण किया. छत्रसाल विश्वविद्यालय के प्रो. बहादुर सिंह परमार कृत 'बुंदेली संस्कार गीत' तथा शरद सिंह कृत 'सांची कह रहे सुनो सुनो रामधई' किताबों का विमोचन मान्यनीय अतिथियों द्वारा किया गया. स्वागत वकतव्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने दिया. धन्यवाद ज्ञापन प्रो.राजेन्द्र यादव द्वारा किया गया.

सत्र संचालन डॉ.हिमांशु कुमार द्वारा किया गया. विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति रही तथा शहर के गणमान्य नागरिकों सहित शोधार्थी विद्यार्थियी उपस्थित रहे.

प्रथम सत्र में प्रो.चंदा बैन ने अध्यक्षता की. उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी रांगेय राघव के साहित्यक योगदान को पुनर्जीवित करने का कार्य करेगी. छतरपुर विश्वविद्यालय के प्रो. बहादुर सिंह परमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे. जिसमें उन्होंने रांगेय राघव के साहित्यिक योगदान को याद करते हुए कहा कि यह यह संगोष्ठी रांगेय राघव के साहित्य को जनचर्चा का माध्यम बनाने में सफल होगी. इसके साथ ही बुंदेलखंड के प्रसिद्ध साहित्यकार वृंदीवनलाल वर्मा के

साहित्यिक योगदान को स्मरण किया. सत्र की प्रथम वक्ता डॉ.सुजाता मिश्र ने अनुवाद साहित्य पर अपनी बात रखी तथा अनुवाद साहित्य की महत्ता को दर्शाते हुए अपने वक्तव्य का प्रारम्भ किया जिसमें उन्होंने कहा कि "जब कोई साहित्यकार किसी अन्य भाषा के साहित्य का अनुवाद करता है तो वह सच्चे अर्थो में साहित्य की सेवा करता है. इस तरह रांगेय राघव के भाषाई विविविधता को लक्ष्य कर उनके अनुदित साहित्य पर अपनी बात रखी. सत्र में डॉ. संजय नाईनवाड़ ने रांगेय राघव कृत रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' के पाठ्य पर अपना वकतव्य प्रस्तुत

किया, प्रतिष्ठित साहित्यकार शरद सिंह ने चर्चा को आगे बढ़ाते हुए रिपोर्ताज की रूपरेखा पर अपनी बात रखी तथा रांगेय राघव के के साहित्य पक्ष को श्रोताओं के साथ साझा किया. इसी दौरान उपस्थित अतिथियों द्वारा प्रो.बहादुर सिंह परमार द्वारा संपादित वार्षिक पत्रिका 'बुंदेली बसंत' के अंक 23, 2025 का विमोचन किया गया. धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ शोधार्थी गोविंद सिंह द्वारा किया गया, सत्र संचालन डॉ. अरविंद कुमार द्वारा किया गया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति रही, शहर के गणमान्य नागरिकों सहित शोधार्थी, विद्यार्थी उपस्थित रहे.

‘पाकिटमार रंगमंडल’ की प्रस्तुति से हुआ प्रथम सागर रंग महोत्सव का आगाज़

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थियेटर ग्रुप, सागर के संयुक्त तत्त्वावधान में आठ दिवसीय ‘प्रथम सागर रंग महोत्सव 2025’ का उद्घाटन विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग में किया गया. कार्यक्रम उद्घाटन सत्र का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीपप्रज्वलन किया गया. उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाय एस ठाकुर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की. विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. डी. के. नेमा, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नवीन कानगो एवं वरिष्ठ पत्रकार सूर्यकांत पाठक उपस्थित रहे. सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक एवं आयोजन सचिव डॉ. राकेश सोनी ने स्वागत भाषण एवं आठ दिनों तक चलने वाले कार्यक्रम सागर रंग महोत्सव 2025 के बारे में विस्तृत जानकरी दी.

विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाय एस ठाकुर ने विश्व रंगमंच दिवस की बधाई देते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अभिनय का बड़ा महत्त्व है. बल्कि यह भी कह सकते हैं मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन ही अभिनय है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में आयोजित यह महोत्सव रंगमंच के क्षेत्र में कई कलाकारों को मंच प्रदान करेगा. रंगमंच व्यक्तित्व का निर्माण करता है जिससे व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने आत्मबल को मजबूत बनाता है. यह व्यक्तित्व को निखारता है. साहस देता है. सांगठनिक रूप से कार्य करने की प्रेरणा देता है. उपस्थित सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं और अगले आठ दिनों तक चलने वाले महोत्सव को जोश और कर्मठता के साथ आयोजन को सफल बनाने के शुभकामनाएं दीं.

गौरतलब है कि 27 मार्च से 3 अप्रैल तक यह महोत्सव आयोजित किया जा रहा है. प्रत्येक दिवस एक नाटक का मंचन होगा. इसी क्रम में प्रथम दिन असगर वजाहत द्वारा लिखित 'पाकिटमार रंगमंडल' की प्रस्तुति हुई. यह एक अनूठा नाटक है, जो पूर्व जेबकतरों और असामान्य पृष्ठभूमि से आए कलाकारों की संघर्षपूर्ण यात्रा को दर्शाता है. ऐसे कलाकारों का

एक ही मकसद है, रंगमंच को जिंदा रखना, लेकिन समाज उनकी पिछली पहचान को भूलने को तैयार नहीं. पाकेटमार रंगमंडल नाम सुनकर ही लोग उन पर शक करते हैं. उन्हें मंच, दर्शक और पहचान पाने के लिए लगातार संघर्ष कर करना पड़ता है. इस पूरे संघर्ष का केंद्र है भगवान पाकिटमार रंगमंडल का निर्देशक, जो सबसे ज्यादा तकलीफें सहता है लेकिन कभी हार नहीं मानता. उसके जुनून और समर्पण के कारण ही यह रंगमंडल आज तक जीवित है. कहानी शुरू से अंत तक इन्हीं उतार-चढ़ावों के साथ चलती है. जहां यह ग्रुप हर कदम पर नई मुश्किलों से जूझता है, लेकिन रंगमंच के प्रति अपने समर्पण को कभी कम नहीं होने देता. यह नाटक हंसी, संघर्ष और समाज के पूर्वाग्रहों के बीच एक गहरी सच्चाई को उजागर करता है. कि बदलाव आसान नहीं होता, लेकिन यदि जुनून सच्चा हो तो रास्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं. आठ दिनों तक चलने वाले इस सागर रंग महोत्सव में नाट्य प्रस्तुति के साथ ही रंग संगीत, नृत्य एवं कलाओं से सम्बंधित कार्यशालाएं, विचार-विमर्श इत्यादि का आयोजन भी किया जायेगा.

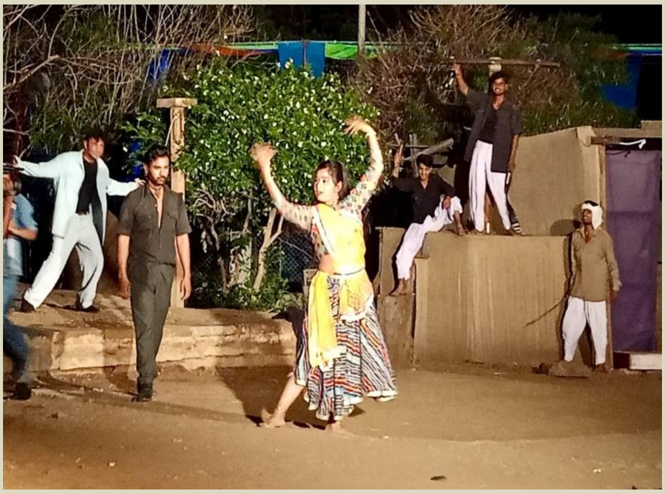

इस नाट्य प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाले कलाकारों में भगवान- विवेकानंद सोनी, मुन्ना त्यागी- आयुष पुराणी, वीरा- प्रियांश चौरसिया, लालू- संजू आठिया, इंस्पेक्टर- देवांश श्रीवास्तव, आबदा बेग़म- प्रिया गोस्वामी /रितिका सेन, नसरीन- संजना पटेल, सिपाही प्रिंस चौरसिया, आकाश श्रीवास्तव एवं महिमा प्यासी, मैनेजर- दीपेन्द्र लोधी, बबलू- राहुल चौरसिया, फिल्म सीन में विवेक सेन, शिवांक रजक, अर्चना बाघल, रिया यादव, वैशाली सेन, उर्वशी, मयंक सेन दामिनी साहू, वैष्णवी, बादल रैकवार, यश्विनी गौड़, राधिका साहू, हर्ष जैन, शुभम, नितिन, सोनाली, अखिलेश तिवारी, अर्पित दुबे, हिमानी, अप्रतिम मिश्रा, प्रवीण केम्या, सेजल, निधि कुमारी थे. मंच परिकल्पना में प्रियांश, संजू, अश्वनी, आयुष, प्रकाश परिकल्पना में आकाश विश्वकर्मा, वेशभूषा / मेकअप में सोनाली सेन, संगीत में आनंद अग्रवाल ने भूमिका निभाई.

कार्यक्रम का संचालन डॉ नीरज उपाध्याय ने किया एवं आभार डॉ. राकेश सोनी ने दिया.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय का राजभाषा निरीक्षण सम्पन्न

राजभाषा कार्यान्वयन की उत्कृष्ट स्थिति के लिए किए जा रहे प्रयासों की यूजीसी ने की सराहना

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक कामकाज में हिन्दी की प्रगति की निगरानी हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की उच्चस्तरीय समिति द्वारा विश्वविद्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण समिति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उच्च पदाधिकारीगण डॉ. मृगांक शेखर सर्मा, उप सचिव एवं डॉ. अमित कुमार वर्मा, शिक्षा अधिकारी उपस्थित रहे. समिति ने सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ के अधिकारी एवं कर्मचारियों के साथ बैठक कर राजभाषा कार्य की समीक्षा की तदुपरांत प्रशासनिक एवं नवीन प्रशासनिक भवन स्थित विभिन्न कार्यालयों/अनुभागों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का निरीक्षण किया। समिति ने विश्वविद्यालय परिसर स्थित मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र, भारतीय भाषा प्रकोष्ठ, सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ एवं जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय का भी दौरा किया तथा राजभाषा क्रियान्वयन की समीक्षा की.

समिति के सदस्यों के विशिष्ट आतिथ्य में माननीय प्रभारी कुलपति प्रो. वाय.एस. ठाकुर की अध्यक्षता में आयोजित विश्वविद्यालयी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 48वीं तिमाही बैठक में अपनी बात रखते हुए डॉ. मृगांक शेखर सर्मा ने कहा कि केन्द्रीय कार्यालय होने के नाते भारत सरकार की राजभाषा नीतियों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करना हम सभी का उत्तरदायित्व है। उन्होंने बताया कि राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नियम व नियत दोनों ही आवश्यक हैं। प्रेरणा, प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन की नीति का पालन करते हुए विश्वविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे नवाचार अनुकरणीय हैं जिनका अनुसरण देश के अन्य विश्वविद्यालय भी कर रहे हैं। यह हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के कुशल नेतृत्व में विश्वविद्यालय राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में अग्रसर है। वे विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित करती रहती हैं.

बैठक के दौरान डॉ. अमित कुमार वर्मा ने विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉक्टर हरीसिंह गौर को नमन करते हुए कहा कि डॉक्टर गौर का यह विश्वविद्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्र 'क' में स्थित है, इसलिए वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु शत-प्रतिशत मूल पत्राचार हिन्दी में किया जाना आवश्यक है. उन्होंने राजभाषा प्रकोष्ठ एवं विश्वविद्यालय के अन्य विभागों द्वारा किए जा रहे प्रकाशनों तथा विश्वविद्यालय में लागू 'राजभाषा पदक एवं पुरस्कार योजना की प्रशंसा की। विश्वविद्यालय की

वेबसाइट पर उपलब्ध सूचनाओं तथा दिव्यांगों के उपयोग हेतु वेबसाइट पर प्रदत्त सुविधाओं की भी खूब सराहना की। उन्होंने राजभाषा प्रकोष्ठ की सराहना करते हुए कहा कि सभी के समन्वित प्रयासों से राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों की पूर्ति किया जाना संभव है.

बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि राजभाषा हिन्दी का विकास तभी संभव है जब यह स्वत: स्फूर्त होकर हमारे दैनंदिन कार्यालयीन कामकाज का हिस्सा बन जाए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के मन एवं आत्मा में हिन्दी है। इसलिए हिन्दी में कार्य करते हुए हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिए.

समिति के समक्ष विश्वविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी (प्र.) श्री संतोष सोहगौरा ने कहा कि माननीया कुलपति महोदया के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय में न केवल राजभाषा हिन्दी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के विकास लिए भी उल्लेखनीय नवाचार किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय में 'भारतीय भाषा प्रकोष्ठ' एवं 'हिन्दी क्लब' का गठन इसके उदाहरण हैं। इसके माध्यम से विश्विवद्यालय में बहुभाषिकता को भी बढ़ावा दिया जा रहा है.

बैठक में माननीय अध्यक्ष महोदय, विशिष्ट अतिथियों एवं गणमान्य सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय ने बताया कि विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के समन्वित प्रयासों से राजभाषा का सफल क्रियान्वयन किया जा रहा है जिसकी बानगी विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रस्तुत प्रगति प्रतिवदेनों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है.

ध्यातव्य है कि उक्त अवसर पर माननीय प्रभारी कुलपति एवं यूजीसी, नई दिल्ली से पधारे सम्माननीय अतिथियों द्वारा 'राजभाषा प्रदर्शनी' का भी शुभारंभ किया गया। राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा लगायी गयी इस भव्य राजभाषा प्रदर्शनी में दस्तावेजों, प्रतिवेदनों एवं डिजिटल माध्यम से विश्वविद्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की प्रगति प्रदर्शित की गयी जिसे दर्शकों द्वारा भी सराहा गया.बैठक में प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी, प्रो. चंदा बैन, प्रो.वर्षा शर्मा, प्रो. डी.के.नेमा, प्रो. नेत्रपाल सिंह, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अनिल कुमार जैन, डॉ. श्वेता यादव, प्रो. आर.टी. बेद्रे, डॉ. मोहन टी.ए., डॉ. सुरेन्द्र पी. गादेवार, डॉ. अभिषेक कुमार जैन, श्रीमती ए.लक्ष्मी, श्री आंजनेय शुक्ला, श्री रूपेन्द्र कुमार चौरसिया, श्री सचिन सिंह गौतम, श्री राजकुमार पाल, श्री राहुल गिरी गोस्वामी, श्री ब्रजभूषण सिंह, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. विवेक जायसवाल सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न अध्ययनशालाओं के अधिष्ठातागण, निदेशकगण, प्रशासनिक अधिकारीगण एवं राजभाषा प्रकोष्ठ के कर्मचारीगण उपस्थित रहे। बैठक का संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। विशेष सहयोग श्री विनोद रजक का रहा.

सागर रंग महोत्सव के दूसरे दिन कलाकारों ने की 'मृगतृष्णा' की नाट्यप्रस्तुति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थियेटर ग्रुप, सागर के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग में चल रहे आठ दिवसीय 'प्रथम सागर रंग महोत्सव 2025' के दूसरे दिन अनुपम कुमार लिखित एवं डॉ. राकेश सोनी द्वारा निर्देशित 'मृगतृष्णा' की नाट्य प्रस्तुति हुई. 27 मार्च से 3 अप्रैल तक यह महोत्सव आयोजित किया जा रहा है. प्रत्येक दिवस एक नाटक का मंचन हो रहा है.

"मृगतृष्णा" एक महत्वपूर्ण नाटक है, जो समाज, धर्म और भौतिक लालसा के प्रभाव को गहराई से उजागर करता है. नाटक की कथा आर्थिक शक्ति, धार्मिक प्रभाव और हाशिए पर खड़े समुदायों, विशेषकर महिलाओं, के संघर्ष को केंद्र में रखती है. यह दर्शाता है कि किस प्रकार धन और सोने की असीम लालसा मानवीय मूल्यों और संबंधों को नष्ट कर देती है. इसकी प्रभावशाली कहानी और विचारोत्तेजक विषयवस्तु ने दर्शकों और समीक्षकों का ध्यान आकर्षित किया, जिससे यह समकालीन भारतीय रंगमंच में एक महत्वपूर्ण नाटक के रूप में स्थापित हुआ है.

इस नाट्य प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाले कलाकारों में करालक- अर्पित दुबे, देवसोम- आनंद अग्रवाल, मणिभद्र- शुभम पटेल, रत्नवल्लरी- रितिका सेन, चंद्रकेतु- अप्रितम मिश्रा, अनंग मेखला- सिमरन जैन, मदनाक्ष-प्रिंस चौरसिया, चारुकेसी- संजना पटेल, शौंडिक- अमन ठाकुर, सीवली-यश्विनी गौंड, सुप्रिया-पूर्वा लोधी, कुंडला-महिमा पयासी, शतवाहू-अखिलेश तिवारी, श्यामा-सोनाली सेन, चुल्ल श्रेष्टि-दीपेन्द्र लोधी, कृषबाहू-सागर ठाकुर, श्रवतोदर-मयंक सेन/सिन्धांत चौरसिया, चोर- देव वृष अहिरवार, अन्य – मयंक सेन उमेश पटेल शुभांक रजक अर्चना सिन्धांत चौरसिया थे.

मंच परिकल्पना में आनंद अग्रवाल, मंच निर्माण में संजय कोरी, अर्पित दुबे,दीपेन्द्र लोधी,अमन ठाकुर, सागर ठाकुर, अखिलेश देव वृष सुदीप नेमा, नितिन गौंड़,राहुल चौरसिया, कृष्णा देवलिया, अश्वनी साहू, प्रकाश परिकल्पना में संजय कोरी,विवेकानंद सोनी, संजू आठिया, वेशभूषा/मेकअप में सिमरन सेन,रितिका सेन, संगीत में आयुष पुराणी ने भूमिका निभाई.

समाज के वरिष्ठ नागरिक अनुभव एवं ज्ञान के अनमोल खजाने हैं, इनका प्रेमपूर्वक ख्याल रखें- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर के कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल, विशिष्ट अतिथि डीएवी

विश्वविद्यालय जालंधर की पूर्व कुलसचिव डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज एवं पूर्व सागर सांसद डॉ. लक्ष्मीनारायण यादव थे. अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. स्वागत उद्बोधन कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद भारद्वाज ने दिया. कार्यक्रम का परिचय एवं रूप रेखा डॉ. शिवानी मीणा ने प्रस्तुत किया.

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि समाज के वरिष्ठ नागरिक अनुभव एवं ज्ञान का खजाना होते हैं. उनके अनुभव एवं ज्ञान से नई पीढ़ी सीख सकती है. भारत इस मायने में समृद्ध रहा है कि आज भी यहाँ संयुक्त परिवार हैं. भारतीय समाज में वृद्धजन के प्रति सम्मान भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है. आज एकल परिवार का चलन बढ़ा है लेकिन हमें हमारी युवा पीढ़ी को इस बात के प्रेरित करना चाहिए कि वे अपने-माता पिता और घर के वरिष्ठ सदस्यों का प्रेम पूर्वक ख्याल रखें. ऐसे कई उदाहरण आज भी हमारे समाज में हैं जहाँ पुत्र अपने माता-पिता से अगाध स्नेह के साथ उनकी सेवा करते हैं और उनका पूरा ख्याल रखते हैं. हमें ऐसे उदाहरणों के साथ समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए. समाज में यह परिवर्तन लाना हम सभी का दायित्व है. वृद्ध जन और युवा के बीच की खाई को ख़त्म करना होगा. यह परस्पर संवादी वातावरण बनाने से संभव होगा.

मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है- प्रो. चक्रवाल

मुख्य अतिथि प्रो. आलोक चक्रवाल ने कहा कि हमें इतिहास से सीखना चाहिए. श्रवण कुमार जैसे उदाहरण हमारे समाज में प्रेरणा स्रोत हैं. उन्होंने महान संत गुरु घासीदास का उल्लेख करते हुए कहा कि मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है. आज का युवा विदेशों की तरफ आकर्षित हो रहा है और अपने माता-पिता के सान्निध्य से वंचित होता जा रहा है. समाज में कई ऐसी घटनाएं देखने-सुनने में आती हैं जहाँ माता-पिता की स्थिति दयनीय हो जाती है लेकिन यह स्थिति बदल सकती है. समाज में सकारात्मक सोच के कार्य करने और वृद्ध जनों के लिए सांस्थानिक भागीदारी निभाते हुए शैक्षणिक

संस्थानों की भूमिका इसमें महत्त्वपूर्ण है. उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि हमें दीर्घकालिक बदलाव के लिए धीरे- धीरे छोटे-छोटे प्रयोग करते हुए धैर्य पूर्वक इस मानवतावादी कार्यक्रम और सन्देश का प्रसारण आम जनमानस में करना है.

आज के युवाओं को वृद्धों से संवाद करना चाहिए- डॉ. लक्ष्मी नारायण यादव

सारस्वत अतिथि सागर के पूर्व सांसद डॉ. लक्ष्मी नारायण यादव ने कहा कि वरिष्ठ एवं वृद्ध जनों पर आयोजित कार्यक्रमों हेतु कई बार विदेशों में मेरा जाना हुआ है. दुनिया के कई देशों में वृद्ध जनसँख्या एक समस्या के रूप में देखा जाता है. विदेशों की अपेक्षा भारत में आज भी वृद्धजनों की स्थिति काफी अच्छी है. उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को वृद्धों से संवाद करना चाहिए. उनसे सीखने की कोशिश करनी चाहिए. उनसे ली गई सीख और उनकी समाज में सक्रिय भागीदारी देश को स्थायी दिशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण साबित होगा.

वरिष्ठ जनों को गरिमामयी जीवन प्रदान करना सामूहिक जिम्मेदारी- डॉ. भारद्वाज

सारस्वत अतिथि डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने कहा कि छोटी-छोटी इकाइयों से समाज बनता है. समाज से राष्ट्र बनता है. समाज के वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव राष्ट्र निर्माण की गति को तीव्र करने में महती भूमिका निभा सकते हैं, इसलिए उनकी गरिमामयी तरीके से देखभाल और सम्मानजनक जीवन प्रदान करना हम सभी सामूहिक जिम्मेदारी है. समाज को संवेदनशील बनाते हुए बुजुर्गों के साथ हो रहे अपमान, उनके प्रति लापरवाही, शारीरिक चोट, उन्हें बोझ समझा जाना जैसी प्रवृत्तियों को रोकने की आवश्यकता है. वरिष्ठ नागरिक समाज में कैसे अपनी भूमिका निभाएं इस पर मंथन करने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि वृद्धावस्था एक नैसर्गिक प्रक्रिया है जो सभी के जीवन में आता है इसलिए इस अवस्था को इस रूप में न समझा जाए कि यह किसी के लिए बोझ लगे. उन्होंने कहा कि सकारात्मक सोच, सकारात्मक कार्य और सकारात्मक बने रहने की सबसे ज्यादा जरूरत है. राष्ट्र के निर्माण में वृद्धजनों की भी आवश्यकता है. बिना उनके राष्ट्र निर्माण अधूरा है. उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी अपेक्षाओं का बोझ लेकर जीवन न जियें. दूसरों पर कम से कम निर्भर रहें. स्वयं के लिए आर्थिक बचत के प्रति सचेत रहें. सृजनशील बनें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें, सकारात्मक सोच रखें आपका जीवन हमेशा सुखमय बना रहेगा.

विश्वविद्यालय में स्थापित होगा वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ, कुलपति ने की औपचारिक घोषणा

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान औपचारिक घोषणा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ स्थापित किया जाएगा. इसमें सभी वरिष्ठ नागरिकों के लिए समय-समय पर विभिन्न गतिविधियाँ, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, व्याख्यान एवं उनकी आवश्यकता अनुरूप अन्य गतिविधियों का भी आयोजन किया जाएगा. उन्होंने सभी वरिष्ठ नागरिकों से अपील की कि आप में से बहुत से लोग विश्वविद्यालय के छात्र भी रहे होंगे, आपके बच्चों ने भी यहाँ से पढ़ाई की होगी. एक बार फिर आप सभी विश्वविद्यालय से वरिष्ठ नागरिक होने के नाते जुड़िये और हमारे विद्यार्थियों के बीच आकर अपने अनुभवों से उन्हें भी लाभान्वित करें. विश्वविद्यालय भी वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य, विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग करेगा. उन्होंने कहा कि इस संवादपरक वातावरण से घर से दूर रह रहे विद्यार्थियों को स्थानीय संरक्षक मिलेंगे और जिन वरिष्ठ नागरिकों के बच्चे बाहर रहते हैं उनको छात्रों के रूप में उनको अपने बच्चों से दूरी का एहसास नहीं होगा.

150 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों ने कराया निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण

कार्यक्रम में सागर शहर एवं आस-पास के 150 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों ने अपना निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कराया और चिकित्सकों से परामर्श लिया. डॉ. अभिषेक जैन, डॉ. किरण माहेश्वरी एवं डॉ. भूपेंद्र पटेल के निर्देशन में सभी वरिष्ठ नागरिकों का स्वास्थ्य परीक्षण हुआ. परीक्षण में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा आँखों की जाँच, ब्लड प्रेशर, शुगर, ईसीजी, बीएमडी (हड्डी की जांच) सहित अन्य सामान्य परीक्षण किया गया.

इस सम्मेलन में वृद्धावस्था देखभाल एवं उनकी सामाजिक भावनात्मक सुरक्षा, खानपान संबंधी व्यवहार, योग एवं ध्यान, शुरुआती स्वास्थ्य संबंधी देखभाल एवं सलाह, वरिष्ठ नागरिकों के अनुभवों को युवा पीढ़ी से जोड़ने, उनके एकाकीपन को दूर करते हुए समाज में उनकी सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए 30 मार्च को भी कई सत्रों में आयोजन किया गया है.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. हेमंत पाटीदार ने किया. आभार ज्ञापन डॉ. ऋतु यादव ने किया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारयों सहित सागर शहर एवं आस-पास के गाँवों के वरिष्ठ नागरिकों ने इस आयोजन में अपनी सहभागिता की.

योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बने- योग गुरु विष्णु आर्य

वृद्धजन समाज की अमूल्य संपदा हैं- प्रो. एस पी व्यास

वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय सामुदायिक भागीदारी की दिशा में अनूठी पहल- प्रो. अर्चना पाण्डेय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन के दूसरे दिन कई सत्रों का आयोजन किया गया.

प्रथम सत्र में योग गुरु विष्णु आर्य ने विस्तार से योग शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता को बताया. आज की बदलती

दिनचर्या, खानपान और मोबाइल के अति प्रयोग ने युवा, प्रौढ़ और वृद्ध जनों सभी में स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बताया. उन्होंने कहा कि आज के समय में योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा होना चाहिए. डॉ. ज्ञानेश तिवारी ने मानसिक स्वास्थ्य में आ रही गिरावट के साथ ही उससे निपटने का उपाय बताया. मनोविज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने मानसिक स्वास्थ्य परामर्श शिविर भी लगाया. डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने सकारात्मक सोच के माध्यम से जीवन में सकारात्मकता लाने पर बल दिया. उन्होंने कहा कि उम्र महज एक अंक है. हम खान पान में बदलाव लाकर अपने स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं.

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि वृद्धजनों को संगठित होकर न केवल अपनी समस्याओं का समाधान खोजना चाहिए बल्कि अपने अनुभवों और उपस्थिति से परिवार, समाज और राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए नई पीढ़ी को मार्गदर्शित भी करना चाहिए. विवि के संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि मनोबल को हमेशा ऊंचा बनाये रखें. उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को संस्कारवान बनाएं. उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित सरकार की कई योजनाओं की, अधिनियमों की, मेटिनेन्स, चिकित्सा इत्यादि के बारे में अवगत कराया.

पेंशनर्स एशोसिएशन के जिला प्रमुख हरिओम पाण्डेय ने कहा कि वरिष्ठ जनों का एक संगठन आवश्यक है. सरकार से हम अपनी अपेक्षाएं रख सकते हैं. हम अपने लिए अपनी बात सरकार से कह सकते हैं. हम आपस में चर्चा, विमर्श, सहयोग से अपना मानसिक और शारीरिक सम्बल बनाये रख सकते हैं.

सामजिक न्याय विभाग के संयुक्त संचालक डॉ. धनसिंह यादव ने कहा कि विकसित भारत के लिए मन को विकसित करना जरूरी है. वरिष्ठ नागरिक ज्ञान के भंडार हैं. उन्होंने कहा कि युवा और वरिष्ठों के बीच संवाद की कमी है. उन्होंने कई केस स्टडी उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए समाज केलिए किये जा रहे सरकारी प्रयासों की जानकारी दी ताकि वृद्ध गरिमापूर्ण जीवन जी सकें. उन्होंने चिकित्सा, वृद्ध आश्रम सहित टोल फ्री नंबर इत्यादि के बारे में जानकारी दी.

एडवोकेट वीनू राणा ने वृद्ध जनों से संबंधित कई कानूनी पहलूओं पर चर्चा की. उन्होंने कहा कि क़ानून की जरूरत तब पड़ती है जब लोग ईमानदारी से कार्य नहीं करते. जीवन में ईमानदार होना सबसे जरूरी है. उन्होंने लोक अदालत सहित घर से बेदखली से संबंधित कानून इत्यादि के बारे में क़ानूनी जागरूकता की जानकारी दी.

अध्यक्षता करते हुए अपर जिला मजिस्ट्रेट रुपेश उपाध्याय ने कहा कि समाज में वरिष्ठ जनों को लेकर जो व्याप्त स्थिति है उसको दूर करने के प्रयास करने चाहिए. समाज के बिखरे ताने बाने को संजीदा बनाते हुए सामजिक बनावट को नये तरीके से गढ़ने की आवश्यकता है. उन्होंने वरिष्ठ जनों के लिए कई सरकारी प्रयासों की जानकारी दी और सागर में आगामी समय में नई पहल किये जाने की पहल के सम्बन्ध में चर्चा की.

समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एस. पी. व्यास, विशिष्ट अतिथि डीएवी विश्वविद्यालय जालंधर की पूर्व कुलसचिव डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज एवं अध्यक्षता विश्वविद्यालय की सेवानिवृत प्रो. अर्चना पांडे ने की. स्वागत उद्बोधन कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद भारद्वाज ने दिया. दो दिन तक चले इस सम्मेलन का प्रतिवेदन डॉ ऋतु यादव ने प्रस्तुत किया. प्रतिभागियों द्वारा फीडबैक भी प्रस्तुत किया गया.

प्रो. एस पी व्यास ने कहा कि मनुष्य क्या है, इसे हम सबको समझने की आवश्यकता है. हमें अपनी आवश्यकताओं को पहचानना है. उन्होंने विज्ञान के माध्यम से जीवन जीने की शैली को समझाया. उन्होंने कहा कि हम इतने बड़े समाज के हिस्से होकर खुद को अलग और अकेला क्यों समझते हैं. हमें अपनों के साथ जीना है और प्रासंगिक बने रहना है. उन्होंने कहा कि वृद्धवस्था के साथ गुणों को ग्राह्य करना चाहिए और अवगुणों का त्याग करना चाहिए. उन्होंने कहा कि वृद्धजन अनुभव की सम्पदा हैं. उन्होंने कहा कि मनुष्य विचारों के दर्शन के साथ जीता है. यही मनुष्य का धर्म है. डॉ. रेखा भारद्वाज ने कहा कि परोपकारी बनें, आशावादी रहे, अपना ख्याल रखें, वर्तमान में जियें और अपने दुखों और परेशानियों से संघर्ष करना सीखें. सामुदायिक भागीदारी से खुद को सक्रिय बनाये रखें.

प्रो. अर्चना पांडेय ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने अकादमिक सरोकारों के साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन की दिशा में भी एक नई शुरुआत की है जिसके अंतर्गत समाज के वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल एवं चिंताओं को शामिल किया जा रहा है. विश्वविद्यालय में स्थापित होने वाला वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ इस दिशा में एक अनूठी पहल है.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. राज बहादुर अनुरागी ने किया. आभार ज्ञापन डॉ. संजय शर्मा ने किया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारियों सहित सागर शहर एवं आस-पास के गाँवों के वरिष्ठ नागरिकों ने इस आयोजन में अपनी सहभागिता की.

शोधार्थी साक्षी गौतम को मप्र युवा वैज्ञानिक सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार, मनोहर चौधरी को युवा वैज्ञानिक फेलोशिप

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग की शोध छात्रा सुश्री साक्षी गौतम को एम.पी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 का प्रथम पुरस्कार मिला है. विक्रमोत्सव के अंतर्गत 27 से 29 मार्च तक राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, विज्ञान उत्सव और 40वां मध्यप्रदेश युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया. इस सम्मेलन में इस युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में साक्षी गौतम को उनके शोध पत्र "द्विघात स्थिरता फ़ंक्शन के साथ नॉर्डसीक जनरल रैखिक विधि के नए वर्ग" के उत्कृष्ट मौखिक वाचन के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 के लिए गणित विषय में प्रथम पुरुस्कार के लिए चयनित किया गया. साक्षी गौतम वर्तमान में गणित विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. आर के पांडेय के निर्देशन में कठोर अवकल समीकरण के लिए विभिन्न न्यूमेरिकल मेथड के निर्माण विषय पर शोध कर रही हैं. इस कांग्रेस में पूरे मध्य प्रदेश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रतिभागियों ने सहभागिता की थी. इस पुरुस्कार स्वरुप साक्षी गौतम को 25000 रुपये एवं प्रशस्ति पत्र, मुख्य अथिति डॉ. अनिल कोठारी महानिदेशक, म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद एवं प्रो अर्पण भारद्वाज, कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया.

इसी सम्मेलन में गणित विभाग के ही शोधार्थी मनोहर चौधरी को उनके शोध पत्र के लिए, प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा युवा वैज्ञानिक फैलोशिप भी प्रदान की गई. साक्षी और मनोहर की इस उपलब्धि पर गणित विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो आर के गंगेले ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह उपलब्धि गणित विभाग के शोधार्थियों के लिए प्रेरणा का संचार करेगी. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शोधार्थियों की इस उपलब्धि पर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की.

................................//..............................

गौर पीठ समन्वय सामिति की हुई संयुक्त बैठक

डॉ. गौर को स्मृति में रखने सभी सहयोग करें

पत्रिका न्यूज नेटवर्क patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में स्थापित गौर पीठ के दानदाताओं एवं गौर पीठ समन्वय समिति की एक संयुक्त बैठक गौर समिति कक्ष में आयोजित हुई। इस अवसर पर पूर्व सांसद डॉ. लक्ष्मीनारायण यादव ने कहा कि डॉ. गौर ने अपने स्वयं के प्रयास और ...

स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रत्येक सक्षम नागरिक जो डॉ. गौर को भारत रत्न ...

और कई सुझाव दिए।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर के संकल्पों को पूरा करने और उनको ...

गौर पीठ समन्वय समिति की बैठक में चर्चा

नवभारत न्यूज

सागर 28 फरवरी. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में स्थापित गौर पीठ के दानदाताओं एवं गौर पीठ समन्वय समिति की बैठक ... नीलिमा गुप्ता की ... गौर समिति कक्ष में की गई।

पूर्व सांसद डॉ. लक्ष्मीनारायण यादव ने कहा कि डॉ. गौर ने अपने स्वयं के प्रयास और राशि से इस विश्वविद्यालय की स्थापना की. उनके नाम पर स्थापित पीठ के ...

मध्यप्रदेश | टीकमगढ़, मंगलवार 04 मार्च, 2025 | 10

सांस्कृतिक वैविध्य से सराबोर रहा वसंतोत्सव हॉस्टल

वसंतोत्सव में छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। ...

विश्वविद्यालयः चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम हेतु उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

दैनिक प्रदेश वॉच सागर। सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम विस्तार के आलोक में स्नातक अंतिम सेमेस्टर के विद्यार्थियों हेतु उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में किया गया. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विद्यार्थियों को संबोधित ...

में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन से सभी ...

विश्वविद्यालयः हॉस्टल डे 'बसंतोत्सव' में छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तु...

सांस्कृतिक वैविध्य से सराबोर रहा बसंतोत्...

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के स्वर्ण जयंती सभागार ...

भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रतिबिंब है: डॉ. आशुतोष

विश्वविद्यालय में मीडिया की भाषा विषय पर व्याख्यान

दै.जनविधारी - गजेन्द्र ठाकुर

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में मीडिया संवाद श्रृंखला के अंतर्गत मीडिया की भाषा विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्य व पत्रकारिता के अद्भुत समन्वय व उसकी भूमिका पर बात करते हुए साहित्य की सृजनशीलता व उसकी रचनात्मकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम सहायक प्राध्यापक डॉ. विवेक जायसवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. अलीम अहमद खान ने मीडिया तथा जनमाध्यमों की भाषा व क्षेत्रीय भाषा की विविधता तथा उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला।

विशेष अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. आशुतोष ने ...

विवेकपूर्ण ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि भाषा अब न केवल एक संप्रेषण का माध्यम भर रही गई है अपितु अब ये हमारी सांस्कृतिक प्रतिमान के रूप में भी विद्यमान है। भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रतिबिंब है और यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का निर्माण भी करती है. यह मनुष्य की सृजनशीलता और व्यक्तित्व का भी परिचायक है।

उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में भाषा का सुचिंतित प्रयोग बहुत आवश्यक है क्योंकि ...

महत्ता पर भी प्रकाश डाला। मीडिया में भाषा का मूल रूप से सही होने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए एक संपादक के तौर पर अपने अनुभवों को साझा किया कि भाषा की चुनौतियाँ किस प्रकार की होती है. उन्होंने वर्तमान में समाचार पत्रों में हो रहे भाषा के उपयोग को लेकर भी चर्चा की. व्याख्यान के पश्चात विभाग के छात्रों ने पत्रकारिता में भाषा संबंधी अपने अपने प्रश्न रखे जिनका उन्होंने समाधान भी किया।

कार्यक्रम में डॉ. रजनीश, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. राकेश सोनी, समाज शास्त्र एवं पत्रकारिता विभाग ...

विश्वविद्यालयः कैंसर जागरूकता शिविर का आयोजन

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हेल्थकेयर और अस्पताल प्रबंधन एम.बी.ए के छात्रों द्वारा कवि पद्माकर सभागार, मोतीनगर सागर में कैंसर जागरूकता एवं रोकथाम शिविर में योगदान दिया गया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य कैंसर की रोकथाम, प्रारंभिक पहचान और मध्यप्रदेश में उपचार दिशा-निर्देशों पर जागरूकता बढ़ाना था. शिविर के मुख्य अतिथि शैलेन्द्र जैन, सागर विधायक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ममता तिमोरे, डॉ. संतोष राय, डॉ. प्रशांत जैन, डॉ. विजय कोन्तम, डॉ. मनीष राय, डॉ. राजेश पटेल, डॉ. अनुराधा महेश्वर एवं आकाश बजाज ने विभिन्न विषयों पर कैंसर संबंधी व्याख्यान दिए. डॉ. प्रेरणा जैन के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया. इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. वाई.एस ठाकुर ने छात्रों को शुभकामनाएं दीं।

मीडिया की भाषा विषय पर व्याख्यान

भाषा हमारी सांस्कृतिक चेतना व व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है

पत्रिका न्यूज नेटवर्क patrika.com

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में मीडिया संवाद श्रृंखला के अंतर्गत 'मीडिया की भाषा' विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया. विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने साहित्य की सृजनशीलता व उसकी रचनात्मकता पर प्रकाश डाला. दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. आशुतोष ने कहा कि वर्तमान समय में मीडिया का काम न केवल सूचना देना है बल्कि समाज को शिक्षित करने की जिम्मेदारी भी मीडिया की है। उन्होंने ध्वनि और भाषा में अंतर बताते हुए कहा कि भाषा हमारे व्यक्तित्व का ...

आईना है। एक कुशल पत्रकार से कम शब्दों में सूचना का ... प्रदान करते हुए अपने अपने ... को एक आलोचनात्मक विवेकपूर्ण ढंग से सोचने ... प्रेरित करता है। उन्होंने ... भाषा अब न केवल एक ... माध्यम भर रह गई है ... हमारी सांस्कृतिक प्रतिमान ... भी विद्यमान है। डॉ. अलीम ... खान ने मीडिया तथा जन ... भाषा व क्षेत्रीय भाषा की ... तथा उसकी महत्ता पर प्र... कार्यक्रम सहायक ... विवेक जायसवाल ने ... इस मौके पर डॉ. रजनी... सिंह एवं डॉ. राकेश ... रहे। कार्यक्रम का सं... दिलीप चौरसिया ने किया। ... अनुष्का तिवारी ने माना।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है: डॉ. अग्रवाल

एआई में नवाचार और भविष्य के करियर पर विशेष व्याख्यान आयोजित

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग द्वारा व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत एआई नवाचार और भविष्य के करियर पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. मुदित अग्रवाल, वरिष्ठ अनुप्रयुक्त विज्ञान प्रबंधक, अमेजन रोबोटिक्स, यूएसए थे। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. मुदित अग्रवाल और कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के प्रमुख डॉ. अभिषेक बंसल ने दीप प्रज्वलित कर किया। ...

विस्तार पर विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि AI केवल एक तकनीकी क्षेत्र नहीं है, बल्कि आधुनिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। ...

विषयों के छात्रों, संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं की उत्साही भागीदारी देखी गई। ...

...पाठ्यक्रम के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

...में आगे के अध्ययन एवं शोध के लिए योग्य होंगे विद्यार्थी'

...धित करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

...पालत किसी भी संस्थान में आगे के अध्ययन एवं शोध के लिए योग्य होंगे। चौथे वर्ष के पाठ्यक्रम के संचालन का उद्देश्य विद्यार्थियों को शोध के लिए तैयार करना और उन्हें निरंतरता में गहन एवं विशेषज्ञता आधारित अध्ययन के लिए प्रेरित करना है। कार्यक्रम में अकादमिक अफेयर्स के निदेशक प्रो. नवीन कानगो ने स्वागत वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन से सभी को अवगत कराया तथा नीति के निर्देश के आलोक में शामिल प्रत्येक आयामों जैसे कौशल आधारित पाठ्यक्रम, मूल्य आधारित पाठ्यक्रम, दक्षता आधारित पाठ्यक्रम आदि के बारे में बताया।

पाठ्यचर्या स्वरूप पर चर्चा

आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. अनिल कुमार जैन ने स्नातक चतुर्थ वर्ष की रूपरेखा से विद्यार्थियों को अवगत कराते हुए शोध संभावनाओं, विशेषज्ञता, वैश्विक परिदृश्य में चतुर्थ वर्ष के पाठ्यक्रम की महत्ता, क्रेडिट निर्धारण, पाठ्यचर्या का स्वरूप आदि पर चर्चा की। इस दौरान प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. चंदा बेन, प्रो. एपएल खान, प्रो. रणवीर कुमार, डा. ऋतु यादव, डा. रजनीश उपस्थित थे।

विश्वविद्यालयः 50 से अधिक राष्ट्री...

स्वदेशी ज्ञान और टिकाऊ सभ्... दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 8 और 9 को

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के मानवविज्ञान विभाग द्वारा 8-9 मार्च, 2025 को स्वदेशी ज्ञान और टिकाऊ समाज विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में और मानवविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. अजीत जायसवाल के नेतृत्व में आयोजित इस सम्मेलन की संयोजक डॉ. सोनिया कौशल और डॉ. विजया हैं। इस दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 50 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ ...

बताया कि यह सम्मेलन स्वदेशी ज्ञान के महत्व को उजागर करने और टिकाऊ विकास के लिए, इसके उपयोग पर चर्चा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। ...

देशों के विशेषज्ञ भाग लेंगे, जिससे स्वदेशी ज्ञान और टिकाऊ विकास पर वैश्विक दृष्टिकोण प्राप्त होगा। ...

मनुष्य के जीवन में कला की अहम् भूमिका

मनुष्य कला के माध्यम से ही दुनिया से परिचित होता है : कुलपति

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में कला एकीकृत शिक्षा एवं सृजनशील अधिगम विषय पर दो दिवसीय 'राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला' का उद्घाटन सत्र शिक्षाशास्त्र विभाग, आंतरिक गुणवत्ता प्रत्यायन प्रकोष्ठ और शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एनआईटीटीटीआर, भोपाल के निदेशक प्रो. चारु चन्द्र त्रिपाठी थे। कार्यक्रम में बीज वक्तव्य आरआईइ भोपाल से डॉ. सुरेश मकवाना ने दिया. कार्यक्रम में निदेशक और शिक्षा शास्त्र विभाग के अध्यक्ष और शैक्षिक ...

विवि में नवाचार व भविष्य के कॅरियर पर व्याख्यान का आयोजन

एआइ एक तकनीकी क्षेत्र नहीं, आधुनिक जीवन का भी अभिन्न अंग बन चुका है

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग ने एआइ नवाचार और भविष्य के करियर पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया। मुख्य वक्ता अनुप्रयुक्त विज्ञान प्रबंधक डॉ. मुदित अग्रवाल ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में प्रगति, विशेष रूप से मशीन लर्निंग, डीप ... कैसे मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को बदल रहे हैं और डेटा-संचालित नवाचारों के लिए नई संभावनाओं को खोल ... में विशेषज्ञता छात्रों के लिए आकर्षक कॅरियर के अवसर खोलेगी। कार्यक्रम में गणितीय एवं भौतिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. ...

आयोजन

विवि में वैदिक अध्यन विभाग में दो दिवसीय कार्यशालों में कई विशेषज्ञ हुए शामिल

भारत शब्द की व्याख्या के साथ गणित का महत्व बता...

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वैदिक अध्यन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में विशेषज्ञों ने वैदिक मैथामेटिक्स विषय में विस्तार से चर्चा की। इस दौरान कई विज्ञानियों ने प्रौद्योगिकी से जोड़कर विकास की अवधारणा को लेकर विचार रखें।

10 गुणोंतरी संख्या का वेदों की ...

वैदिक गणित से संबंधित अनेक अवधारणाओं को स्पष्ट किया। आनलाइन माध्यम से जुड़े डा. राकेश भाटिया ने गणित में प्रयुक्त वर्ग, वर्गमूल, घन एवं घनमूल जैसी संक्रिया को सरलता से हल करने की विधियों का उल्लेख किया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भारत की ज्ञान परंपरा को भविष्य की प्रत्याशा बताते हुए वैदिक ज्ञान को आधुनिक ज्ञान से जोड़ कर उसके महत्व को बताया।

वैदिक अध्ययन विभा... स्थापना का एक कद...

विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दि... शुक्ल ने स्वागत भाषण में वैदि... गणित की उपयोगिता एवं वैदिक... अध्ययन विभाग की प्रगति की जानकारी दी। गणित एवं भौतिक... विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजकुमार गंगेले ने वैदिक अध्यय... विभाग की स्थापना को एक महत्व...

मनुष्य के जीवन में कला की अहम् भूमिका क्योंकि जन्म के बाद मनुष्य कला के माध्यम से ही दुनिया से परिचित होता है - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता*

● **नवसिन्धु समाचार** डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में कला एकीकृत शिक्षा एवं सृजनशील अधिगम विषय पर दो दिवसीय 'राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला का उद्घाटन सत्र शिक्षाशास्त्र ... प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा वर्ली कला पर केंद्रित चित्रों को स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट किया गया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो ... भोपाल के बीच शैक्षणिक समझौते पर हुए हस्ताक्षर* कार्यक्रम में डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं एनआईटीटीटीआर, भोपाल के बीच ... कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। आभार ज्ञापन डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने किया। उद्घाटन सत्र में शिक्षाशास्त्र विभाग, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा (हरीयाणा) से प्रो राज कुमार, डॉ ...

एडवांसेज इन सिस्टम बायोलॉजी विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

भारत ने सबसे पहले कोविड वैक्सीन बनाक... पूरी दुनिया में अपनी शोध क्षमता संदेश दिया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज के तत्वावधान में एडवांसेज इन सिस्टम बायोलॉजी विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का आयोजन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में गुरुवार को किया गया। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन इस मायने में विशेष है क्योंकि इसमें सम्पूर्ण जीव विज्ञान के विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञ इसमें सहभागिता कर रहे हैं। उन्होंने विवि में उपलब्ध उन्नत अनुसंधान केन्द्रों का ...

उल्लेख करते हुए शोध में सहभागी होने और शोध साझेदारी के लिए देश-विदेश के वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि आज हमें आवश्यकता आधारित शोध करने की जरूरत है ताकि हम पूरे विश्व का मार्ग प्रशस्त कर सकें। भारत ने कोरोना के समय वैक्सीन का निर्माण और आपूर्ति कर पूरी दुनिया को अपनी दूरदृष्टि, शोध क्षमता ...

सम्मेलन के मुख्य अतिथि तमिलना... केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलप... पद्मश्री प्रो. एपी दास ने कहा कि पहले के जमाने में विज्ञान के कुछ ही क्षेत्र थे, लेकिन आज इसका दायरा बहुत ही व्यापक हो गया है। उन्होंने सभी परिवर्तनों और समस्याओं का कारण जलवायु परिवर्तन को बताते हुए कहा कि यह ऐसा कारण है जो प्रकृति की सभी चीजों को प्रभावित करता है। प्रो. दिनेश शर्मा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में जीव विज्ञान और इसके बहुत से क्षेत्रों से सम्मन ज्ञान विद्यमान है। सम्मेलन में 54 विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों से पंजीकृत 170 ...

देशबन्धु

विज्ञान की प्रासंगिकता और शोध की आवश्यकता पर हुआ मंथन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बायोलॉजी विषय
बायोलॉजिकल साइंसेज द्वारा एडवांसेज इन सिस्टम बायोलॉजी विषय
पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। उद्घाटन
सत्र में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने वैज्ञानिक अनुसंधान की महत्ता पर
प्रकाश डालते हुये कहा कि आज के समय में आवश्यकता आधारित
अनुसंधान अनिवार्य हो गया है। उन्होंने भारत की कोविड वैक्सीन निर्माण
क्षमता का उदाहरण देते हुये कहा कि भारत ने अपनी शोध क्षमता और
मानवीय मूल्यों से पूरी दुनिया को दिशा दिखाई है। सम्मेलन के मुख्य
अतिथि पद्मश्री प्रो. एपी दास ने विज्ञान को संपूर्ण मानव जाति के कल्याण
का माध्यम बताया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता क्षरण और
ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं को चिन्हित करते हुये विज्ञान के माध्यम
से इनके समाधान की आवश्यकता पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि प्रो.
डीके शर्मा ने भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान की गहरी जड़ों को रेखांकित
किया और प्राचीन ग्रंथों में वर्णित वैज्ञानिक विधियों पर नये शोध की
जरूरत बताई। वहीं प्रो. मोहम्मद आरिफने सिस्टम बायोलॉजी को समग्र
दृष्टिकोण से देखने की बात कही और शोधार्थियों को विज्ञान लेखन
और प्रस्तुतीकरण की बारीकियां सीखने का सुझाव दिया। सम्मेलन में
54 विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के 170 प्रतिभागियों और 56 बाहरी
... ने भाग लिया। 35 प्रतिभागियों ने मौखिक और 67 ने पोस्टर
... डॉ. वंदना विनायक ने किया और आभार
... इस अवसर पर विज्ञान संकाय के
... उपस्थित रहे।

...सली नईदुनिया सीहोरा-राहतगढ़ • गढ़ाकोटा • बांदरी • बरौदिया-मालथौन सागर, 7 मार्च 2025

स्पेन के जेन विश्वविद्यालय से हुई सार्थक चर्चा, अप्रैल से पाठ्यक्रम आरंभ करने की तैयारी

स्पेनिश भाषा में शुरू होगा आरंभिक पाठ्यक्रम, विद्यार्थी एवं शिक्षक अभिरुचि के अनुसार चुन सकेंगे पाठ्यक्रम

सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शीघ्र ही स्पेनिश भाषा की पढ़ाई प्रारम्भ होगी. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में स्पेन स्थित जेन विश्वविद्यालय से हुई ऑनलाइन बैठक में स्पेनिश भाषा के ऑनलाइन प्रारंभिक पाठ्यक्रम शुरू करने को लेकर सार्थक चर्चा हुई. इसमें दो तरह के पाठ्यक्रम होंगे जिन्हें विद्यार्थी अपनी आवश्यकता और सुविधानुसार चुन सकते हैं. शुरुआती तौर पर 30 घंटे और 60 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रमों को शुरू करने पर सहमती बनी है जिसे विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ और अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपियन भाषा विभाग के संयुक्त प्रयास से संचालित किया जाएगा. पाठ्यक्रम में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही प्रवेश ले सकेंगे. 30 घंटे शिक्षण अवधि वाले पाठ्यक्रम की फीस लगभग 20000 रुपये एवं 60 घंटे अवधि के पाठ्यक्रम का शुल्क लगभग 40000 रुपये होगा. शीघ्र ही पाठ्यक्रम चयन को लेकर एक अभिरुचि फॉर्म विश्वविद्यालय द्वारा जारी किया जाएगा जिसके आधार पर पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाएगा. सभी विवरण विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध कराये जायेंगे. बैठक में दोनों विश्वविद्यालयों का परिचय भी साझा किया गया.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में विश्वविद्यालय आगे बढ़े इसके लिए दुनिया की अनेक भाषाओं को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है. उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के साथ कई देशों के विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक साझेदारी पहले से है. कई अन्य देशों की संस्थाओं के साथ अकादमिक एवं शोध साझेदारी के प्रयास किये ... रहे हैं ताकि विदेशी विद्यार्थियों ... भी हम अपने विश्वविद्यालय ... अध्ययन के प्रति आकर्षित ... सकें। बैठक में इंटरनेशनल सेल ... प्रभारी डॉ. वी. रेड्डी, प्रो. बी. ... गुरु, प्रो. यू. के. पाटिल, प्रो. ... कानगो, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. ... सोनी, मीडिया अधिकारी डॉ. ... जायसवाल उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय गौर पीठ के लिए प्रो. कठल ने दी एक लाख की राशि

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत प्रो. पी. के. कठल ने विश्वविद्यालय की गौर पीठ को एक लाख रूपये की राशि प्रदान की है. उन्होंने चेक के माध्यम से यह राशि विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सौंपी. इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय डॉ. गौर के महान स्वप्नों को साकार करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है. गौर पीठ के माध्यम से प्रबुद्ध समाज और आम जनमानस से भी लगातार अपार सहयोग मिल रहा है. प्रो. कठल ने इस अवसर पर कहा कि डॉ. गौर द्वारा स्थापित इस महान संस्था का उनके जीवन में सबसे बड़ा योगदान है. मैं कृतज्ञ हूँ कि उनके द्वारा स्थापित शिक्षा के मंदिर में अध्ययन और अध्यापन का अवसर मिला. इस अवसर पर गौर पीठ के समन्वयक प्रो. नवीन कानगो उपस्थित थे. प्रो. कानगो ने बताया कि शीघ्र ही कुलपति की अध्यक्षता में गौर पीठ के समस्त दानदाताओं की एक बैठक आयोजित की जायेगी जिसमें गौर पीठ के उद्देश्यों को आगे बढाने हेतु दान से प्राप्त राशि के उपयोग पर चर्चा की जाएगीं।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ

भारतीय ज्ञान परम्परा में वैदिक गणित का महत्वपूर्ण स्थान: कुलपति

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वैदिक अध्ययन विभाग में वैदिक गणित पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में विश्वविद्यालय के भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व पर प्रकाश डाला. बाहर से पधारे विद्वान डॉ. कैलाश विश्वकर्मा ने अपने व्याख्यान में वैदिक गणित के सूत्रों को अत्यन्त सहज ढंग से समझाया तथा विद्यार्थियों हेतु इसकी उपयोगिता समझाई. द्वितीय सत्र में महाराष्ट्र से आये प्रख्यात् विद्वान श्रीराम चौथाइवाले ने वेदों में पायी जाने वाली गणित को स्त्रोत एवं संदर्भों सहित समझाया. तृतीय सत्र में दिल्ली से पधारी प्रो. अनुराधा गुप्ता ने वैदिक गणित का सांख्यिकी में महत्व को अनेक उदाहरणों के साथ समझाया. चतुर्थ सत्र में कानपुर के डॉ. राकेश भाटिया का वैदिक गणित पर ऑनलाइन व्याख्यान हुआ. उन्होंने गणितीय गणनाओं को त्वरित ढंग से कैसे किया जा सकता है इस पर प्रकाश डाला. इस वैदिक गणित की राष्ट्रीय कार्यशाला में 70 से अधिक प्रतिभागियों ने अपना पंजीयन कराया जिसमें 20 प्रतिभागी सात विभिन्न प्रदेशों से आनलाइन जुड़े थे. प्रथम दिवस में वैदिक गणित के विभिन्न आयामों पर ज्ञानवर्धन एवं गहन चर्चा हुई। इस कार्यशाला में देशभर के गणित प्रेमियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया. समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. श्रीराम चौथाईवाले रहे. उन्होंने अपने संबोधन में वैदिक गणित की उपयोगिता और

इसके व्यावहारिक महत्व पर जोर दिया उन्होंने कहा कि वैदिक गणित केवल एक प्राचीन पद्धति नहीं बल्कि वर्तमान में भी प्रासंगिक है. कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में प्रो. अनोखेलाल पाठक के द्वारा वैदिक गणितीय सूत्रों के जटिल विश्लेषण में अनुप्रयोग पर व्याख्यान दिया गया. उन्होंने वेदों और मनीषियों के ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय ग्रंथों में गणितीय अवधारणाएं निहित हैं. साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी-2020) की प्रस्तावना पर भी चर्चा की. इसमें भारतीय गणितीय परंपराओं की भूमिका को रेखांकित किया. द्वितीय सत्र में डॉ. श्रीराम चौथाईवाले ने सूत्र आधारित विधियों द्वारा दशमलव और पुनरावृत्ति भिन्नों का मूल्यांकन विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये. तृतीय सत्र में श्रीमति स्वेता परमार ने जन्म कुंडली के बारह भावों का विश्लेषण किया. चतुर्थ सत्र में डॉ. गजेंद्र प्रताप तथा आखिरी सत्र में प्रो. कैलाश विश्वकर्मा द्वारा व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम में वैदिक विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला, डीन (एसएमपीएस) एवं गणित विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आर. के. गंगेले, डॉ. आयुष गुप्ता, डॉ. शिवानी खरे एवं विभिन्न विभागों के व्याख्याता एवं शोधार्थी उपस्थित रहे एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गए. अंत में वैदिक अध्ययन विभाग की ओर से सभी अतिथियों, वक्ताओं और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया और इस प्रकार वैदिक गणित की राष्ट्रीय कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

नव स्वदेश ■ फाल्गुन शुक्ल 9 ■ संवत् 2081 सतना, शनिवार, 8 मार्च 2025 | 6

महिला दिवस पर विशेष...

शिक्षा के बगैर महिला सशक्तिकरण अधूरा

प्रो. नीलिमा गुप्ता

एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है। शिक्षा न केवल व्यक्तिगत जीवन को समृद्ध करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी सहायक है। आज आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने की तरफ भारत आगे बढ़ रहा है। शिक्षा को आत्मनिर्भरता की नींव कहा जा सकता है, क्योंकि जब किसी व्यक्ति या समाज को उचित शिक्षा मिलती है, तो वह न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सुधार करता है, बल्कि वह देश के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके लिए आवश्यक है कि देश के नागरिक उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करें और उसे अपने जीवन में सही ढंग से लागू करें।

आज कौशल विकास के कई अवसर युवाओं के सामने है जिससे वे न केवल रोजगार पा सकते हैं, बल्कि आत्मनिर्भर बनकर देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकते हैं। नई तकनीकों और नवाचारों का ज्ञान प्राप्त कर युवा भारत अपनी एक मजबूत और प्रतिस्पर्धात्मक ताकत बनने की क्षमता रखता है। शिक्षा नागरिकों को अधिकारों, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक तो करती ही है, साथ ही स्वास्थ्य, स्वच्छता जैसे महत्त्वपूर्ण आयामों के प्रति भी नागरिक बोध भी कराती है। यह समाज में जाति, वर्ग, जेंडर विभेद को दूर करने का एक माध्यम भी है ताकि सभी नागरिकों को राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होकर सेवा का सामान अवसर उपलब्ध हो सके। स्वावलंबन और नागरिक बोध से युक्त भारत की जनसंख्या न केवल उसकी शक्ति है बल्कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस महती संकल्पना को साकार करने में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए महिला शिक्षा के महत्त्व को समझना आवश्यक है। महिला शिक्षा और सशक्तिकरण एक दूसरे से गहरे से जुड़े हुए हैं, क्योंकि ...

प्रक्रिया केवल महिलाओं के व्यक्ति... बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रग... महत्वपूर्ण है। एक शिक्षित महि... आत्मनिर्भर बन सकती है, अपनी सा... करती कर सकती है तथा पूरे परिवा... प्रगति की दिशा में ले जा सकती है। ... होना और आर्थिक रूप से आत्मनि... समानता की मुख्य कुंजी है।

महिलाएं शिक्षा के माध्यम से न ... करती हैं बल्कि वे अपने परिवार की आ... योगदान करती हैं। इससे महिलाओं के ... बढ़ोत्तरी होती है और उनकी आर्थिक रूप ... होती है। आर्थिक सक्षमता महिलाओं में निर्ण... विकास करती है और यही स्थिति उन्हें समाज... स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण साबित होती है। ... और कर्तव्यों के बोध के साथ महिलाएं घर ... ही स्थानों पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम ...

शिक्षित और आत्मनिर्भर महिलाएं स्वयं औ... स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाए रखने में सक्षम ... पोषण, स्वच्छता और देखभाल के महत्व को बेह... हैं। उनकी यह काबिलियत न केवल उनकी बल्कि ... और समाज की जीवनशैली ...

और मानसिक सशक्तिकरण से भी जुड़ा हुआ है। यह जरूरी है कि महिलाओं को उनके अधिकारों और कर्तव्यों ... शिक्षा दी जाए, ताकि वे अपने जीवन ... महिलाओं को आर्थिक ... रोजगार ...

(लेखिका डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ...)

सुबह सवेरे A Daily News Magazine
08 Mar 2025 - Page 1
वर्ष 22, अंक 180, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण से ही देश आत्मनिर्भर

प्रसंगवश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

प्रो.नीलिमा गुप्ता

महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को उनके अधिकारों, अवसरों और विकल्पों में समर्थन दिया जाना चाहिए। ताकि वे समाज में आत्मनिर्भर, स्वतंत्र और समृद्ध जीवन जी सकें। यह उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानसिक सशक्तिकरण से भी जुड़ा है। यह जरूरी है कि ... उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में शिक्षा दी ... प्रक्रिया में शामिल किया ...

जिससे वे न केवल रोजगार पा सकते हैं, बल्कि आत्मनिर्भर बनकर देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दे सकते हैं। नई तकनीकों और नवाचारों का ज्ञान प्राप्त कर युवा भारत अपनी एक मजबूत और प्रतिस्पर्धात्मक ताकत बनने की क्षमता रखता है। शिक्षा नागरिकों को अधिकारों, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक तो करती ही है, साथ ही स्वास्थ्य, स्वच्छता जैसे महत्वपूर्ण आयामों के प्रति भी नागरिक बोध भी कराती है। यह समाज में जाति, वर्ग, जेंडर विभेद को दूर करने का एक माध्यम भी है ताकि सभी नागरिकों को राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होकर सेवा का सामान अवसर उपलब्ध हो सके। स्वावलंबन और नागरिक बोध से युक्त भारत की जनसंख्या न केवल उसकी शक्ति है बल्कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस महती संकल्पना को साकार में करने में महिलाओं की ...

महिलाएं शिक्षा के माध्यम से न केवल रोजगार प्राप्त करती हैं बल्कि वे अपने परिवार की आर्थिक सुदृढ़ीकरण में योगदान करती हैं। इससे महिलाओं के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होती है और उनकी आर्थिक रूप से निर्भरता समाप्त होती है। आर्थिक सक्षमता महिलाओं में निर्णय की क्षमता का विकास करती है और यही स्थिति उन्हें समाज में बराबरी का स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण साबित होती है। अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बोध के साथ महिलाएं घर और बाहर दोनों ही स्थानों पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। शिक्षित और आत्मनिर्भर महिलाएं स्वयं और परिवार के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाए रखने में सक्षम होती हैं। वे पोषण, स्वच्छता और देखभाल के महत्व को बेहतर समझती हैं। उनकी यह काबिलियत न केवल उनकी बल्कि पूरे परिवार और समाज की जीवनशैली में सुधार करती है और जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में मदद करती है। ...

आवाज बुलंद हो और वे नीतियों में परिवर्तन ला सकें।

महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर लड़की को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिले, खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में इसके लिए विद्यालयों में इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार और छात्रवृत्तियां प्रदान करना जरूरी है। समाज को भी यह समझने की आवश्यकता है कि महिलाओं का सशक्तिकरण केवल महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि समग्र समाज के विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए, समाज को भी अपनी मानसिकता में बदलाव लाने, भेदभाव को समाप्त कर महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करने की पहल करनी चाहिए। महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं की सुरक्षा भी अहम है। सरकार और समाज को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि महिलाएं बिना किसी डर के अपने अधिकारों का इस्तेमाल कर सकें। इसके लिए भारत सरकार द्वारा प्रभावी कानून और नीतियां भी लाई गई हैं।

(... हरीसिंह गौर केन्द्रीय ... कुलपति हैं)

विवि में जुटे 1960 से 2024 तक के विद्यार्थी, साझा किए विद्यार्थी जीवन के अनुभव

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के पुरा विद्यार्थियों का पहला समागम (एल्यूमिनी मीट) हुआ। आयोजन में 1960 से 2024 तक के विद्यार्थी एक छत के नीचे एकत्र हुए। पुरा विद्यार्थियों ने छात्र जीवन के अनुभव विद्यार्थियों से साझा किए। इस दौरान 1990 से 2024 तक के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दीं।

मुख्य अतिथि 70 के दशक में विभाग के विद्यार्थी नागपुर विश्वविद्यालय एवं मैरीटाइम यूनिवर्सिटी चेन्नई के पूर्व वाइस चांसलर रहे प्रो. जीएस पाराशर ने आज परंपरागत शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। जीव विज्ञान विभाग में सैरी कल्चर, फिशरीज जैसे विषय शुरू करने और विभाग को गांव-किसान से जोड़ने का आह्वान किया। साथ ही अपने गुरु और कीट विज्ञानी प्रो. आरएस सैनी की स्मृति को जीवंत बनाए रखने व्याख्यान माला शुरू करने का प्रस्ताव दिया।

1960 के दशक में विद्यार्थी रहे पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रो. डीपी गुप्ता ने अपने अनुभव साझा किए। कुलपति प्रतिनिधि प्रो. वायएस ठाकुर ने आगंतुकों से विश्वविद्यालय एल्युमिनी एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण करने का आव्हान किया। मीट की संयोजक प्रो. वर्षा शर्मा ने विभागीय इतिहास पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव ने विभागीय गतिविधियों का ब्यौरा दिया। सचिव डॉ. पायल महोबिया ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में 60 के दशक में विद्यार्थी प्रो. स्मिता बैनर्जी, 70 के दशक के विद्यार्थी प्रो. यूएस गुप्ता, 80 के दशक के विद्यार्थी पूर्व कुलपति प्रो जेडी आही, प्रो. सुबोध जैन ने भी संस्मरण साझा किए। संचालन मनीषा नाहर आभार शिखा दुबे ने माना।

प्रस्तुतियों में दिखी सांस्कृतिक विरासत : कार्यक्रम के दूसरे सत्र में 1990 से 2024 तक के विभागीय विद्यार्थियों ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। छात्रा आमया ने दक्षिण भारतीय, खुशी मीणा ने राजस्थानी नृत्य की प्रस्तुति दी। रघुवीर ने मिमिक्री और अदिति सराफ ने बॉलीवुड पर प्रस्तुति दी। अतिथियों एवं प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न, पौधा और वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। मीट में विभाग के दिवंगत प्रो. एचएन भार्गव, आरएस सैनी, आरके श्रीवास्तव, वीएस बैस, एचके सक्सेना, डीडी सोनी, बीके श्रीवास्तव, वायएन सहाय, एस सहाय को श्रद्धांजलि दी गई।

अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में विवि के स्नातक-स्नातकोत्तर के 10 विद्यार्थियों ने महिला अपराधों पर केंद्रित शोध-पत्र पढ़े

भास्कर संवाददाता | सागर

ट्रेंड्स इन क्राइम ऑगेंस्ट वूमन एंड चिल्ड्रंस इंटरवेंशन फॉर द चैंजिंग सोसायटी विषय पर केंद्रित 6वीं इंटरनेशनल एवं 44वीं नेशनल ऑल इंडिया क्रिमिनोलॉजी कांफ्रेंस यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास में हुई। इसमें इंडियन सोसायटी ऑफ क्रिमिनोलॉजी हेडक्वार्टर- मद्रास के त्रिवार्षिक चुनाव भी हुए। जिसमें डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के क्रिमिनोलॉजी एंड फॉरेंसिक साइंस विभाग के डॉ. ... सम्मानित किया गया था। डॉ. चौरसिया 1991 से आजीवन ... इन क्राइम ऑगेंस्ट वूमेन एंड चिल्ड्रंस' विषय पर केन्द्रित पहले तकनीकी सत्र में सह अध्यक्षता के ... स्टर्स एवं बैचलर ... द्वारा शोधपत्रों का ... विषय विशेषज्ञों में ... का विषय रहा।

तैयार किए गए 10 शोध पत्रों को प्रस्तुतीकरण किया गया। शोधपत्रों के प्रस्तुतीकरण में स्नातकोत्तर के विद्यार्थी ऋषिराज, स्नेहा आढ्या, प्राची देवलिया, निष्ठा ठकुर, स्नातक की शमा फातिमा सिद्धीकी, शैरिल जैन, तेजस्वी राय, ऐश्वर्या कलासिया, गरिमा दिया करनानी, खुशी सलूजा एवं नैन्सी यादव ने विभिन्न विषय पर शोधपत्रों का प्रस्तुतीकरण किया गया। सभी शोध पत्रों के प्रस्तुतीकरण के बाद तकनीकी सत्रों में प्रस्तुत किए प्रश्नों का डॉ. चौरसिया एवं शोधकर्ताओं द्वारा समाधान किया गया।

हमारे जीवन का हर आयाम परंपरागत ज्ञान से जुड़ा हुआ है: प्रो. गंगाधर

सागर, देशबन्धु। मानव विज्ञान विभाग में परंपरागत ज्ञान एवं सतत समाज विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। यह संगोष्ठी मानवविज्ञान विभाग डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल एवं इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस, छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुई। द्वि दिवसीय संगोष्ठी के प्रथम दिन के उद्घाटन सत्र में कार्यक्रम के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि परंपरागत ज्ञान आज की पीढ़ी के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि प्रो. एमआर गंगाधर, कुलपति, चामराजनगर विवि कर्नाटक ने कहा कि हमारा जीवन का हर आयाम परंपरागत ज्ञान से जुड़ा हुआ है, और हमें इसे आत्मसात करते हुए आगे बढ़ना चाहिये। विशिष्ट अतिथि कलेक्टर संदीप जीआर ने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि सतत समाज के निर्माण हेतु सागर जिले में यह प्रयास किया जा रहा है कि प्लास्टिक एवं कचरा मुक्त वातावरण स्थापित किया जाये तथा हानिकारक रसायनों के ... पर्णतः प्रतिबंध लगाया जाये। अध्यक्षता कर रहे वाईएस ठाकुर, प्रभारी कुलपति, डॉ. हरिसिंह गौर ... एवं सतत समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि हमें एक स्थायी और समृद्ध ... दृष्टिकोण से जोड़ते हुये इसे व्यापक रूप में ... ने भाग लिया।

छात्राओं में सफलता की अपार संभावनायें, आत्मविश्वास के साथ बढ़...

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के भूगोल विभाग द्वारा विवि में अध्ययनरत छात्राओं ... छात्रायें अपने सपनों को साकार कर सकती हैं ...

अचीविंग ड्रीम्स ... की दिशा में दृढ़ ... साथ आगे बढ़ना है। ... एवं भूगोल विभाग ... भारद्वाज ने इस कार्यक्र... करते हुये बताया कि इस... को उनकी क्षमताओं को प... और उनमें आत्मविश्वास ... कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. ... जानकारी दी कि अब तक ... पंजीक... दर्शनशा...

हरिभूमि न्यूज

बेटियों में उच्च पदों तक पहुंचने की अपार संभावना, अपनी क्षमता पहचानें : कुलपति

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के भूगोल विभाग द्वारा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्राओं के लिये आरंभ ग्रोइंग, लर्निंग एंड अचीविंग ड्रीम्स ... कार्यक्रम का अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के सुअवसर ...

कार्यशाला | दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सह-कार्यशाला

कला विद्यार्थियों के सृजनात्मक एवं कल्पनाशक्ति के विकास में सहायक

नवभारत न्यूज

सागर 9 मार्च. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग, आंतरिक गुणवत्ता प्रत्यायन प्रकोष्ठ और शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा कला एकीकृत शिक्षा एवं सृजनशील अधिगम विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के अंतिम दिन 6 सत्रों का आयोजन हुआ.

कार्यशाला सत्र में विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग की सहायक आचार्या डॉ. सुप्रभा दास ने मिट्टी के खिलौनें विषय पर वक्तव्य देते हुए मिट्टी के विभिन्न कलाकृतियों को बनाने का प्रशिक्षण दिया. विभाग के छात्र सत्यम प्रजापति और खूबचन्द प्रजापति द्वारा मिट्टी से निर्मित शिवलिंग, गणेश जी प्रतिमा, हाथी, गुल्लक, मगरमच्छ, अनेक तरह के दीपक, जल पात्र जैसे अनेक कलाकृतियों का वास्तविक प्रदर्शन किया गया. कार्यशाला सत्र का समन्वयन शोधार्थीनी विजय श्री जायसवाल एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नवीन सिंह ने किया. द्वितीय दिवस के प्रथम ऑनलाइन तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर यशपाल सिंह एवं सह-अध्यक्षता डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया. विभिन्न पहलू विषय पर 16 प्रतिभागियों द्वारा अपने अपने शोध पत्रों का वाचन किया गया. इस सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शिव शंकर यादव ने किया. द्वतीय ऑनलाइन तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. सरोज यादव एवं सह-अध्यक्षता डॉ. कीर्ति प्रजापति ने किया. सत्र का समन्वयन शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रमा कांत ने किया. तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. शिल्पी कुमारी एवं सह-अध्यक्षता डॉ. सुरेन्द्र यादव ने किया.

बीकॉम बीएड, बीएससी बीएड और बीए बीएड में 50-50 सीटों पर मिलेगा प्रवेश, मप्र में 7 सेंटर पर होगी परीक्षा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इन शहरों में परीक्षा

भोपाल, सागर, जबलपुर, इंदौर, ग्वालियर, सतना और उज्जैन

चार पार्ट में होंगे पेपर, 181 में से 160 सवालों के जवाब देने होंगे

- भाषा दक्षता (दो लैंग्वेज में) - प्रत्येक भाषा में 23 में से 20 प्रश्नों का उत्तर देना होगा। 46 में से 40 प्रश्न का जवाब देना होगा।
- डोमेन स्पेसिफिक सब्जेक्ट (तीन) - प्रत्येक विषय में 28 में से 25 प्रश्नों का उत्तर देना होगा। इस पार्ट 84 प्रश्न में 75 करने हैं।
- जनरल टेस्ट - 28 में से 25 प्रश्नों का उत्तर देना होगा।
- टीचर एप्टीट्यूड - 23 में से 20 प्रश्नों का उत्तर देना होगा।

यूनिवर्सिटीज से बीएड कर सकते हैं। विवि में बीकॉम बीएड, बीएससी बीएड व बीए बीएड में 50-50 सीटों पर दाखिला मिलेगा। इसके लिए 16 मार्च रात 11.30 तक आवेदन कर सकते हैं। भुगतान जमा करने के लिए इसी दिन रात 11.50 तक का समय दिया गया है। ऑनलाइन आवेदन की समयसीमा पूरी होने के बाद 18 से 19 मार्च तक ऑनलाइन करेक्शन का मौका दिया जाएगा। इस एंट्रेंस एग्जाम को 12 वीं में पढ़ रहे और पास कर चुके विद्यार्थी दे सकते हैं। इस कोर्स को करने के बाद छात्र-छात्राएं माध्यमिक शिक्षक बनने की पात्रता रख सकते हैं।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग में एल्यूमिनी मीट संपन्न

'परंपरागत शिक्षा के साथ रोजगारोन्मुख शिक्षा की जरूरत'

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्थापना काल 1946 में आरंभ हुये विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग के पुरा विद्यार्थियों के प्रथम समागम (एल्यूमिनी मीट) संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि सत्तर के दशक में विभाग के विद्यार्थी, नागपुर विश्वविद्यालय एवं मैरीटाइम यूनिवर्सिटी चेन्नई के पूर्व प्रो.वाइस चांसलर रहे प्रोफेसर जीएस पाराशर थे। उन्होंने परंपरागत शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। आपने कहा कि जीव विज्ञान विभाग, सैरी कल्चर, फिशरीज जैसे विषय आरम्भ कर विभाग को गांव-किसान से जोड़ें। अपने गुरु, जाने माने कीट विज्ञानी दिवंगत प्रो. आरएस सैनी का स्मरण करते हुए आपने उनकी स्मृति को जीवंत बनाये रखने व्याख्यान माला आरम्भ करने का प्रस्ताव दिया। उन्नीस सौ साठ के दशक में विद्यार्थी रहे।। पूर्व विभाग अध्यक्ष प्रो. डीपी गुप्ता ने अपने अनुभव साझा करते हुए एल्यूमिनी मीट की ... कुलपति प्रतिनिधि प्रो वायाएस ... से विश्वविद्यालय ... सदस्य ...

दिया। विभागाध्यक्ष प्रो श्वेता यादव ने विभागीय ... गतिविधियों का ब्यौरा दिया। आयोजन ... डॉक्टर पायल महोबिया ने ... और नवागत ... सभा ...

... पत्र में विभागीय ... विरासत को ...

परंपरागत शिक्षा के साथ रोजगारोन्मुख शिक्षा की आवश्यकताः प्रो पाराशर

आचरण संवाददाता

सागर। विश्वविद्यालय के स्थापना काल 1946 में आरम्भ हुये विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग के पुरा विद्यार्थियों के प्रथम समागम (एल्यूमिनी मीट) संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि सत्तर के दशक में विभाग के विद्यार्थी, नागपुर विश्वविद्यालय एवं मैरीटाइम यूनिवर्सिटी चेन्नई के पूर्व प्रो-वाइसचांसलर रहे प्रोफेसर जी. एस. पाराशर थे। उन्होंने आज ... शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान की आवश्यकता पर ... जीव विज्ञान विभाग, सैरी कल्चर, ... को गांव-किसान से ...

सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा और समाज सुधार के लिए किया कार्य

सागर, देशबन्धु। सावित्रीबाई फुले के कार्य को हमें आगे बढ़ाना होगा, आज महिला शिक्षा और विकास समाज की आवश्यकता है उक्त विचार डॉ. आंबेडकर चेयर, डॉ. हरीसिंह गौर विवि में आयोजित डॉ. अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर को संबोधित करते हुये डॉ. रेखा सोलंकी ने कहा कि 9 वर्ष की आयु में सावित्रीबाई फुले की शादी हो गई थी परंतु उनके पति महात्मा ज्योतिबा फुले के द्वारा उनके सहयोग करते हुये दोनों ने समाज सुधारक एवं महिला पिछड़ों की शिक्षा के लिये अनेक स्कूल खोलकर शिक्षा के माध्यम से समाज सुधार का कार्य किया। मुख्य अतिथि डॉ. ... समाज सुधारकों की भूमि रही है अनेक समाज सुधारकों ने समाज के लिये ... को नमन कर रहे हैं। अध्यक्षता करते हुये ... समाज में ...

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में रसायन और जीवविज्ञान के नवीन आयामों पर हुई चर्चा

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरिसिंह गौर विवि के अभिमंच सभागार एवं महर्षि कणाद भवन में रसायन विभाग, शोध एवं विकास विभाग तथा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में एडवांसमेंट इन इंटरफेस ऑफ केमिस्ट्री एंड बायोलॉजी विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन राष्ट्रीय फिजिकल लेबोरेटरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नाहर सिंह की मुख्य आतिथ्य ...

... अपनी इकाइयों और मानकों को लेकर स्वयं निर्भर ...

फार्मास्यूटिकल और पर्यावरणीय अनुप्रयोगों पर चर्चा की। दूसरे दिन का प्रारंभ डॉ. राजमणि नागराजन के व्याख्यान से हुआ, जिसमें उन्होंने द्वि आयामी मेटल ऑक्साइड में हेलोजन डोपिंग से ऊर्जा प्राप्ति और पर्यावरणीय समाधान पर प्रकाश डाला। प्रो. मिलिंद देशमुख ने नॉन.कोवैलेंट इंटरेक्शन और हाइड्रोजन बंधन ऊर्जा निकालने की नवीन विधि पर अपना शोध प्रस्तुत किया। समापन अवसर पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। वैष्णवी सांवले ने गणेश वंदना पर नृत्य ... ने बांसुरी वादन ... के ... सम्मेलन ... की गई ... सत्रों ...

सागर | 2 | अंक ३७२ | पृष्ठ ०४ | मूल्य - २ रूपए | नवसिन्धु समाचार | www.navshindhusamachar

अकादमिक परिचर्चा का आयोजन

इतिहास विभाग शोधार्थी परिषद द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दो दिवसीय अकादमिक परिचर्चा का आयोजन*

नवसिन्धु समाचार सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग शोधार्थी परिषद के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 7 एवं 10 मार्च 2025 को दो दिवसीय अकादमिक परिचर्चा का आयोजन किया गया. जिसमें विश्व तथा भारतीय इतिहास में महिलाओं के योगदान को याद किया गया एवं 10 मार्च को विदुषी सवित्रीबाई फुले की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई. कार्यक्रम के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. ...

महिला दिवस की थीम 'ऐक्सलरेट ऐक्शन' पर ध्यान आकर्षित करते हुए महिला आंदोलनों के विभिन्न चरणों, उनके मध्य समता, समानता एवं स्वतंत्रता की भावना को व्यक्त किया. साथ ही बताया कि समाज में महिलाओं के निम्न स्तर का जिम्मेदार पुरुष नहीं अपितु पितृसत्ता है. जिसके शोषण के दायरे में महिलाओं के साथ पुरुष भी ... वक्ता डॉ संजय ...

अलावा दूसरे दिवस के कार्यक्रम में भी उन्होंने विदुषी सावित्रीबाई फुले के प्रयत्नों एवं योगदान का स्मरण कराया.

दूसरे दिवस के कार्यक्रम में प्रो. ... श्रीवास्तव ने ...

द्वारा फैलाये समस्त उपनिवेशों से मुक्ति प्राप्त हो गई है. महिला आदमी का ... उपनिवेश है, इससे भी ... वाली ...

कला प्रदर्शनी में फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने की सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वैली कैम्पस स्थित ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के नवीन भवन 'कौटिल्य भवन' में वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने अपनी कलाओं का प्रस्तुतीकरण किया. प्रदर्शनी का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. प्रदर्शनी का संयोजन डॉ. सुप्रभा दास ने किया। इस अवसर पर कुलपति ने विद्यार्थियों के सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का अवलोकन किया और कहा कि विद्यार्थियों को लगातार इसी तरह की सृजनात्मक गतिविधि में संलग्न रहकर अपनी कला और प्रतिभा को निखारना चाहिए. प्रत्येक विद्यार्थी में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है इसलिए अपनी क्षमता और हुनर को पहचान दें. इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है. उन्होंने गौर संग्रहालय में एक आर्ट गैलरी बनाए जाने की भी स्वीकृति दी जिसमें बुंदेलखंड की संस्कृति और परम्परा को चित्रित करती हुई पेंटिंग्स और चित्रों को लगाया जाएगा।

प्रदर्शनी में बीएफए के विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों डॉ. बलवंत सिंह भदौरिया, डॉ. सुप्रभा दास एवं आकाश मालवीय ... पेंटिंग्स और कलाकृतियों को भी अवलोकनार्थ ... में प्रस्तुत कलाकृतियों में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित ... पोस्टर, फोटो ग्राफी, कैलीग्राफी ... पट चित्र, मधुबनी आर्ट ... तरीके से प्रस्तुत ... यादव ...

विद्यार्थियों को लगातार सृजनात्मक गतिविधि में संलग्न रहकर अपनी कला और प्रतिभा को निखारना चाहिए

कला प्रदर्शनी में फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने की सृजनात्मक अभिव्यक्ति

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वैली कैम्पस स्थित ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के नवीन भवन 'कौटिल्य भवन' में वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस दौरान फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों ने अपनी कलाओं का प्रस्तुतीकरण किया।

प्रदर्शनी का शुभारंभ विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। प्रदर्शनी का संयोजन डा. सुप्रभा दास ने किया। इस अवसर पर कुलपति ने विद्यार्थियों के सृजनात्मक ... अवलोकन किया ...

कौटिल्य भवन' में वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। ● नवदुनिया

विद्यार्थी में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है इसलिए अपनी क्षमता और हुनर को पहचान दें। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है। उन्होंने ... में एक आर्ट गैलरी ... चित्रों को लगाया जाएगा।

पोस्टर व कलाकृतियों का अवलोकन किया

प्रदर्शनी में बीएफए के विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों डा. बलवंत सिंह भदौरिया, सुप्रभा दास एवं ...

अवलोकनार्थ रखा गया है। प्रदर्शनी में प्रस्तुत कलाकृतियों में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित ग्राफिक डिजाइन, पोस्टर, फोटो ग्राफी, कैलीग्राफी, टू डी एवं थ्री डी आर्ट, लोक कला, पट चित्र, मधुबनी आर्ट, मंडला आर्ट, क्रिएटिव पेंटिंग को आकर्षक तरीके से ... किया गया। ... राजेन्द्र ... नीलम ... डा. राकेश ... डा. नीरज ... शोधार्थी यश ... किरण ठाकुर ... जैन, आस्था ... वैभव, प्रदीप, ... शिवानी, वर्षा, ... तेजस, दीपू सहित ...

बेटियों में उच्च पदों तक पहुंचने की अपार संभावना- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

एजुकेशन

विवि व कॉलेज में शुरू हुए ये कोर्स, पढ़ाई के बाद आसानी से मिलेगा अब रोजगार

मशीन लर्निंग इंजीनियर, डेटा साइंटिस्ट व एआइ एथिक्स कंसल्टेंट की बढ़ी मांग

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. शहर के कॉलेज व विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाने वाले कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में कई बदलाव हो रहे हैं। सबसे ज्यादा असर वेब डेवलपमेंट, डेटा साइंस, क्लाउड कम्प्यूटिंग, साइबर सिक्योरिटी ...

तेजी से बढ़ेंगे जॉब के ऑफर

कंप्यूटर विशेषज्ञों ने बताया कि एक रिपोर्ट के अनुसार एआई अपनाने वाली कंपनियों की संख्या बढ़ रही है। डेटा साइंटिस्ट की डिमांड दो साल में 15 प्रतिशत बढ़ी है। एआई और मशीन लर्निंग से हेल्थकेयर, ...

कंप्यूटर विशेषज्ञ डॉ. केके कृष्णा राव ने बताया कि ... में पिछले वर्षों में ... थोड़ा कम हुआ था, ... के आने के बाद अब ... से उत्सुकता दिखा रहे ...

शहर में ...

पत्रिका न्यूज

विवि में हुई प्रशिक्षण कार्यशाला

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र में स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरूआत की। मुख्य वक्ता डॉ. विवेक मालवीय ने एसइएम तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी। प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर उत्तर दिया गया। इस मौके पर डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिव प्रकाश सोलंकी, आशीष चढ़ार, अरविंद चढ़ार, चन्द्र प्रकाश सैनी आदि मौजूद रहे।

विवि स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

सत्ता सुधार ■ सागर

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एसईएम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 32 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो.श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी।उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं। व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. विवेक मालवीय (प्रभारी शिक्षक, एसईएम) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में एसईएम तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत, सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी।हैंड्स ऑन सत्र शिवप्रकाश सोलंकी, सीएआर द्वारा एसईएम उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ। विभिन्न पृष्ठभूमि से नमूना तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया। प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई।प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया।सैम्पल तैयार करने के लिए, प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था।प्रत्येक समूह ने नमूना तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया।प्रतिभागियों द्वारा एसईएम पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिवप्रकाश सोलंकी, आशीष चढ़ार और अरविंद चढ़ार, चन्द्र प्रकाश सैनी की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया।

आयोजन | डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि के 1970-76 बैच के गोल्डन जुबली समारोह में देश-विदेश से शामिल हुए पूर्व छात्र

फार्मेसी विभाग में मिले पूर्व छात्र, पचास साल बाद फिर याद हुईं ताजा

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः डा. सर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय का फार्मेसी विभाग पिछले दो दिनों तक पचास साल पुराने दौर में डूबा नजर आ रहा है। यहां 17 व 18 मार्च को 1970-76 बैच के बीफार्म एवं एमफार्म के बैच के विद्यार्थियों का पुनः मिलन एवं गोल्डन जुबली समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में इन बैचों के देश-विदेश में रहने वाले पूर्व छात्र सपत्नीक शामिल हुए। सालों बाद फिर एक साथ विभाग में जुटने पर इनकी पुरानी यादें तरोताजा हुईं वहीं खुशियों का ठिकाना नहीं था। पूर्व छात्र डा. अशोक बुधवानी ने कहा कि विश्वविद्यालय की भूली-बिसरी यादें ताजा हो गईं। यह विभाग बहुत कुछ बदला-बदला सा नजर आ रहा है लेकिन विश्वविद्यालय की वहीं रास्ते हमें अतीत में ले जा रहे हैं। भवनों ... रंग-रोगन जरूर हुआ है, मगर ... नहीं बदली है। हां, शैक्षणिक

गोल्ड... समारोह में शामिल होने के लिए देश-विदेश से आये फार्मेसी विभाग के पूर्व छात्र। • नवदुनिया

... रघुबीर सिंह ठाकुर जयपुर, सुधीर ...श्रीवास्तव टोरेन्टो कनाडा, मुरलीधर ... प्रभात चौहान पेनांग ... तिवारी ... बुधवानी, संतोष जैन, रामकिशोर अग्रवाल, राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव आदि पूर्व छात्र इस मिलन समारोह में शामिल हुए। इन पूर्व छात्रों ने दिनभर विश्वविद्यालय में अपने विभाग के ... लाइब्रेरी, ब्याज हास्टल ... के समय निवास किया, युनिवर्सिटी कैम्पस आदि का भ्रमण किया। वहीं रात में एक निजी होटल में गीत संगीत का कार्यक्रम हुआ। जहां अपने गीतों के माध्यम से भूली- बिसरी यादों को ताजा किया।

फार्मेसी कोर्स में फार्मा इंजीनियरिंग, मेडीकल डिवाइस और क्लीनिकल फार्मेसी को शामिल करने पर जोर : पूर्व छात्र मिलन समारोह का आयोजन फार्मेसी विभागाध्यक्ष प्रो. उमेश पाटिल की अध्य... समस्त ... डा. विन... जैन, ... स्टुडेंट ... हुए। ...

ज्यादा कार्य करने का अनुभव ... किया। अमेरिका और कनाडा जै... सम्पन्न देशों में बतौर फार्मासिस्ट सेवा देने वाले एल्युमनाई ने फार्मासिस्टों का स्टेटस डाक्टरों के समकक्ष होने के बारे में अवगत कराया। देश में फार्मेसी कोर्स में वक्त की मांग को देखते हुए फार्मा इंजीनियरिंग, मेडिकल डिवाइस और क्लीनिकल फार्मेसी जैसे विषयों का विस्तृत समावेश किए जाने की ... समारोह

प्राणी शास्त्र विभाग के 9 विद्यार्थियों ने गेट परीक्षा में हासिल की सफलता

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के प्राणी शास्त्र विभाग के परास्नातक के 09 छात्रों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, ...द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित गेट स्नातक योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण ...क राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा है जो मुख्य रूप से ...की, वास्तुकला, विज्ञान, वाणिज्य, कला, ...विषयों की व्यापक समझ का परीक्षण ... पांडे, पलक केशरवानी, रिशु ...तति विश्वकर्मा, ...मा श्रीवास्तव के ...लता के लिये अथक ... विभागीय शिक्षकों ... किया और इसके लिए ...लब्धि पर कुलपति प्रो. ...ध्यक्ष प्रो. श्वेता यादव ने ...ा व्यक्त करते हुये उनके

डॉ. हरीसिंह गौर विवि के 1970-76 बैच के गोल्डन जुबली समारोह में देश-विदेश से शामिल हुए पूर्व छात्र

अमेरिका, कनाडा, मलेशिया से आए पूर्व छात्र, 50 साल बाद मिले

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग में दो दिन तक 50 साल पुराने दौर में डूबा नजर आया। यहां 1970-76 बैच के बीफार्म एवं एमफार्म बैच के विद्यार्थियों का मिलन एवं गोल्डन जुबली समारोह हुआ। समारोह में इन बैचों के देश-विदेश में रहने वाले पूर्व छात्र ... हुए। सालों बाद ...

कोर्स में फार्मा इंजीनियरिंग, मेडिकल... क्लीनिकल फार्मेसी शामिल...

...या मेले का उद्घाटन

...दिवसीय मेले का भव्य उद्घाटन सोमवार को प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ... वृन्दावन गार्डन में आयोजित किया जा रहा है। 25 मार्च ... श्रीवास्तव, श्वेता शर्मा, ... अनुपमा राजपूत, ...

इलेक्ट्रो केमिकल वर्कस्टेशन पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन

उत्कृष्टता की रणनीतिः नैक बाइनरी प्रत्यायन और एन.आई.आर.एफ रैंकिंग पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम

सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग के लिए स्वमूल्यांकन, परिश्रम और लक्ष्य के साथ कार्य करें: प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति

दो दिवसीय सांगीतिक सभा 'नाद रंग सुर ताल संग' का शुभारंभ

सागर दिनकर

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय सांगीतिक सभा नाद रंग सुर ताल संग के प्रथम दिवस का शुभारंभ प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने दोनों संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से संगीत सम्बन्धित नए पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का सुझाव दिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष देवेंद्र वर्मा ने ...

विश्वविद्यालयः दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

साहित्य और इतिहास का परस्पर गहरा संबंध हैः कुलपति

पाकिटमार रंगमंडल की प्रस्तुति से हुआ प्रथम सागर रंग महोत्सव का आगाज

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थियेटर ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में आठ दिवसीय प्रथम सागर रंग महोत्सव 2025 का उद्घाटन विवि के प्रदर्शनकारी कला विभाग में किया गया। ...

विश्वविद्यालय में आठ दिवसीय प्रथम सागर रंग महोत्सव 27 मार्च से, हर दिन होंगी नाट्य प्रस्तुतियां

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थियेटर ग्रुप, सागर के संयुक्त तत्वावधान में आठ दिवसीय 'प्रथम सागर रंग महोत्सव 2025' का आयोजन किया जा रहा है। इसकी शुरुआत विश्व रंगमंच दिवस 27 मार्च से होगी और हिन्दी रंगमंच दिवस 3 अप्रैल तक यह महोत्सव चलेगा। रोज एक नाटक का मंचन होगा। सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक एवं आयोजन सचिव डॉ. राकेश सोनी ने बताया कि प्रत्येक दिन नाट्य प्रस्तुति के साथ ही रंग संगीत, नृत्य एवं कलाओं से सम्बंधित कार्यशालाएं, विचार-विमर्श इत्यादि का आयोजन भी किया जाएगा। उद्घाटन सत्र 27 मार्च विश्व रंगमंच दिवस को शाम 6.30 बजे होगा। जिसमें मुख्य अतिथि एवं संरक्षक के रूप विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता, विशिष्ट अतिथि प्रो. डीके नेमा, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नवीन कानगो एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय होंगे। महोत्सव के सह सचिव सहायक प्राध्यापक अल्ताफ मुलानी एवं समन्वयक सहायक प्राध्यापक डॉ. नीरज उपाध्याय हैं। समस्त नाट्य प्रस्तुतियां विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग परिसर में शाम 7 बजे से होंगी। दिन के समय में अकादमिक कार्यक्रम, कार्यशाला एवं विचार गोष्ठी होगी।

ऐसा होगा महोत्सव

गिरीश कर्नाड लिखित हयवदन की प्रस्तुति 3 अप्रैल को

- 27 मार्च : असगर वजाहत लिखित एवं विवेकानंद सोनी द्वारा निर्देशित पाकिटमार रंगमंडल नाटक का मंचन होगा।
- 28 मार्च : अनुपम कुमार लिखित एवं डॉ. राकेश सोनी द्वारा निर्देशित मृगतृष्णा नाटक का मंचन होगा।
- 29 मार्च : कालिदास लिखित एवं रोहित रजक निर्देशित शकुन्तला नाटक का मंचन होगा।
- 30 मार्च : महेश एल कुंचवार लिखित एवं आकाश विश्वकर्मा द्वारा निर्देशित होली का मंचन होगा।
- 31 मार्च : वेंकट रवण सूरी लिखित एवं आनंद अग्रवाल द्वारा निर्देशित इगप्प हेगड़े का विवाह का मंचन होगा।
- 1 अप्रैल : आकाश विश्वकर्मा द्वारा लिखित एवं निर्देशित इश्कियापा का मंचन होगा।
- 2 अप्रैल : मच्छिन्द्र मोरे लिखित एवं अल्ताफ मुलानी निर्देशित जानेमन का मंचन होगा।
- 3 अप्रैल : गिरीश कर्नाड लिखित एवं मधुसूदन पांडे व मयंक विश्वकर्मा द्वारा निर्देशित हयवदन की प्रस्तुति होगी।

केंद्रीय विश्वविद्यालय में प्रथम सागर रंग महोत्सव का आगाज

जीवन के कड़वे सच को बताता है पॉकेटमार रंगमंडल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के सांस्कृतिक परिषद और युग सृष्टि थियेटर ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में आठ दिवसीय प्रथम सागर रंग महोत्सव का उद्घाटन गुरुवार को विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग में हुआ।

पहले दिन असगर वजाहत के लिखित पाकिटमार रंगमंडल की प्रस्तुति हुई। यह एक अनूठा नाटक है, जो पूर्व जेबकतरों और असामान्य पृष्ठभूमि से आए कलाकारों की संघर्षपूर्ण यात्रा को दर्शाता है। ऐसे कलाकारों का एक ही मकसद है, रंगमंच को जिंदा रखना, लेकिन समाज उनकी पिछली पहचान को भूलने को तैयार नहीं। पाकेटमार रंगमंडल … शक कर… पहचान … कर करन…

केंद्र है भगवान पाकिटमार रंगमंडल का निर्देशक, जो सबसे ज्यादा तकलीफें सहता है, लेकिन कभी हार नहीं मानता। उसके जुनून और समर्पण के कारण ही यह रंगमंडल आज तक जीवित है। यह ग्रुप हर कदम पर नई मुश्किलों से जूझता है, लेकिन रंगमंच के प्रति अपने समर्पण को कभी कम नहीं होने देता। यह नाटक हंसी, संघर्ष और समाज के …

सच्च… जाते… कुलप… कि प्र… अभिन… यह भी… सम्पूर्ण… संचालन… किया। अ… माना। 28…

राजभाषा कार्यान्वयन के नवाचार अनुकरणीय, देश के अन्य विवि कर रहे अनुसरण: डॉ. सर्मा

भास्कर संवाददाता | सागर

केंद्रीय विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक कामकाज में हिंदी की प्रगति की निगरानी के लिए यूजीसी, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की … समिति ने डॉ. हरीसिंह …

…यों के विशिष्ट … कुलपति प्रो. … अध्यक्षता में … राजभाषा … की 48वीं … डॉ. सर्मा ने …ण एवं प्रोत्साहन …लन करते हुए … में राजभाषा … लिए किए जा रहे …णीय हैं। जिनका … के अन्य … भी कर रहे हैं। … नीलिमा गुप्ता के …विद्यालय राजभाषा … दिशा में अग्रसर है। …कहा डॉ. गौर का यह … हिंदी भाषी क्षेत्र में स्थित है इसलिए वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शतप्रतिशत मूल पत्राचार हिंदी में किया जाना आवश्यक है। उन्होंने राजभाषा प्रकोष्ठ एवं विश्वविद्यालय के अन्य विभागों द्वारा किए जा रहे प्रकाशनों तथा विश्वविद्यालय में लागू राजभाषा पदक एवं पुरस्कार योजना की प्रशंसा की। बैठक की अध्यक्षता कर रहे प्रभारी कुलपति प्रो. ठाकुर ने बताया राजभाषा हिंदी का विकास तभी संभव है जब यह स्वस्फूर्त होकर हमारे दैनंदिन कार्यालयीन कामकाज का हिस्सा बन जाए। विश्वविद्यालय के मन एवं आत्मा में हिंदी है इसलिए हिंदी में कार्य करते हुए हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने किया निरीक्षण

लक्ष्य प्राप्ति के लिए शत-प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में ही किया जाए

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में भारत सरकार की उच्चस्तरीय समिति विश्वविद्यालय … आयोग ने विश्वविद्यालय … निरीक्षण किया … मृगांक … अमित … समिति ने … प्रकोष्ठ …

वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शत-प्रतिशत मूल पत्राचार हिन्दी में किया जाना आवश्यक है। संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी …

राष्ट्रीय संगोष्ठी में किया पुस्तक का लोकार्पण

जागरण गढ़ाकोटा। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गढ़ाकोटा के हिन्दी विभाग के प्रो. डॉ घनश्याम भारती की पुस्तक हिन्दी साहित्य का इतिहास का विमोचन डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के सभागार में किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोह में डॉ घनश्याम भारती की इस पुस्तक का विमोचन हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो अजीत जायसवाल, प्रो नवीन कानगो, प्रो चंदाबेन अधिष्ठाता भाषा अध्ययन शाला, डॉ हिमांशु कुमार, प्रो राजेंद्र यादव, डॉ आशुतोष मिश्र दिल्ली विश्वविद्यालय, संपादक डॉ घनश्याम भारती, प्रो नीरज खरे काशी हिंदू विश्वविद्यालय बनारस विद्वानों ने किया। इस पुस्तक के संपादक डॉघनश्याम भारती ने समारोह में अपने वक्तव्य देते हुए इस पुस्तक के संदर्भ में बताया कि यह पुस्तक देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के बीए, एमए पीएचडी तथा नेट, सेट एवं हिन्दी की प्रतियोगी परीक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु एक संदर्भ पुस्तक का कार्य करेगी। साथ ही बीए एमए के पाठ्यक्रमानुसार वार्षिक परीक्षा … विद्यार्थियों हेतु एक प्रश्नपत्र के रूप … तैयारी हेतु उपयोगी होगी। डॉ भारती ने बताया की इस पुस्तक में आदिकाल भक्तिकाल रीतिकाल आधुनिक काल तथा गद्य साहित्य से संबं… अध्यायों को पांच खण्डों में वि… जे टी एसपब्लिके… पुस्तक … प्रोफेसर डॉ …

दो दिवसीय राज्यस्तरीय सम्मेलन का शुभारंभ

समाज के वरिष्ठ नागरिक अनुभव एवं ज्ञान के अनमोल खजाने हैं, इनका प्रेमपूर्वक ख्याल रखें : कुलपति

आचरण संवाददाता

…गर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं …ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय एवं …धिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान …श्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में वरिष्ठ नागरिकों …लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन का शुभारंभ …थियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया … कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु घासीदास …द्यालय बिलासपुर के कुलपति प्रो. आलोक …, विशिष्ट अतिथि डीएवी विश्वविद्यालय जालंधर … कुलसचिव डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज एवं पूर्व …सद डॉ. लक्ष्मीनारायण यादव थे। अध्यक्षता …लय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। स्वागत …र्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद भारद्वाज ने दिया। … परिचय एवं रूप रेखा डॉ. शिवानी मीणा ने … अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा … समाज के वरिष्ठ नागरिक अनुभव एवं ज्ञान …ते हैं। उनके अनुभव एवं ज्ञान से नई पीढ़ी … भारत इस मायने में समृद्ध रहा है कि आज … परिवार हैं। भारतीय समाज में वृद्धजन के …तीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है. …र का चलन बढ़ा है लेकिन हमें हमारी …ात के प्रेरित करना चाहिए कि वे अपने- … के वरिष्ठ सदस्यों का प्रेम पूर्वक ख्याल …

…लोक चक्रवाल ने कहा कि हमें …हिए। श्रवण कुमार जैसे उदाहरण … स्रोत हैं। उन्होंने महान संत गुरु …रते हुए कहा कि मानव सेवा … …ज का यह …

सारस्वत अतिथि सागर के पूर्व सांसद डॉ. लक्ष्मी नारायण यादव ने कहा कि वरिष्ठ एवं वृद्धजनों पर आयोजित कार्यक्रमों हेतु कई बार विदेशों में मेरा जाना हुआ है। दुनिया के कई देशों में वृद्ध जनसँख्या एक समस्या के रूप में देखा जाता है. विदेशों की अपेक्षा भारत में आज भी वृद्धजनों की स्थिति काफी अच्छी है. उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को वृद्धों से संवाद करना चाहिए। सारस्वत अतिथि डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने कहा कि छोटी-छोटी इकाइयों से समाज बनता है. समाज से राष्ट्र बनता … वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव … करने में …

शिविर, व्याख्यान एवं उनकी आवश्यकता अनुरूप अन्य गतिविधियों का भी आयोजन किया जाएगा।

कार्यक्रम में सागर शहर एवं आस-पास के 150 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों ने अपना निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कराया और चिकित्सकों से परामर्श लिया. डॉ. अभिषेक जैन, डॉ. किरण माहेश्वरी एवं डॉ. भूपेंद्र पटेल के निर्देशन में सभी वरिष्ठ नागरिकों … स्वास्थ्य परीक्षण हुआ. परीक्षण में …द्वारा आँखों की जाँच, ब्लड प्रेशर, …ी (हड्डी की जांच) सहित अन्य …या।

… हेमंत पाटीदार ने किया. आभार …या। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय …कारी, कर्मचारियों सहित सागर …ों के वरिष्ठ नागरिकों ने इस … की।

सम्मेलन • 40 लोग निकले पूर्णतः स्वस्थ, क्योंकि 3 किमी टहलते हैं

142 बुजुर्गों की जांच; 95 को बीपी, 90 की हड्डियां कमजोर, 70 को डायबिटीज निकली

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय में वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन हुआ। इस दौरान स्वास्थ्य शिविर भी लगाया गया, जिसमें 142 लोगों की जांच हुई। शिविर संयोजक विवि के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अभिषेक कुमार जैन ने बताया 122 वृद्धजनों की इलेक्ट्रिक कार्डियोग्राफी हुई जिसमें से 60 की रिपोर्ट असामान्य पाई गई। इसी प्रकार 130 लोगों का बोन मिनरल डेंसिटी टेस्ट किया गया, जिसमें से 90 लोगों की जांच असामान्य पाई गई। 70 लोगों को डायबिटीज पाई गई। 95 वृद्धजनों का ब्लड प्रेशर सामान्य से ज्यादा पाया गया। 90 लोगों ने नेत्र परीक्षण कराया, जिनमें से विजन संबंधी रोग 65 लोगों में पाया गया। 40 बुजुर्ग ऐसे थे, जो पूरी तरह से फिट निकले। इसकी वजह उन्होंने बताई कि वे नियमित रूप से योग करते हैं। दो से तीन किलोमीटर पैदल चलते हैं। शिविर में संयमित आहार करते हैं। शिविर में वृद्धजनों को लू, डेंगू, फ्लू से बचाव आदि जागरूकता संबंधी पत्रक वितरित किए गए। मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप पर डॉ. जैन ने सभी बुजुर्गों को संबोधित किया एवं उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। शिविर में जीवन शैली में बदलाव एवं आहार पोषण आदि की जानकारी परामर्श द्वारा दी गई।

श्रवण कुमार जैसे उदाहरण प्रेरणा स्रोत : प्रो. चक्रवाल

मुख्य अतिथि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर के कुलपति प्रो. आलोक चक्रवाल ने कहा हमें इतिहास से सीखना चाहिए। श्रवण कुमार … हमारे समाज में प्रेरणा … समाज में सकारात्मक … कार्य करने और वृद्धज… सांस्थानिक भागीदारी … शैक्षणिक संस्थानों की … इसमें महत्वपूर्ण है। डॉ. … कालिया भारद्वाज ने कह… साथ हो रहे अपमान, उन… लापरवाही, शारीरिक चो… बोझ समझा जाना जैसी … को रोकने की आवश्यकत…

युवा बुजुर्गों से संवाद करें, उनसे सीखें : पूर्व सांसद

पूर्व सांसद डॉ. लक्ष्मी नारायण यादव ने कहा दुनिया के कई देशों में वृद्ध जनसंख्या को एक समस्या के रूप में देखा जाता है। विदेशों की …

विवि में वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ बनेगा: कुलपति

विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा विश्वविद्यालय में …

आज योग, स्वा…

रविवार को कई सत्र होंगे। … भावनात्मक सुरक्षा, खानपा… स्वास्थ्य संबंधी देखभाल ए… पीढ़ी से जोड़ने जैसे विषयों …

विश्वविद्यालय में सागर रंग महोत्सव-2025 के तहत दूसरी नाट्य प्रस्तुति, आज नाटक होली का मंचन

मृगतृष्णा •

सदियां बीतीं, मृग मरीचिका से मुक्त नहीं हो सका समाज

सूर्यकांत पाठक
वरिष्ठ पत्रकार और कला समीक्षक

भास्कर संवाददाता | सागर

सामाजिक विषमताओं, विद्रूपताओं को उद्घाटित करता है नाटक

ईसा पूर्व की तीसरी सदी में मगध में बिंदुसार के राज में सामाजिक मनोविज्ञान वैसा ही था जैसा आज के युग में है। राजनीतिक सत्ता, धर्म और व्यापारियों का गठजोड़ वैसा ही था जैसा आज है। इस गठजोड़ के बीच स्त्री-पुरुष संबंध वैसे ही परिभाषित हो रहे थे जैसे कि आज होते हैं। ख्वाहिशों के पीछे दौड़ने वाली दुनिया आज भी मृग मरीचिका के जाल में फंसी है। नाटक मृगतृष्णा इन्हीं सामाजिक विषमताओं, विद्रूपताओं को उद्घाटित करता है। डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में अनुपम कुमार के नाटक मृगतृष्णा का मंचन किया गया। यह विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थिएटर ग्रुप की ओर से आयोजित किए जा रहे सागर रंग महोत्सव 2025 की दूसरी प्रस्तुति थी।

मृगतृष्णा की शुरुआत मगध में एक बौद्ध भिक्षु देवसोम (आनंद अग्रवाल) के आगमन से होती है। उसकी मुलाकात मछली पकड़ने वाले व्यक्ति करालक (अर्पित दुबे) से होती है। देवसोम जहां धर्म का प्रतीक है, वहीं करालक समाज की तिरस्कार झेलने वाले अंतिम छोर पर बैठे आम आदमी का प्रतीक है। मगध में व्यापारी मणिभद्र (शुभम पटेल) की दूर देशों की यात्रा से वापसी होती है। तब पता चलता है कि देवसोम तो उसका बचपन का मित्र और सहपाठी रहा है।

ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने वाले समाज के श्रेष्ठी वर्ग का प्रतीक मणिभद्र जब अपने घर पहुंचता है तो उसे वहां पत्नी रत्नवल्लरी (रितिका सेन) मिलती है, उसे वह ढेर सारे उपहार देता है। इसी बीच मणिभद्र का मित्र चंद्रकेतु (अप्रतिम मिश्रा) बाहर से ही रत्नवल्लरी को पुकारता हुआ प्रवेश करता है, उसकी पुकार उसके रत्नवल्लरी से अवैध संबंधों का संकेत देती है। दूसरी तरफ मणिभद्र विदेश से आभूषणों का एक और बाक्स गणिका अनंगमेखला (सिमरन जैन) के लिए लाया है। वह यह बात गोपनीय रखे है। लेकिन रत्नवल्लरी के सामने उसे सच स्वीकारना पड़ता है। अनंगमेखला के मणिभद्र के अलावा चंद्रकेतु से भी संबंध हैं और उसका पति मदनाक्ष (प्रिंस चौरसिया) इसका फायदा ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए उठाता है। चंद्रकेतु मदनाक्ष से गठजोड़ करके अनंगमेखला को राजपरिवार में मुख्य गणिका बनवाने में सफल हो जाता है और खुद भी बड़ा पद हासिल कर लेता है।

किसी न किसी मृगतृष्णा में फंसे दिखे नाटक के सभी चरित्र

संसार से विरक्ति होने के कारण काशी में अपने घर से भागकर आए देवसोम को ढूंढते हुए उसकी पत्नी चारुकेशी (संजना पटेल) मगध पहुंच जाती है। लेकिन देवसोम उससे मिलने से इनकार कर देता है। विरक्ति के झूठे जाल में फंसे देवसोम को करालक लताड़ता है और इसके बाद देवसोम मदिरा पान करने लगता है। अंत में देवसोम चारुकेशी से मिलता है, उसे स्पर्श करना चाहता है और तभी अचानक पलटता है और चला जाता है। चारुकेशी के रुदन के साथ नाटक समाप्त होता है। इस नाटक में सभी चरित्र किसी न किसी मृगतृष्णा में फंसे हुए हैं। कोई सत्ता लोलुप है तो कोई भोग-ऐश्वर्य की चाहत में भाग रहा है। देवसोम धर्म की मरीचिका में फंसा है। इस सबके बीच रिश्तों की मर्यादा, प्रतिबद्धता तार-तार होती दिखती है।

• युक्तिसंगत सेट से प्रभावी हुआ नाटक : मुक्ताकाशी मंच पर हुए इस नाट्य प्रदर्शन में सेट युक्तिसंगत था। बड़े सेट का उपयोग इस नाटक की जरूरत पूरी करने वाला था। कॉस्ट्यूम मगध राज के काल के अनुरूप डिजाइन की गई। इससे नाटक प्रभावी बना। अर्पित दुबे, आनंद अग्रवाल, रितिका सेन, सिमरन जैन और अप्रतिम मिश्रा का अभिनय उत्कृष्ट था। निर्देशक डॉ. राकेश सोनी ने इस नाटक को तैयार करने में पूरी मेहनत की, जो कि इसके प्रदर्शन में साफ दिखाई दी। इसमें रिकॉर्डेड म्यूजिक का उपयोग किया गया। यदि लाइव संगीत होता तो यह प्रस्तुति और बेहतर हो जाती। रविवार को महेश एलकुंचवार के नाटक होली का प्रदर्शन होगा, जिसका निर्देशन आकाश विश्वकर्मा ने किया है।

वृद्धजन समाज की अमूल्य संपदा हैं: प्रो. व्यास

योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बनें: आ...

वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय सामुदायिक भागीदारी की दिशा में अनूठी पहल: प्रो. पा...

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन के दूसरे दिन कई सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में योग गुरु विष्णु आर्य ने विस्तार से योग शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता को बताया. आज की बदलती दिनचर्या, खानपान और मोबाइल के अति प्रयोग ने युवा, प्रौढ़ और वृद्ध जनों सभी में स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बताया। उन्होंने कहा कि आज के समय में योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा होना चाहिए. डॉ. ज्ञानेश तिवारी ने मानसिक स्वास्थ्य में आ रही गिरावट के साथ ही उससे निपटने का उपाय बताया। मनोविज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने मानसिक स्वास्थ्य परामर्श शिविर भी लगाया. डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने सकारात्मक सोच के माध्यम... दिया। प्रो. अम्बि... होकर न केवल... चाहिए बल्कि... समाज और राष्ट्...

...भी करना चाहिए। विवि के संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि मनोबल को हमेशा ऊंचा बनाये रखें। ...पेंशनर्स एसोसिएशन के जिला प्रमुख हरिओम पाण्डेय ने कहा कि वरिष्ठ जनों का एक संगठन आवश्यक है. सरकार से हम अपनी अपेक्षाएं रख सकते हैं। सामाजिक न्याय विभाग के ...

...कुलसचिव डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज एवं अध्यक्ष विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रो. अर्चना पांडे ने की. स्वागत उद्बोधन कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद भारद्वाज ने दिया. ...प्रो. एस पी व्यास ने कहा कि हमने के मनुष्य क्या है, इसे हम सबको समझने की आवश्यकता है. हमें अपनी आवश्यकताओं को ...

साक्षी गौतम को एमपी युवा वैज्ञानिक का प्रथम पुरस्कार

सागर@पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग की शोध छात्रा साक्षी गौतम को एमपी युवा वैज्ञानिक पुरस्कार का प्रथम पुरस्कार मिला है। विक्रमोत्सव के तहत 27 से 29 मार्च तक राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक सम्मेलन विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के तत्वाधान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में इस युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में साक्षी गौतम को... शोध पत्र "द्विघात... के साथ... मौखिक वाचन के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 के लिए गणित विषय में प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। इसी सम्मेलन में गणित विभाग के ही शोधार्थी मनोहर चौधरी... प्रदेश विज्ञान एवं ...परिषद ने युवा वैज्ञानिक ... प्रदान की गई। ...की कुलपति प्रो. ...शोधार्थियों की इस ...ई दी।

योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बने : योग गुरु विष्णु आर्य

सागर(एसबीन्यूज)। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन के दूसरे दिन कई सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में योग गुरु विष्णु आर्य ने विस्तार से योग शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता को बताया. आज की बदलती दिनचर्या, खानपान और मोबाइल के अति प्रयोग ने युवा, प्रौढ़ और वृद्ध जनों सभी में स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बताया. उन्होंने कहा कि आज के समय में योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा होना चाहिए. डॉ. ज्ञानेश तिवारी ने मानसिक स्वास्थ्य में आ रही गिरावट के साथ ही उससे निपटने का उपाय बताया. मनोविज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने मानसिक स्वास्थ्य परामर्श शिविर भी लगाया. डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने सकारात्मक सोच के माध्यम से जीवन में सकारात्मकता लाने पर बल दिया. उन्होंने कहा कि उम्र महज एक अंक है। हम खान पान में बदलाव लाकर अपने स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि वृद्धजनों को संगठित होकर न केवल अपनी समस्याओं का समाधान खोजना चाहिए बल्कि अपने अनुभवों और उपस्थिति से परिवार, समाज और राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए नई पीढ़ी को मार्गदर्शित भी करना चाहिए। विवि के संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि मनोबल को हमेशा ऊंचा बनाये रखें. उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को संस्कारवान ...

...बनाएं. उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित सरकारी योजनाओं, अधिनियमों ... आवश्यक सकते हैं. ... अपना मान... सकते हैं. संचालक डॉ. ... भारत के लिए ... नागरिक ज्ञान के ... वरिष्ठों के बीच ... स्टडी उदाहरण के ... केलिए किये जा रहे ... ताकि वृद्ध गरिमापूर्ण ... चिकित्सा, वृद्ध आश्रम ... के बारे में जानकारी दी। अतिथि प्रो. एस. पी. व्यास, विश्वविद्यालय जालंधर की पू... कालिया भारद्वाज एवं अध्यक्ष... सेवानिवृत्त प्रो. अर्चना पांडे ने ... कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद ... दिन तक चले इस सम्मेलन का ... यादव ने प्रस्तुत किया. प्रतिभागियों ... प्रस्तुत किया गया. ... बहादुर अनुरागी ने किया. आभार ज्ञाप... शर्मा ने किया. कार्यक्रम में विश्व... सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचा... सागर शहर एवं आस-पास के गांवों ... नागरिकों ने इस आयोजन में अपनी सहभागि...

संभागीय समाचार

अतुल्य भास्कर सागर, 31 मार्च 2025

वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय सामुदायिक भागीदारी की दिशा में अनूठी पहल : प्रो. पाण्डेय

योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बनें: विष्णु आर्य

- वृद्धजन समाज की अमूल्य संपदा हैं:प्रो. एसपी व्यास

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)